Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हिंदी–हल्बी एवं संस्कृत

कक्षा – 4

सत्र 2019–20

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे → App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।

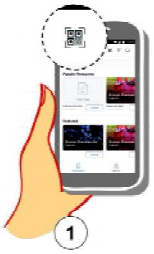

पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

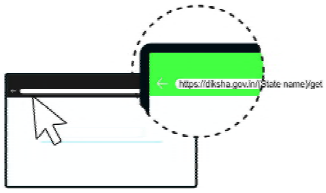

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

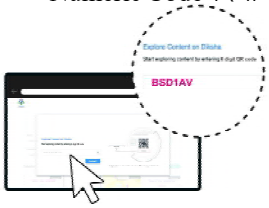

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रकाशन वर्ष 2019

© राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

582HG5

मार्गदर्शन एवं सहयोग

डॉ. हृदयकांत दीवान, विद्या भवन, उदयपुर,

प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री (दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)

संयोजक

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

संपादन

डॉ. सी.एल. मिश्रा, विद्या डांगे

मेरी अभिलाषा है– द्वारिका प्रसाद महेश्वरी, दीप जले – चन्द्रदत्त 'इन्दु', कुंडलियाँ– कोदूराम दलित, चूड़ीवाला –सेफाली मल्लिक, अमीर खुसरो की पहेलियाँ – अमीर खुसरो,किताबें – श्री सफदर हाशमी, शेष पाठ लेखक मण्डल द्वारा संकलित या लिखित हैं।

लेखक मण्डल

हिंदी	हल्बी	संस्कृत
डॉ. सी.एल.मिश्र, बी. आर. साहू, डॉ. एस.एस. त्रिपाठी, डॉ. बृजमोहन इष्टवाल, गजानन्द प्रसाद देवांगन, राजेन्द्र पाण्डेय, श्रीमती सीमा अग्रवाल, विनय शरण सिंह, दिनेश गौतम, श्री धीरेन्द्र कुमार, डॉ.(श्रीमती) रचना अजमेरा, श्रीमती उषा पवार, शोभा शंकर नागदा।	लाला जगदलपुरी, डॉ. आरतीरानी जैन, तुलसीराम पानीग्राही, शिवनारायण पाण्डेय, विक्रम कुमार सोनी, रमझम कच्छ, के. आर. रामटेके	डॉ. सुरेश शर्मा, बी.पी. तिवारी, (समन्वयक) डॉ. कल्पना द्विवेदी, ललित कुमार शर्मा, डॉ. संध्यारानी शुक्ला, डॉ. राजकुमार तिवारी

चित्रांकन

समीर श्रीवास्तव, प्रशांत सोनी, रानू सिंह, भूपेन

आवरण पृष्ठ एवं ले–आऊट

रेखराज चौरागड़े

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर

मुद्रक

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्राक्कथन

हिन्दी भाषा–शिक्षण का स्कूली शिक्षा में एक अहम स्थान है। सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से सबद्ध सभी लोगों के लिए यह आस–पास के वृहद् जगत के संवाद का माध्यम है। कक्षा एक की ही पुस्तकों से छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का उद्देश्य बच्चों को स्वतंत्र व जिज्ञासु पाठक बनाना है। परिषद् की पुस्तकों ने यह भी रेखांकित किया है कि भाषा सीखने–सिखाने का दायित्व सिर्फ भाषा की पाठ्य–पुस्तक पर ही नहीं है, वरन् इस दिशा में और सभी विषय–विशेष तौर पर पर्यावरण अध्ययन–मदद कर सकते हैं। आस–पास उपलब्ध बच्चों के योग्य अन्य पुस्तकों की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका है। अपने स्वाभाविक अनुभवों के बारे में सोचना, उनका गहराई से विश्लेषण करना व इन सबको दूसरों के साथ बाँटना न सिर्फ भाषायी समझ बढ़ाता है, वरन् कई और क्षमताएँ भी प्रदान करता है।

कक्षा 4 में पढ़ने वाले बच्चे अपने आस–पास के जीवन के बारे में सोचना व समझना शुरू कर देते हैं। इस समझ को पैदा करने के लिए आवश्यक शब्दावली, वाक्य–संरचना, तार्किक क्रमबद्धता का बड़ा हिस्सा भाषा की कक्षा से ही उसे मिलेगा। कहानी, कविता, निबंध, नाटक आदि साहित्य की विधाएँ तो हैं ही, साथ–साथ सोचने व समझने के तरीकों को वृहद् भी बनाती हैं। इन सभी में बच्चे को रुचि हो, यही भाषा–शिक्षण का एक प्रमुख लक्ष्य है। भाषा की कक्षा अक्सर पुस्तक में दिए सवालों के उत्तर खोजने तक ही सीमित हो जाती है। यदि भाषा–शिक्षण व साहित्य को बच्चे के विकास व समाज के साथ संबंध को गहरा करने व उसके सोचने व जीवन–दर्शन को वृहद् करने का लक्ष्य पूरा करना है तो यह आवश्यक है कि उसका पुस्तक की सामग्री के साथ सतर्क पाठक का रिश्ता बने। इसके लिए वह सामग्री पर आधारित नये प्रश्न गढ़े, अपने जीवन के आधार पर सामग्री में प्रस्तुत विचारों पर टिप्पणी करे।

सामग्री के बारे में बच्चे सोचें–विचारें, सवाल करें और अपनी राय बनाएँ, यह सब कक्षा 4 में करवाना संभव नहीं है। किन्तु यदि हमें यह स्पष्ट हो कि किस दिशा में बढ़ना है तो हमारे छोटे कदम भी ज्यादा अच्छे लाभकारी हो सकते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कक्षा 4 में हम यह भी अपेक्षा करते हैं कि बच्चे टोलियों में काम करना सीखें, एक दूसरे की मदद करें, विचारों का आदान–प्रदान करें। हमारी कोशिश है कि उन्हें एक वृहद् व जीवन्त भाषायी अनुभव मिले।

इस पुस्तक को तैयार करने में शिक्षाविदों, शिक्षकों, शिक्षक–प्रशिक्षकों तथा स्कूली शिक्षा से जुड़े साथियों का सक्रिय सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इसके बावजूद भी पुस्तक में सुधार करने और नया जोड़ने की संभावनाएँ तो होंगी ही।

सत्र 2017–18 में लर्निंग आउट कम्स को पूरे देश में कक्षावार, विषयवार लागू किया गया। जिसके कारण किताबों में संशोधन किया जाना आवश्यक हो गया। इस पर शिक्षकों, पालकों, शिक्षाविदों, बच्चों से पर्याप्त चर्चा की गई तथा जो सुझाव हमें प्राप्त हुए उनसे हिन्दी समीति के सदस्यों ने गंभीरता से विचार किया और पुस्तक में तदानुसार विशेषकर प्रश्नों के स्वरूप में बदलाव किया गया। यह पुस्तक राज्य के सभी शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के लिए प्रकाशित की जा रही है।

इस पुस्तक को और बेहतर बनाने के लिए अपने अमूल्य सुझाव परिषद् को भेजें। इसी उम्मीद और शुभ कामनाओं के साथ।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शिक्षकों के लिए

छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा तैयार की गई कक्षा चार की पुस्तक तीन वर्षों के प्रायोगिक दौर से गुजरकर अब आपके सामने है। भाषा सीखने–सिखाने के बारे में सोचते समय हमने यह महत्वपूर्ण समझा है कि बच्चे अपने आस–पास की दुनिया को जानना चाहते हैं, समझना चाहते हैं। वे यह सब अपने स्वाभाविक जीवन में करते रहते हैं और अपने आसपास के बारे में कई बातें जानते हैं। उनके अनुभवों को गहरा करने व विश्लेषण करने में भाषाई क्षमताएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कक्षा चार के स्तर पर बच्चों की भाषाई क्षमताएँ को आगे बढ़ाने हेतु यह पुस्तक एक आधार सामग्री के रूप में है। यहाँ उद्देश्य केवल यह नहीं है कि बच्चे इस पुस्तक को पढ़ें वरन् भाषा–शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु आवश्यक है कि बच्चे अधिकाधिक पुस्तकें पढ़ें। भाषा–शिक्षण का उद्देश्य बच्चों को सक्षम पाठक बनाने के साथ–साथ सोचने–विचारने, चिंतन करने, विचारों को विस्तारित करने, कल्पना करने तथा नई बातें सीखने के लिए तैयार करना है। यह आवश्यक है कि कक्षा 4 के विद्यार्थी सुनी हुई व पढ़ी हुई सामग्री को समझ सकें, उनकी सार्थक विवेचना करने के प्रयास कर सकें और अपने मत व विचार लिखकर समझा सकें। पुस्तक में विविधता इसलिए रखी गई है कि साहित्य पढ़ने में उनकी रुचि पैदा हो व उनमें पढ़ने की आदत का विकास हो सके।

इस पुस्तक में गतिविधियों के माध्यम से अभ्यास के अवसर दिए गए हैं। इनमें कुछ गतिविधियाँ ऐसी हैं जिनमें बच्चों को शिक्षक या अन्य किसी की मदद की भी जरूरत होगी। कुछ गतिविधियाँ ऐसी हैं जिन्हें बच्चों को एक–दूसरे की मदद करते हुए करनी हैं और कुछ गतिविधियाँ ऐसी हैं जिन्हें बच्चों को अकेले अपने आप करना है। कृपया बच्चों को आपस में विचार–विमर्श व संवाद का पर्याप्त मौका दें।

प्रत्येक पाठ के अंत में अपरिचित व कठिन शब्द तथा उनके अर्थ दिए गए हैं। बच्चों के साथ इन शब्दों के अर्थ पर बातचीत करें तथा इनका अलग–अलग संदर्भों में उपयोग करवाएँ। बच्चे जितने अधिक वाक्य व विवरण इन शब्दों का

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उपयोग करके लिखेंगे, उतना अच्छा है। किसी भी विधा यथा कहानी, कविता, नाटक, वर्णन, जीवनी, पत्र आदि का अध्ययन–अध्यापन व उस पर अभ्यास करने के एक से अधिक तरीके हो सकते हैं। इसी प्रकार के कुछ उदाहरण मौखिक प्रश्नों शीर्षक में दिये गए हैं।

पाठ की विषयवस्तु को समझने, उस पर चिंतन करने, कल्पना करने के लिए पाठ में बोध–प्रश्न दिए गए हैं। बोध–प्रश्न में मौखिक और लिखित दोनों प्रकार के प्रश्न दिए गए हैं। ये प्रश्न सिर्फ उदाहरण स्वरूप हैं। हर पाठ पर कई और प्रश्न बनाए जा सकते हैं। आप बच्चों को नए मौखिक प्रश्न बनाकर एक दूसरे से पूछने के लिए प्रेरित करें। लिखित प्रश्न भी कई प्रकार के हैं। कुछ तो सीधे–सीधे सूचना आधारित प्रश्न हैं, जो सीधे पाठ से खोजे जा सकते हैं; कुछ कार्य–कारण संबंधवाले प्रश्न हैं तथा कुछ कल्पना व सृजनात्मकता का विकास करनेवाले प्रश्न हैं। इन प्रश्नों के उत्तर अगर वे दें तो वे ज्यादा सीखेंगे। यह भी कोशिश करें कि प्रश्नों के उत्तर बच्चे अपनी भाषा में ही लिखें।

इसके बाद भाषा–तत्त्व एवं व्याकरण से संबंधित भी कुछ अभ्यास हैं। इस भाग में शब्दों व वाक्यों का श्रुतिलेखन भी करवाना है। वर्तनी की जाँच के लिए बच्चों को परस्पर एक–दूसरे की अभ्यास–पुस्तिका देखने को कहें, उन्हें अलग–अलग प्रकार के उत्तर समझने और शब्दों के शुद्ध व अशुद्ध रूप को पहचानने में मदद मिलेगी। यह भी अपेक्षा है कि आप बच्चों को सुन्दर लेख लिखने का अभ्यास कराएं।

रचना के अभ्यास के लिए सृजनात्मक एवं योग्यता–विस्तार शीर्षकों के अंतर्गत अभ्यास दिए गए हैं। अपेक्षा यह है कि बच्चे अपने स्तर पर कोई नया सृजन करने का प्रयास करें। इसमें अलग–अलग अभ्यास हैं जैसे कहीं बच्चों को पूछकर, ढूँढकर, पढ़कर या सोचकर लिखना है अथवा प्रदर्शित करना है। इसमें चित्र संकलित कर एलबम बनाना, किसी पक्षी जानवर आदि का चित्र स्वयं बनाना; कविता बनाना, किसी दृश्य या घटना को देखकर उस पर अपने विचार लिखना आदि सम्मिलित हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रचना और गतिविधिवाले क्रियाकलापों से बच्चों का रचनात्मक और सृजनात्मक विकास होगा। बच्चों में कला संबंधी और लेखन संबंधी जागरुकता आएगी। समय–समय पर कक्षा या बाल–सभा में वाद–विवाद आयोजित करवाना, अन्त्याक्षरी करवाना, चित्र–निर्माण करवाना, पत्र–पत्रिकाओं से सामग्री एकत्रित करवाना, ऐतिहासिक स्थलों पर भ्रमण करवाना तथा उन पर संक्षिप्त लेख लिखवाना आदि क्रियाकलापों से भी बच्चों की क्षमताओं में अभिवृद्धि होगी।

आप सबको अध्यापन करने का लम्बा अनुभव है। आपके इस लम्बे अनुभव से निःसंदेह बच्चे लाभान्वित होंगे। हमारे द्वारा सुझाए कुछ सुझावों पर आप अमल करें, तो हो सकता है कि आपकी शिक्षण–कला में इससे कुछ बढ़ोत्तरी हो। यदि ऐसा हुआ तो हम अपने प्रयास को सार्थक समझेंगे। आपके द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

विषय–सूची

क्र.	पाठ का नाम	पृ.क्र.
	हिन्दी	
1.	मेरी अभिलाषा है	1–3
2.	मैनपाट की सैर	4–8
3.	आउर जगतुगुड़ा बनली जगदलपुर (हल्बी)	9–13
4.	साहसी रूपा	14–18
5.	मेरा एक सवाल	19–22
6.	औद्योगिक तीर्थ – कोरबा	23–27
7.	घरौंदा	28–32
8.	उलटसाई (हल्बी)	33–35
9.	दीप जले	36–39
10.	संत रविदास	40–45
11.	जीत खेल भावना की	46–51
12.	कूकू और भूरी	52–58
13.	दियारी तिहार (हल्बी)	59–65
14.	ऊर्जा की बचत	66–68
15.	चूड़ीवाला	69–73
16.	राजिम मेला (सहेली को पत्र)	74–78
17.	आपलो कहनी सांगेसे इंदराबती (हल्बी)	79–84
18.	पिंजरे का जीवन	85–89
19.	हाय मेरी चारपाई	90–93
20.	अमीर खुसरो की पहेलियाँ	94–96
21.	बस्तर चो तिहार–गोञ्चा (हल्बी)	97–103
22.	किताबें	104–106
23.	डॉ. जगदीश चन्द्र बोस	107–112
24.	इंसाफ	113–122
	पुनरावृत्ति के प्रश्न	123–127
	संस्कृत	128–140

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 1

मेरी अभिलाषा है

4EB7LQ

–श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

इस कविता में एक बच्चे ने अपने मन की इच्छा प्रकट की है। वह सूरज, चाँद, तारों, जैसा चमकना चाहता है और फूलों जैसा महकना चाहता है। वह आकाश के समान निर्मल, पृथ्वी के समान सहनशील और पर्वत के समान दृढ़ बनना चाहता है।

सूरज–सा चमकूँ मैं,
चंदा–सा चमकूँ मैं,
जगमग–जगमग उज्ज्वल,
तारों–सा दमकूँ मैं,
मेरी अभिलाषा है।

फूलों–सा महकूँ मैं,
विहगों–सा चहकूँ मैं,
गुंजित–सा वन–उपवन,
कोयल–सा कुहकूँ मैं,
मेरी अभिलाषा है।

नभ से निर्मलता लूँ,
शशि से शीतलता लूँ,
धरती से सहनशक्ति,
पर्वत से दृढ़ता लूँ,
मेरी अभिलाषा है।

मेघों–सा मिट जाऊँ,
सागर–सा लहराऊँ,
सेवा के पथ पर मैं,
सुमनों–सा बिछ जाऊँ।
मेरी अभिलाषा है।

शिक्षण–संकेत : *कविता का सस्वर वाचन करें। दो–दो पंक्तियों का वाचन करते हुए बच्चों से उनका अनुकरण कराएँ। बाद में कविता को चार भागों में बाँटकर चार समूहों को एक–एक भाग पर चर्चा करने को प्रोत्साहित करें। प्रत्येक समूह से उस भाग का अर्थ तथा भाव स्पष्ट कराएँ। अन्त में शिक्षक कविता का अर्थ स्पष्ट करें।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ

अभिलाषा	–	इच्छा	शशि	–	चन्द्रमा
विहग	–	पक्षी	मेघ	–	बादल
उपवन	–	बगीचा	पथ	–	मार्ग
नभ	–	आकाश	सुमन	–	फूल
दमकना	–	तेज़ी से चमकना			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. कविता में किनके जैसे चमकने और दमकने की बात कही गई है ?
प्रश्न 2. बच्चा नभ, शशि, धरती और पर्वत से क्या–क्या लेने की अभिलाषा करता है ?
प्रश्न 3. बच्चा किसके पथ पर फूलों के जैसे बिछने की अभिलाषा करते हैं ?
प्रश्न 4. बच्चा सूरज और चंदा के समान चमकना क्यों चाहता है ?
प्रश्न 5. फूलों में क्या गुण होता है ? बच्चा फूलों से किस गुण को लेना चाहता है ?
प्रश्न 6. किस पक्षी का कौन–सा गुण बच्चा अपनाना चाहता है ?
प्रश्न 7. कविता में तुम्हें कौन–सी पंक्तियाँ अच्छी लगीं ? कारण बताते हुए उत्तर लिखो।
प्रश्न 8. ऐसे दो फूलों के नाम लिखो जिन्हे तुम जानते हो ?
प्रश्न 9. तुम दूसरों की भलाई के लिए कौन – कौन से कार्य करना पसंद करोगे ?
प्रश्न 10. तुम्हारी क्या बनने की अभिलाषा है ?

गतिविधि

बच्चो से चर्चा करें–

1 वृक्षों से हमें क्या लाभ हैं ?
2 पशु हमारे लिए कितने उपयोगी हैं ?
3 किताबों का हमारे लिए क्या उपयोग है ?
समूहों में क्या–क्या बातें हुईं? बच्चे कक्षा में समूहवार सुनाएँ।

समझो

तुम जानते हो कि एक चीज़ को कई नामों से जाना जाता है, जैसे मनुष्य को नर और मानव भी कहते हैं; पहाड़ को पर्वत और गिरि भी कहते हैं। 'नर' और 'मानव' मनुष्य शब्द के पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। इसी प्रकार 'पर्वत' और 'गिरि' पहाड़ शब्द के पर्यायवाची शब्द हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न 1 इन शब्दों के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखो।

सूरज, चंदा, फूल, विहग, नभ, धरती, पर्वत, मेघ।

प्रश्न 2 नीचे बने चौखाने में कुछ शब्द और उनके विलोम शब्द दिए गए हैं। इन्हें छाँटकर अलग–अलग लिखो

धरती, शीतल, स्थिर, सहनशील, उष्ण, आकाश, अस्थिर,

रचना

- इस कविता में बालक ने ईश्वर से जो प्रार्थना की है उसे संक्षेप में लिखो।
- बच्चों से चर्चा करें कि वे बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं।
- समूह में बैठकर नीचे लिखी कविता को पढ़ो और लयपूर्वक अपने साथियों को सुनाओ–

ऐसे चमकें जैसे सूरज,
चन्दा चमचम, प्यारे, प्यारे।
ऐसे दमकें जैसे तारे
दमदम, दमदम बाँह पसारे।
ऐसे हँसें फूल से खिलखिल
बन जाएँ हमदार।

– शंकर सुल्तानपुरी

योग्यता–विस्तार

- फूलों का क्या–क्या उपयोग किया जाता है ? सोचकर अपनी कॉपी में लिखो।

4EK3ND

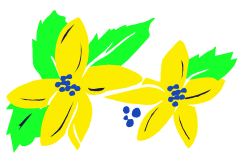

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 2 मैनपाट की सैर

गर्मी आई और लोगों को सैर–सपाटा करने की सूझी। अधिकतर लोग शिमला, मसूरी, दार्जिलिंग, उटी, श्रीनगर की ओर आकर्षित होते हैं। ये ही नगर तो गर्मियों में सैर–सपाटे के लिए सबसे उत्तम माने जाते हैं। इन्हें हिल–स्टेशन कहते हैं। ये सभी नगर प्राकृतिक सुषमा से सम्पन्न हैं। वृहद् मध्यप्रदेश में भी एक हिल–स्टेशन है पचमढ़ी। हमारा राज्य भी किसी अन्य राज्य से कम नहीं है। हमारे यहाँ भी एक हिल–स्टेशन है। क्या उस स्टेशन का सैर करना चाहोगे? तो चलो, हम तुम्हें वहाँ ले चलते हैं। वह स्थल है मैनपाट। इसे ही कहते हैं छत्तीसगढ़ का शिमला, मसूरी या पचमढ़ी। आओ, हम तुमको इस नगर के एक–एक स्पाट से परिचित करा दें।

हिल–स्टेशन मैनपाट चारों ओर से प्राकृतिक सौंदर्य, जलप्रपातों से भरा–पूरा है। मैनपाट का कोना–कोना दर्शनीय है। पर्यटक यहाँ आकर अतीव सुख और शांति का अनुभव करते हैं। लोगों के शोरगुल, वाहनों की कानो को खटकने वाली ध्वनियों से मुक्त शांत वातावरण युक्त मैनपाट अम्बिकापुर से लगभग 85 किलोमीटर दूर हरी–भरी पहाड़ियों पर स्थित है। चारों ओर से घने वनों से आच्छादित यह स्थान अनेक छोटी–बड़ी नदियों से घिरा है। ये नदियाँ स्थान–स्थान पर जल प्रपात बनाकर अद्‌भुत मनोरम दृश्य उपस्थित कर देती हैं। समुद्र तल से 1100 मीटर की ऊँचाई पर 28 वर्ग किलोमीटर में आयताकार पहाड़ी पर बसे मैनपाट के आसपास अनेक दर्शनीय स्थल हैं। इनमें टाइगर प्वाइंट, मछली प्वाइंट, मेहता प्वाइंट, दरोगा दरहा जलप्रपात, देव प्रवाह अपनी प्राकृतिक सुषमा के कारण दर्शनीय हैं।

पहले हम मैनपाट के पूर्वी भाग में चलते हैं। यहीं महादेवमुड़ा नदी बहती है। यह नदी वनों के बीच 60 मीटर की ऊँचाई से गिरती हुई एक आकर्षक जलप्रपात बनाती है। इस जल–प्रपात की धारा जब नीचे कुंड में गिरती है तो शान्त वनों के बीच मधुर संगीत–सा उत्पन्न कर देती है। कभी इस प्रपात के आसपास वनराज भ्रमण किया करते थे जिनके कारण इस प्रपात को टाइगर प्वाइंट कहा जाता है। मुख्य मार्ग पर स्थित होने से यहाँ आना सुविधाजनक है। पर्यटकों के ठहरने के लिए यहाँ विश्रामगृह भी है।

अब हम तुम्हें एक अन्य स्थल पर ले चल रहे हैं। यह स्थल मैनपाट से लगभग 15 किलोमीटर दूर है। चारों ओर हरियाली–ही–हरियाली। पहाड़ों पर उतर आए बादल ऐसे लगते हैं जैसे आकाश ही पहाड़ों पर उतर आया है। कभी पहले इस जलप्रपात में बड़ी–बड़ी मछलियाँ पाई जाती थीं, इसीलिए इसका नाम मछली प्वाइंट पड़ा है।

शिक्षण–संकेत : *छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न ऐतिहासिक, धार्मिक स्थलों के संबंध में विद्यार्थियों से जानकारी लें, पर्यटन–स्थलों के संबंध मे चर्चा करें। देश के हिल–स्टेशनों के संबंध में पूछें और बताएँ। विद्यार्थियों से पूछें कि शिमला, श्रीनगर, नैनीताल, मसूरी आदि स्थानों पर लोग क्यों जाते हैं। फिर कक्षा में बताएँ कि अपने राज्य में भी एक हिल–स्टेशन है जिसे मैनपाट कहते हैं। आज हम इसी हिल–स्टेशन के संबंध में पाठ पढ़ेंगे।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इसके सामने की पहाड़ी से एक पतली जलधारा 80 मीटर की ऊँचाई से गिरती हुई ऐसी प्रतीत होती है मानो कोई दूध की धारा पहाड़ी से गिर रही हो। इस कारण इसे मिल्की–वे अर्थात् दूधिया धारा कहते हैं।

प्रकृति के मनोरम दृश्य देखते–देखते हमारी आँखें थकती नहीं। और मैनपाट में ऐसे प्राकृतिक दृश्यों की कोई कमी नहीं। अब हम आपको एक अन्य प्वाइंट की ओर ले चलते हैं। यह प्वाइंट मैनपाट से केवल 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसे मेहता प्वाइंट कहते हैं। यहाँ के हरेक प्वाइंट का नामकरण किसी विशेष कारण से किया गया है। सरगुजा और रायगढ़ की सीमा निर्धारित करने वाला यह प्वाइंट एक ऐसे जलक्षेत्र का निर्माण करता है जो एक सागर के समान प्रतीत होता है। वन विभाग ने यहाँ भी पर्यटकों की सुविधा के लिए विश्रामगृह की व्यवस्था कर दी है।

यों तो वनविभाग ने पर्यटकों की सुविधा के लिए अनेक दर्शनीय प्वाइंट पर पहुँचने के लिए पक्की सड़कों का निर्माण कराया है लेकिन वनक्षेत्र में सभी स्थानों में सड़क निर्माण कराना दुरूह कार्य है। ऐसे कुछ दर्शनीय स्थलों पर तो लोगों को पैदल ही जाना पड़ता है। दरोगा दरहा जलप्रपात देखनेवालों के पैर मजबूत होने चाहिए। यहाँ गहरी खाइयों में होकर जाना पड़ता है। लेकिन अपने लक्ष्य पर पहुँचकर प्रकृति का नज़ारा देखकर दस किलोमीटर पैदल चलने की सारी थकान छूमंतर हो जाती है। तुम यहाँ आराम से घंटे भर बैठकर प्रकृति की शोभा को निहार सकते हो।

मैनपाट के सभी प्राकृतिक स्थलों को एक दिन में देख पाना असंभव है। जिस स्थल पर भी तुम पहुँचोगे, वहाँ से हटने को जी नहीं चाहेगा। तबियत करेगी कि बैठे–बैठे उस मनोरम दृश्य को देखते रहें। तो फिर एक दिन में सभी स्थल कैसे देखे जा सकते हैं? इसलिए पर्यटक कम–से–कम दो दिनों का समय निकालकर यहाँ आते हैं। तुम पहले दिन इन्हीं स्थलों का भ्रमण कर सकते हो।

दूसरे दिन का भ्रमण तुम देवप्रवाह से कर सकते हो। वनक्षेत्र कमलेश्वरपुर में एक प्राकृतिक झील है जो आगे चलकर एक नाले का रूप धारण कर लेती है। यही नाला 80 मीटर की ऊँचाई से गिरता हुआ एक प्रपात बनाता है। यही देवप्रवाह प्रपात है। यहाँ आसपास का वनक्षेत्र वनौषधियों से भरा हुआ है। हमारे लिए जो साधारण वृक्ष हैं, जानकारों के लिए उनमें से कुछ वृक्ष कल्पवृक्ष भी हो सकते हैं।

मैनपाट में सूर्योदय और सूर्यास्त देखने के कई स्थल हैं। पर्यटक इन स्थानों पर पहुँचकर सूर्योदय और सूर्यास्त का भरपूर आनंद लेते हैं। जलप्रपातों के अतिरिक्त मैनपाट में अनेक प्राकृतिक गुफाएँ भी दर्शनीय हैं। इन गुफाओं के संबंध में हम तुम्हें फिर कभी बताएंगे।

मैनपाट अपनी एक और विशेषता के लिए विख्यात है। तुम जानते हो कि भारत सदा से ही शांतिप्रिय देश रहा है। हमने अपने ऊपर विदेशियों के अनेक आक्रमण झेले हैं लेकिन कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया। हमारे धर्म–प्रचारकों ने देश–देश में घूम–घूमकर शान्ति का प्रचार किया है और विश्व की कई विपत्ति में पड़ी जातियों को अपने यहाँ शरण दी है। ऐसे ही

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

विपत्ति–ग्रस्त तिब्बती शरणार्थी जब 1962–63 के चीन–युद्ध के पश्चात् भारत आए तो भारत सरकार ने उन्हें मैनपाट में बसाया। यह स्थान जलवायु की दृष्टि से उनके लिए अनुकूल था। आज मैनपाट भारतीय और तिब्बती दो संस्कृतियों का संगमस्थल है। बौद्ध धर्म अनुयायी इन तिब्बती शरणार्थियों ने भगवान बुद्ध के एक भव्य मंदिर का निर्माण कराया है जो भवन –निर्माण–कला की दृष्टि से अनोखा है। स्वयं बौद्ध गुरु दलाईलामा ने आकर इस मंदिर का उद्घाटन किया था। तिब्बती शरणार्थी यहाँ खेती, पशु–पालन और वस्त्र–निर्माण का धंधा करते हैं। मैनपाट में तिब्बतियों द्वारा निर्मित दरी, गलीचे (कालीन) भारत के बड़े–बड़े नगरों में विक्रय के लिए भेजे जाते हैं।

प्रकृति का लाड़ला, दो संस्कृतियों का संगम–स्थल, जियो और जीने दो का उद्घोष करने वाला मैनपाट, है न अलौकिक! क्या तुम्हारा मन इसे देखने के लिए ललचाएगा नहीं? तो फिर शिमला, मसूरी, श्रीनगर और पचमढ़ी का सैर –सपाटा करने का विचार छोड़ दो और अगली गार्मियों की छुट्टियों में मैनपाट–यात्रा की योजना बना डालो।

शब्दार्थ

हिलस्टेशन	–	पहाड़ पर स्थित मनोरम पर्यटन–स्थल			
कर्णभेदी	–	कानों को भेदनेवाली, तेज आवाज			
आच्छादित	–	ढका हुआ	मनोरम	–	सुंदर
सागर	–	समुद्र	विपत्ति	–	संकट
अलौकिक	–	संसार से परे	दर्शनीय	–	देखने योग्य
वन	–	जंगल	ध्वनि	–	आवाज
अद्भुत	–	आश्चर्यजनक	सुषमा	–	शोभा, सुन्दरता
दुरूह	–	कठिन	विख्यात	–	प्रसिद्ध
अनुयायी	–	माननेवाले	शरणार्थी	–	शरण लेने वाले
पर्यटक	–	मनोरम स्थलों को देखने आने वाले लोग, घुमक्कड़			
वनौषधि	–	जंगलों से प्राप्त होनेवाली दवाई की जड़ी–बूटियाँ			
छूमंतर	–	दूर हो जाना, गायब हो जाना।			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. मैनपाट कहाँ बसा है ?
प्रश्न 2. मैनपाट के पूर्वी भाग में कौन –सा दर्शनीय स्थल है ?
प्रश्न 3. मेहता प्वाइंट किन–किन जिलों की सीमा निर्धारित करता है ?
प्रश्न 4. मैनपाट किन दो संस्कृतियों का संगम स्थल है ?
प्रश्न 5. मैनपाट में तिब्बतियों द्वारा निर्मित कौन–सी वस्तु दूर–दूर तक मशहूर है ?
प्रश्न 6. तुम्हारे आस–पास घूमने लायक कोई जगह अवश्य होगी। इसके बारे में लिखो।
प्रश्न 7 यदि तुम्हे घूमने जाने का मौका मिले तो तुम कहाँ जाना चाहोगे ? और क्यों ?
प्रश्न 8 नीचे लिखे वाक्यों से क्या क्या आशय है–
क. मैनपाट का कोना–कोना दर्शनीय है।
ख. यहाँ आसपास का वनक्षेत्र वनौषधियों से भरा हुआ है।

भाषातत्त्व और व्याकरण

इस पाठ में हम सीखेंगे– संयुक्त क्रिया, बारहखड़ी के अनुसार शब्दों को लिखना, कारको का प्रयोग।

- निम्नलिखित वाक्यों को पढ़ो :

जल–प्रपात अद्‌भुत दृश्य प्रगट करता है।
जल–प्रपात अद्‌भुत दृश्य प्रगट कर देता है।

पहले वाक्य में क्रिया 'करता है' लिखी गई है, दूसरे वाक्य में क्रिया 'कर देता है' लिखी गई है।

पहले वाक्य की क्रिया साधारण क्रिया है जब कि दूसरे वाक्य की क्रिया संयुक्त क्रिया है। **संयुक्त क्रिया वह होती है जो दो क्रियाओं से मिलकर बनी हो।** 'कर देती है' दो क्रियाओं 'करना' और 'देना' से मिलकर बनी है।

प्रश्न 1 क. इस पाठ से कोई दो वाक्य चुनकर लिखो जिनमें संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग हुआ हो। उन क्रियाओं को अलग–अलग तोड़कर लिखो।
ख. समझ लेना, पहुँच जाना, भाग जाना संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग करते हुए एक–एक वाक्य बनाओ।
ग. मूल क्रियाओं में 'पड़ना', 'लेना', 'डालना' क्रियाएँ जोड़कर संयुक्त क्रियाएँ बनाओ और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

प्रश्न 2 तुमने वर्णमाला पढ़ी है। बारहखड़ी का क्रम भी तुम जानते हो। अब इन शब्दों को बारहखड़ी के क्रम में लिखो।
मीत, मूक, मंगला, मिलना, मदन, माता, मुरली, मृग, मेला, मैल, मोहन, मौका।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

समझो

- तुम पैन से लिख रहे हो।

  हमीदा सोहन के लिए किताब लाई।

  पेड़ से पत्ते गिरते हैं।

  पहले और तीसरे वाक्य में 'से' का प्रयोग हुआ है। पहले वाक्य में लिखने का साधन 'पैन' है। यहाँ 'से' साधन को बताता है।

  तीसरे वाक्य में पेड़ से पत्ते गिरते हैं। यहाँ 'से' अलग होने का भाव बताता है।

  दूसरे वाक्य में 'के लिए' सोहन एवं किताब को जोड़ रहा है। यहाँ हमीदा सोहन के लिए किताब लाने का काम कर रही है। यानि जब हम किसी दूसरे के लिए काम करते हैं तो उस काम एवं उस व्यक्ति को जोड़ने में 'के लिए' का प्रयोग करते हैं जैसे–

  पिताजी काजल के लिए साइकिल खरीदने बाजार गए हैं।

प्रश्न 3 'ने', 'पर', 'से', 'में', 'का' कारक चिन्हों से युक्त अलग–अलग वाक्य बनाओ।

प्रश्न 4 इस शब्द पहेली में मैनपाट तथा कुछ दर्शनीय स्थानों के नाम आए हैं। ऐसे 8 नाम खोजकर लिखो।

नै	नी	ता	ल	ह	टी	म
शि	प	ख	वा	उ	क	सू
म	[illegible]	प्र	मै	श्री	प	री
ला	व	त	न	न	च	भि
दे	ब्ब	श	पा	ग	म	स्थी
ति	ला	मा	ट	र	ढ़ी	वे
टा	इ	ग	र	प्वा	इं	ट

रचना

- सूर्योदय के समय के प्राकृतिक दृश्य का वर्णन अपने शब्दों में करो।

योग्यता–विस्तार

- छत्तीसगढ़ के किसी अन्य दर्शनीय स्थल का वर्णन निम्न बिन्दुओं में करो–

  1. स्थान का नाम–
  2. कहाँ स्थित है–
  3. मुख्यालय से दूरी–
  4. उस स्थान तक कैसे जाया जा सकता है–
  5. दर्शनीय क्षेत्र–

4F3URN

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ikB & 3

vkmj txr|x|Mk cuyh & txnyi|j

[लमाहा, चितर रतो रान–बन बिती नानी असन जगतुगुड़ा गाँव कसन ने बनली जगदलपुर, इया माटी ने बीरता चो गुन बिती ए कहनी के पाठ ने जानुँ।]

गोटोक गाँव रए जगतुगुड़ा। इगारा ठन कुड़या चो नानी गाँव, आउर गाँव चो मुखया चो नाव किरता गाँव के जगतुगुड़ा बलोत। जगतु चो नानी भाई चो नाव धरमु रए। दुनो भाई लगे खुबे भुँय रए।

सन् 1772 ईस्वी चो गोठ आय। उदलदाँय बस्तर राज ने दलपत देव राजा चो राज रली। बस्तर गाँव हुनचो राजधानी रली। गोटोक दिन राजा दलपत देव पारदी काजे बुलते–बुलते जगतुगुड़ा अमरला। राजा संगे पारदी कुकुरमन बले रला। हुता राजा काय दखसोत कि गोटोक लमाहा आपलो कानमन के ठिया करून राजा चो पारदी कुकुरमन के

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

खेदेसे। कुकुरमन डर काजे परासोत। एके दखुन राजा अचरित होला आउर बिचारला कि ए ठान चो माटी ने बीरता चो गुन आसे, तेबे तो लमाहा कुकुर के डरायसे। हुन ठान राजा के मन इली। हुताय राजधानी बनातो काजे राजा बिचारला।

हुन गाँव ने राजा चो एतोर खबर जगतु आरू धरमु सुनला। दुनो खुबे हरिक होला आरू राजा संगे भेट–घाट होतो काजे गेला। राजा बलला– ''ए ठान मोके खुबे अच्छा लागली जगतु, एथा राजधानी बनातो बिचार करेंसे। ए ठान चो पलटा तुमके खुबे भुँय–बाड़ी, धन–माल देयन्दे। तुचो भाई धरमु चो रतो ठान के धरमपुरा बलदे। राजधानी चो नाव तुचो–मोचो दुनो चो नाव ने रएदे। जगतु नाव चो 'जग' आरू दलपत देव नाव चो ''दल'' के मिसाउन ''जगदल'' आरू ''पुर'' बलले सहर। असन ए ठान के ''जगदलपुर'' बलदे।

राजा चो गोठ के सुनुन दुनो भाई जगतु आरू धरमु खुबे हरिक होला आरू राजा चो पुरे आपलाहान मुंड के लोवाँला।

राजा आग्याँ ने सहर बनातो बुता मुर होली। लमाहा चो कुकुर के खेदलो ठान ने राजमहल बनाला। महल चो बेर पड़ती दिसा ने आगे ले रलो नानी–नानी तरईमन के मिसाउन बड़े भारी मुंडा बनाला। आपलो आरू रानी समुंददेवी चो नाव के मिसाउन मुंडा चो नाव ''दलपत समुंद'' संगाला। एइ समुंद के आजकाल ''दलपत सागर'' बलु आत।

मुंडा खनतो बेरा निकरलो माटी ले सहर चो चारो बाटे ओसार आरू डेङ्ग भिति बनाला। एके 'गड़' बलला। गड़ भितरे राजा चो महल, राजा चो पाईकमन, नवकर–चाकरमन चो घरमन, घोड़ासार, हातिसार, रयत चो घरमन बनुन निमड़ली। तेबे अक्तइ चो सुभ जोग के दखुन सन् 1774 ईस्वी ने राजा नवा राजधानी ने ओलला आरू असन होउन जगतुगुड़ा बनली– जगदलपुर।

सब्दमन चो मायने; शब्दार्थ

कुड़या – झोपड़ी, घर

पारदी – शिकार करना

लमाहा – खरगोश

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अचरित	–	अचरज, आश्चर्य
पलटा	–	बदले में
मुंडि	–	मुंड, सिर
लोवाँला	–	झुकाया
रयत	–	प्रजा, जनता
गड़	–	क़िला, दुर्ग

iLu vkmj vH;kl

बोध–प्रस्न

गुरजी कक्छा चो पिलामन के दुय कुड़ा ने बाटुन प्रस्नोत्तर कराओत। सरासरी बेरा दुनो कुड़ा के आपलो मन ने बनाउन प्रस्न पुछोत आरू उत्तर सांगुक नी सकले आपने सांगोत।

iLu (1) [kkys fy[kks iLueu pks mRrj fn;k l %&

(क) जगदलपुर चो जुना नाव काय रली ?

(ख) जगतुगुड़ा गाँव चो मुखया चो काय नाव रली ?

(ग) राजा दलपत देव जगतुगुड़ा काय काजे गेला ?

(घ) पारदी कुकुरमन के लमाहा खेदलो ठान के राजा काय काजे राजधानी बनातो काजे बिचारला ?

(ङ) राजा जगदलपुर के कोन सन् ने राजधानी बनाला ?

iLu (2) fcpk:u mRrj fn;k l %&

(क) कुकुरमन के कोन खेदलो ?

(ख) राजा दलपत देव चो रानी चो काय नाव रए ?

(ग) जगतु चो भाई चो काय नाव रली ?

(घ) जगतुगुड़ा ने कित ठन कुड़या रला ?

(ड़) पारदी कुकुरमन के खेदतो लमाहामन के कुकुरमन उलटुन खेदले काय होती ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

iLu (3) ikB d iMu eyk Bkueu d Hkjk %&

(क) राजा दलपत देव चो जुना राजधानी ..... रली ।

(ख) राजा संगे ..... कुकुरमन रला ।

(ग) धरमु चो रतो ठान के ..... बलला ।

(घ) सहर चो चारो बाटे बनालो डेङ्ग भिति के ..... बलुआत ।

भासा–तत्व आउर ब्याकरन

- पाठ चो आट धाड़ी के इमला लिखावा आरू हुनचो जाँच पिलामन ले करावा।
- मायने पुछतोर, सांगतोर आरू सब्द के धाड़ी ने प्रयोग करावा ।

¼v½ , ikB u fØ;k pk n;Bu :ieu pk i;kx gkfyl & ,dopu vk: cgopu :i A ,d [kkyi iMu Hkkfr letk %&

(1) गोटोक मनुक नाहले तीज काजे जे क्रिया चो जे रूप चो प्रयोग होउ आय, हुनके एकवचन बलु आत ।

जसन :–

1. गोटोक रूख j, । (j, क्रिया एकवचन रूप ने आसे, कसन बलले रूख गोटकी आय ।)
2. गोटोक मनुक jyk । (jyk क्रिया एकवचन रूप ने आसे, कसन बलले मनुक गोटकी आय ।)

(2) दुठान नाहले आगर मनुक आरू काईं तीज काजे क्रिया चो जे रूप चो प्रयोग होउ आय, हुनके बहुवचन बलु आत ।

जसन :–

1. दुठान कुकुरमन jyk@jkgkr । (jyk@jkgkr क्रिया बहुवचन रूप आय, कसन बलले कुकुरमन दुठान आसोत । एथा ए बले धियान दियास – वाक्य ने बहुवचन चो प्रयोग होली गुने कुकुर सब्द चो पाछे eu सब्द जोड़लोर आसे । तुमि जानास eu

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सब्द संज्ञा आरू सर्वनाम के बहुवचन बनातो काजे लगाउ

आत बलुन, मांतर कोनी मनुक नाहले तीज चो पुरे गनती

नाहले हिसाप बिती सब्द रले मनुक आरू तीज चो पुरे मन

लगातोर अटका नी पड़े। ए वाक्य के आमि असन बले

लिखुक सकुँ – दुठान d|d|j jyk@jkgkr |)

2. जमाय कुकड़ी ejyk । (ए वाक्य ने कुकड़ी सब्द चो पुरे हिसाप बिती सब्द

tek; लिखलोर आसे गुने ejyk क्रिया बहुवचन ने आसे

आरू कुकड़ी सब्द चो पाछे eu लगातोर अटका नियाय ।

eu लगाले बले नंगत आय, नी लगाले बले |)

(3) जे लोग के मान करूँ आँव, हुनमन एकलेय रले बले हुनमन काजे बहुवचन क्रिया चो प्रयोग होउ आय ।

जसन :–

1. राजा दलपत देव जगतुगुड़ा vejyk ।

2. आजि आमचो मीत bykIkr ।

3. भाटो केंव / काहाँ tkn ?

RF1HGA

उपरे लिखलोर वाक्यमन ने राजा, मीत आरू भाटो गोटोक–गोटोक आत, मांतर हुनमन के मान करतो काजे एकवचन क्रिया अमरलो, इलोसे आरू जायदे चो प्रयोग नी करून बहुवचन क्रिया अमरला, इलासोत आरू जादे चो प्रयोग करलोर आसे ।

योग्यता बिस्तार

एदाँय सांगा, गुरजी, बयंजी, सतरा, सतरी, सारा, सारी, बेटा, बेटी, बहिन, जुआँय, दादी, आयी, आजा, दीदी, दादा, आया आरू बाबा काजे एकवचन क्रिया चो प्रयोग होयदे कि बहुवचन क्रिया चो ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 4 साहसी रूपा

इस पाठ में एक शर्मीली लड़की की साहस–कथा बताई गई है जो अपनी सहपाठिन की जान बचाती है। उसने यह करतब कैसे किया, इस कहानी में पढ़ेंगे।

पाठशाला में एक नई लड़की ने प्रवेश लिया। अध्यापिका जी ने कक्षा से उसका परिचय कराया– ''यह रूपा है। यह इसी कक्षा में पढ़ेगी। '' फिर वे रूपा से बोलीं, ''रूपा! तुम्हारी सहेलियाँ तुम्हें बता देंगी कि वे कौन–कौन–से पाठ पढ़ चुकीं हैं। कोई कठिनाई होने पर वे तुम्हारी सहायता करेंगी।''

रूपा कम बोलती थी। वह चुप ही रहती थी। उसकी सहेलियाँ उससे बात करना चाहती थीं, परन्तु वह चुप–चुप ही रहती। लड़कियों ने भी दो–तीन दिन तो उससे बात करने की कोशिश की, फिर वे अपनी–अपनी सहेलियों में मस्त हो गईं। उन्हें लगा कि रूपा किसी से बात करना पसंद नहीं करती।

एक दिन पाठशाला में पिकनिक का कार्यक्रम बना। सबने सोचा, रूपा नहीं जाएगी, परन्तु पिकनिक के दिन रूपा ही सबसे पहले विद्यालय के फाटक के पास खड़ी थी।

पिकनिक का स्थान छोटी–सी झील का किनारा था। ऊँचे–ऊँचे वृक्षों से घिरा यह स्थान पिकनिक के लिए बहुत उपयुक्त था। पहाड़ी स्थल होने के कारण ऊँची–नीची भूमि पर खिले रंग–बिरंगे फूल और लताएँ झील की शोभा और भी बढ़ा रही थीं।

लड़कियों के वहाँ पहुँचते ही उनकी हँसी और ठहाकों से वातावरण गूँजने लगा। सभी इधर–उधर दौड़कर अपने लिए अच्छे–से–अच्छा स्थान खोजने लगीं। अध्यापिका जी ने एक सुंदर जगह देखकर दरियाँ बिछवा दीं। कुछ लड़कियाँ वहीं बैठकर हँसी–मजाक करने लगीं।

शिक्षण–संकेत : *बच्चों से पिकनिक पर जाने के संबंध में चर्चा करें। उसके लिए क्या तैयारियाँ करनी चाहिए, क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए–यह पूछें पिकनिक – स्थान पर यदि कोई दुर्घटना हो जाए तो वे क्या करेंगे/करेंगी ? पाठ के एक अनुच्छेद का आदर्श वाचन करें। कक्षा को छोटे–छोटे समूहों में बाँटकर उन्हें कहानी पढ़ने के लिए दें। प्रत्येक समूह से अनुच्छेद का सार पूछें। बाद में कहानी का सारांश बताएँ। छात्र–छात्राओं के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कुछ इधर–उधर घूमकर प्रकृति की शोभा का आनंद लेने लगीं।

रूपा आज भी अकेली थी। वह अपनी सहेलियाँ से अलग घूम रही थी। वह सुंदर–सुंदर फूलों को देखती, उनकी ओर हाथ बढ़ाती, पर बढ़ा हुआ हाथ फूलों को सहलाकर पीछे आ जाता। वह फूलों की क्यारियों से होती हुई लताओं के पास जाकर बैठ गई।

रूपा मन–ही–मन उस स्थान के सौंदर्य की प्रशंसा कर रही थी। अचानक 'छपाक' की आवाज़ हुई और एक चीख गूँज गई। रूपा उठकर तेजी से आवाज़ की ओर दौड़ी। झील के एक किनारे पर उसे एक सफेद कपड़ा–सा दिखाई दिया। वह उधर ही दौड़ने लगी। पास पहुँचते ही उसे 'बचाओ ! बचाओ!' की आवाज़ सुनाई पड़ी। उसने देखा कि उसकी सहेली शांति झील में गिर गई है।

वास्तव में झील के उस स्थान पर पानी कम और कीचड़ अधिक था। एक तरह से झील का वह भाग दलदल बना हुआ था और लोग उस तरफ बहुत कम जाते थे। रूपा ने जोर–से आवाज़ लगाई, 'बचाओ–बचाओ'। उसने शांति से कहा, ''तुम धैर्यपूर्वक खड़ी रहो, अभी मैं किसी को बुला लाती हूँ,'' परंतु शांति हाथ–पाँव पटक रही थी। इससे वह कीचड़ में और भी धँसती जा रही थी। रूपा ने एक क्षण कुछ सोचा और वह अपने थैले में से फल काटने का चाकू लेकर पास की लता को जल्दी–जल्दी काटने लगी। जैसे ही लता कटी, उसने उसे जोर–से शांति की ओर फेंका और चिल्लाई,''इसे पकड़ लो, शांति ! इसे दोनों हाथों से कसकर पकड़ लो ! ''

शांति ने लता पकड़ ली और कीचड़ में पाँव मारने लगी। रूपा ने कहा,'' इसे पकड़े रहो, पाँव मत मारो। मैं तुम्हें धीरे–धीरे अपनी तरफ खींचूँगी । ''

रूपा लता को अपनी ओर खींचने लगी। उसके हाथ जगह–जगह से कट रहे थे। उसका कुर्ता भी फट गया था, परंतु उसने किसी बात की परवाह न की। शांति को बाहर लाना कोई आसान काम न था। पर रूपा ने हिम्मत नहीं हारी और धीरे–धीरे उसे खींचती रही। शांति को भी अब अपने बचने की आशा हो गई। वह धैर्य से लता को पकड़े रही और आगे–बढ़ती गई। बीच–बीच में रूपा, 'बचाओ, बचाओ' भी चिल्लाती रही।

लोगों ने 'बचाओ, बचाओ' की आवाज़ सुनी तो वे उधर दौड़े। रूपा बहुत थक चुकी थी। उसके शरीर से पसीना बह रहा था। उसका मुँह लाल हो रहा था, पर भी वह लता को खींचे जा रही थी। उसी समय अध्यापिका तथा झील का एक चौकीदार वहाँ पहुँच गए। उन्होंने रूपा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

के हाथों से लता ले ली और शांति को खींचने लगे। शांति कीचड़ से निकल आई और घिसटती हुई सूखी ज़मीन पर आ पड़ी। रूपा बेहोश हो गई थी। इतने में अन्य लड़कियाँ वहाँ पहुँच गईं।

रूपा के मुँह पर पानी के छींटे मारे गए। वह होश में आ गई। शांति का शरीर कीचड़ से लथपथ था। उसे भी कई खरोंचें लगीं थीं, पर वह होश में थी। शांति सबको पूरी बात बता रही थी और सभी लड़कियाँ रूपा को प्रशंसा भरी दृष्टि से देख रही थीं।

अध्यापिका जी ने रूपा की पीठ थपथपाई। शांति ने उसको धन्यवाद देते हुए कहा, ''आज तुम न होती तो मैं अपने प्राणों से हाथ धो बैठती । हम तुम्हें अभिमानी समझती थीं, पर तुम तो सच्ची मित्र निकलीं ।''

रूपा ने शर्माते हुए कहा, '' नहीं–नहीं ऐसा नहीं है। मुझे किसी से भी बात करने में संकोच होता है।'' तभी एक लड़की बोल उठी, ''हाँ, अब हम तुम्हें अभिमानी नहीं, शर्मीली कहा करेंगी।''

सभी लड़कियाँ ठहाका मारकर हँसने लगीं और वातावरण में फिर से प्रसन्नता छा गई।

शब्दार्थ

प्रवेश लेना	–	दाखिला लेना, भर्ती होना	धैर्य	–	.....
सहपाठिनें	–	साथ पढ़नेवाली लड़कियाँ	लथपथ	–	.....
ठहाका	–	जोर की हँसी	संकोच	–	.....
घमंडी	–	अभिमानी	दलदल	–	.....
सौंदर्य	–	सुंदरता	प्रशंसा	–	तारीफ, बड़ाई

यहाँ कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे हैं। उन्हें चौखाने में से छाँटकर लिखो।

सकुचाहट, गीली कीचड़ से भरी ज़मीन,
धीरज, सना हुआ

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. कहानी पढ़कर रूपा के बारे में अपने शब्दो में लिखो।

प्रश्न 2. रूपा को साहसी क्यों कहा गया है ?

प्रश्न 3. रूपा का बढ़ा हुआ हाथ फूलों को सहलाकर वापस पीछे क्यों आ जाता था ?

प्रश्न 4. यदि तुम रूपा के स्थान पर होते तो शांति की किस प्रकार मदद करते ?

प्रश्न 5. पिकनिक पर जाते समय हमें क्या विशेष सावधानियाँ बरतनी चाहिए ?

प्रश्न 6. तुम पिकनिक किस मौसम में जाना चाहोगे और क्यों ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भाषातत्व और व्याकरण

- **आओ पढ़ें, समझें और लिखें।**

कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो वाक्यांश के लिए प्रयोग किए जाते हैं – जैसे जो मांस खाता है उसे मांसाहारी कहते हैं।

प्रश्न 1 नीचे दिए वाक्यांशों के लिए एक–एक शब्द लिखो।

क. जो फल खाता हो ख. साथ पढ़नेवाली

ग. जिसको होश न रहे घ. जिसे बहुत अभिमान हो

ङ. जिसका मूल्य आँका न जा सके।

प्रश्न 2 इन शब्दों को वर्णमाला के क्रम में लिखो।

सहपाठिन, कठिनाई, उनसे, लकड़ी, पसंद, अध्यापिका, परन्तु, बचाओ, लता।

प्रश्न 3 'धैर्य,' 'ग्रह', 'राष्ट्र', 'कारण' – इन सभी शब्दों में 'र' का प्रयोग अलग–अलग रूप में किया गया है। नीचे दिए गए शब्दों में 'र' जोड़कर उनके उचित रूप लिखो।

क. गाम ..... ङ. आय .....

ख. सिफ ..... च. पथम .....

ग. किया ..... छ. वष .....

घ. काय ..... ज. टक .....

प्रश्न 4 पाठ में शब्द आया है 'दलदल'। इसमें दो वर्णों का दो–दो बार प्रयोग हुआ है। ऐसे चार शब्द (पद) लिखो जिनमें दो ही वर्णों का दो बार प्रयोग हुआ हो।

- संज्ञा शब्द के संबंध में तुम पढ़ चुके हो। व्यक्ति विशेष या स्थान विशेष का नाम बताने वाली संज्ञाओं को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे– रमेश, शीला, ताजमहल, मुंबई आदि। किसी जाति को बतानेवाली संज्ञा को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे– झील, पाठशाला, लड़की आदि।

प्रश्न 6 इस पाठ में से व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञाएँ छाँटकर लिखो।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

योग्यता–विस्तार

- हमारे चेहरे के भाव बदलते रहते हैं। नीचे बने चेहरों को देखो और उनमें किस प्रकार का भाव प्रकट हो रहा है, उनके सामने लिखो।

  हँसता हुआ, गुस्से में, रोता हुआ, डर का भाव।

.....

.....

.....

.....

4G5DY9

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 5

मेरा एक सवाल

इस कविता में भारत माता अपनी उन्नति के लिए विभिन्न प्रकार के प्रश्न उठाती है। किसान, सैनिक, मजदूर, विद्यार्थी और शिक्षक उनके प्रश्नों के उत्तर देकर उन्हें आश्वस्त करते हैं।

पात्र– 1. भारत माता 2. किसान
3. सैनिक 4. मज़दूर
5. विद्यार्थी 6. शिक्षक

(एक चौपाल है। वहाँ पर कुछ लोग बैठे हैं। तभी गीत की आवाज़ उभरती है।)

चूँ–चूँ–चूँ–चूँ चिड़ियाँ चहकीं
मह–मह–मह–मह कलियाँ महकीं।
पूर्व दिशा ने लाली घोली,
भारत माँ बेटों से बोली।

(गीत की समाप्ति के साथ दरवाजा खुलता है। द्वार से भारत माता का प्रवेश।)

भारत माता – कौन करेगा मेरा आँगन,
हरा–भरा खुशहाल ?
कैसे सुलझाओगे बोलो,
मेरा एक सवाल ?

किसान – मैं खेतों में अन्न उगाकर,
कर दूँगा खुशहाल ।
माँ ! मैं हल से हल कर दूँगा,
तेरा एक सवाल।

भारत माता – कौन करेगा मेरी रक्षा,
बोलो मेरे लाल ?
कौन मुझे मज़बूत करेगा,
मेरा एक सवाल ?

शिक्षण–संकेत : *बच्चों से देश–सेवा पर चर्चा करें। उन्हें देश–सेवा का अर्थ बताएँ। अपने–अपने काम को पूरे तन–मन से करना ही देश–सेवा है। विद्यार्थी का मन लगाकर पढ़ना, शिक्षक का मन लगाकर पढ़ाना, किसान का मन लगाकर खेती करना सबसे बड़ी देश–सेवा है। पूर्ण हाव–भाव, आरोह–अवरोहपूर्वक कविता के एक अंश को पढ़िए और अनुकरण वाचन कराइए। छात्रों को छोटे–छोटे समूह में बाँटकर एक–एक पात्र का वाचन उसी हाव–भाव और आरोह–अवरोहपूर्वक करने को प्रोत्साहित करें। उसी अंश का भाव पूछें। बाद में संपूर्ण कविता के एक–एक अंश का अर्थ स्पष्ट करें और बच्चों से उस पर चर्चा करें।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सैनिक – डटा रहूँगा मैं सीमा पर,
तेरा हूँ मैं लाल।
शत्रुदमन कर हल कर दूँगा,
तेरा एक सवाल।

भारत माता – कौन करेगा करके मेहनत,
मुझको मालामाल ?
कौन पसीना बहा सकेगा,
मेरा एक सवाल ?

मजदूर – मैं उत्पादन बढ़ा करूँगा,
तुझको मालामाल।
करके मेहनत हल कर दूँगा,
तेरा एक सवाल।

भारत माता – कौन ज्ञान–विज्ञान सीखकर,
मेटेगा जंजाल ?
कैसे मुझे मिलेगा गौरव,
मेरा एक सवाल ?

विद्यार्थी – मैं पढ़–लिख कर्त्तव्य करूँगा,
मेटूँगा जंजाल।
ज्ञान–दीप से हल कर दूँगा,
तेरा एक सवाल।

भारत माता – कौन करेगा पढ़ा–लिखाकर,
सबको यहाँ निहाल ?
ज्ञान और विज्ञान सिखाकर,
मेरा एक सवाल ?

शिक्षक – ज्ञान और विज्ञान सिखाकर,
सत्य आचरण ढाल।
पढ़ा, लिखाकर हल कर दूँगा,
तेरा एक सवाल।

भारत माता– मिलजुलकर सब काम करोगे,
सब होंगे खुशहाल।
सच बेटो! तुम हल कर दोगे,
मेरे सभी सवाल।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सब मिलकर –हम सब मिलकर काम करेंगे,
तेरे हैं हम लाल ।
सदा करेंगे जग में ऊँचा,
माँ तेरा यह भाल ।
भारत माता की जय,
भारत माता की जय,
(पर्दा गिरता है।)

शब्दार्थ

चौपाल	–	गाँव का वह चबूतरा, जहाँ लोग शाम को बैठते हैं।			
शत्रुदमन	–	शत्रु का नाश	उत्पादन	–	पैदावार
जंजाल	–	परेशानी	आचरण	–	व्यवहार
खुशहाल	–	सुखी, सम्पन्न	मालामाल	–	धन–धान्य से पूर्ण
ज्ञानदीप	–	ज्ञान का दीपक	गौरव	–	महत्व, बड़प्पन, सम्मान, आदर

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. भारत माता अपने किन–किन पुत्रों से बात करती है ?
प्रश्न 2. मजदूर भारत माता का गौरव किस प्रकार बढ़ाएगा ?
प्रश्न 3. भारत माता देश के नागरिकों से क्या चाहती हैं ?
प्रश्न 4. तुम भारत माता की सेवा किस रूप में करना चाहोगे ?
प्रश्न 5. यदि शिक्षक, किसान, मजदूर, विद्यार्थी अपना–अपना कार्य मन लगाकर करें तो देश का क्या रूप हो जाएगा ?
प्रश्न 6. कविता में कौन सा पात्र तुम्हें अच्छा लगा ? उसके बारे में अपने शब्दों में लिखो ?

भाषातत्व और व्याकरण

यहाँ हम सीखेंगे – समानोच्चारित और विलोम शब्द।

- पाठ के अंत में दिए गए शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुए वाचन करें। पुस्तक को बन्द कर दें। एक बच्चा इन शब्दों को बोले, शेष बच्चे लिखें। फिर बच्चे परस्पर कॉपी बदलकर शब्दों की जाँच करें।

प्रश्न 1 दिए गए उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों के समानोच्चारित तीन–तीन शब्द लिखो।

घोली, डटा, माता, सब।

उदाहरण–लाली – काली, बाली, डाली।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न 2 'ज्ञान' के पहले 'वि' जोड़कर शब्द बना है– 'विज्ञान'। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों में 'वि' जोड़कर नए शब्द बनाओ और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

नम्र, मल, कल, शेष।

प्रश्न 3 निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखो।

खुशहाल, पूर्व, मेरा, जय, ऊँचा।

प्रश्न 4 'लाली' शब्द के वर्णों को अगर हम उलटकर रखें तो शब्द बनेगा 'लीला'। यह सार्थक शब्द है। ऐसे दो–दो वर्णो के कोई चार शब्द सोचकर लिखो जिनके वर्णों को उलटकर रखने पर सार्थक शब्द बन जायँ।

रचना

- नीचे दी गई कविता की पंक्तियाँ पढ़ो। कविता में चार पंक्तियाँ और बनाकर लिखो।

मेरा भारत न्यारा है,
दुनिया भर में प्यारा है।
साथ–साथ हम सब रहते,
हम सबका यह प्यारा है।

गतिविधि

- शिक्षक बच्चों से इस कविता को नाटक के रूप में लिखवाएँ। इसके लिए बच्चों को चार–चार, पाँच–पाँच के समूह में बाँटें। उन्हें कविता का एक–एक भाग दें और नाटक के रूप में लिखने को कहें। तैयार नाटक का कक्षा में मंचन करवाएँ।
- हम बड़े होकर देश की सेवा कैसे करेंगे– इस संबंध में विद्यार्थियों से परस्पर चर्चा कराएँ–
- नीचे लिखी कविता को कक्षा के बच्चे समवेत स्वर में गाएँ। यदि विद्यालय में ड्रम हो तो राग के साथ ड्रम बजाएँ।

वीर तुम बढ़े चलो,धीर तुम बढ़े चलो।
हाथ में ध्वजा रहे, बालदल सजा रहे।
ध्वज कभी झुके नहीं,दल कभी रुके नहीं।
वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।
सामने पहाड़ हो, सिंह की दहाड़ हो,
तुम निडर डरो नहीं, तुम सबल झुको नहीं।
वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।

4GN62J

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 6

औद्योगिक–तीर्थ–कोरबा

पं. जवाहरलाल नेहरू ने भोपाल स्थित भारी बिजली के कारखाने को मध्यप्रदेश का औद्योगिक तीर्थ बताया था। हमारे राज्य छत्तीसगढ़ का औद्योगिक तीर्थ कोरबा है। कोरबा को औद्योगिक तीर्थ क्यों कहा गया है, इस पाठ में पढ़ेंगे।

मनुष्य हो या मशीन, सभी को कार्य करने के लिए ऊर्जा अर्थात् बल की आवश्यकता होती है। मनुष्य या अन्य जीव–जंतु भोजन से ऊर्जा प्राप्त करते हैं। मशीनों को चलाने के लिए ऊर्जा के कई स्रोतों का उपयोग किया जाता है। खनिज तेल, पेट्रोलियम का शोधन करके पेट्रोल, डीजल आदि बनाया जाता है, जिससे रेलगाड़ियाँ एवं मोटरगाड़ियाँ चलाई जाती हैं। खदानों से प्राप्त होनेवाले पत्थर के कोयले से बड़े–बड़े कल–कारखाने चलाए जाते हैं। आजकल इस कोयले का सबसे अधिक उपयोग विद्युत (बिजली) पैदा करने में किया जाता है, जहाँ कोयले को जलाकर इसकी ताप–शक्ति से बिजली पैदा की जाती है।

बिजली आज मनुष्य की अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। हमारे रसोईघर की चटनी पीसने की मशीन से लेकर बड़ी–बड़ी रेलगाड़ियाँ और कारखाने तक आज बिजली की ऊर्जा से ही चल रहे हैं। एक घंटे के लिए भी बिजली बंद हो जाने पर लोग परेशान हो उठते हैं। आज किसी भी देश, राज्य, शहर या गाँव को विकसित एवं खुशहाल होने का आधार बिजली के मिलने पर ही निर्भर करता है।

हमारा छत्तीसगढ़ वर्तमान में मिलनेवाली बिजली के आधार पर एक खुशहाल राज्य है। हमारे राज्य की खुशहाली का प्रमुख आधार है हमारा औद्योगिक तीर्थ 'कोरबा'। कोरबा को छत्तीसगढ़ की ऊर्जा नगरी भी कहते हैं।

छत्तीसगढ़ के उत्तर पूर्व में वन एवं वनवासियों से भरा–पूरा जिला है– कोरबा। इस जिले का मुख्यालय है– कोरबा नगर। कोरबा एक विशाल औद्योगिक नगर है। इस नगर में बिजली बनाने का बहुत बड़ा विद्युतगृह (पावरहाउस) है। यह पावरहाउस देश में सबसे बड़ा है। इसे भारत सरकार के राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम द्वारा बनाया गया है।

इसके अतिरिक्त छत्तीसगढ़ विद्युत मंडल का भी अपना पावर हाउस है। दोनों पावर हाउसों में बिजली पैदा करने के लिए कोयले का उपयोग किया जाता है। इनमें कोयले को जलाकर उसके ताप से पानी की भाप बनाई जाती है। भाप से मशीनें चलाकर बिजली बनाई जाती है। इसलिए इन्हें तापविद्युतगृह कहते हैं।

शिक्षण–संकेत : *राज्य की प्राकृतिक सम्पदा– कोयला, लोहा, लकड़ी आदि – की जानकारी छात्रों को दें। इसी सम्पदा का सही उपयोग करते हुए भिलाई स्टील प्लांट बनाया गया है। ऐसा ही उद्योग–केंद्र कोरबा में स्थापित किया गया है। कोरबा के उद्योगों की संक्षिप्त जानकारी दें। बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में बाँटकर उन्हें एक–एक अनुच्छेद पढ़ने को दें। बाद में उनसे अनुच्छेद का सारांश पूछें। फिर वाचन कराएँ। और पाठ का सारांश बताएँ।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पावरहाउस में बिजली पैदा करने के लिए बहुत ज्यादा खनिज कोयले की आवश्यकता होती है। कोयला भी अच्छी किस्म का होना चाहिए। कोरबा एवं इसके आसपास के क्षेत्र में अच्छे कोयले का पर्याप्त भंडार भूमि के अंदर है। भूमि के अंदर से कोयला निकालने का काम करनेवाली कई कोयला खदानें हैं। इनमें कोरबा, कुसमुंडा, गेवरा, दीपिका, बाँकीमोगरा आदि प्रमुख परियोजनाएँ हैं। इन खदानों से भारी मात्रा में कोयला निकाला जाता है। यहाँ से निकाला गया कोयला, मालगाड़ियों एवं ट्रकों से देश के दूसरे भागों में भी भेजा जाता है।

पावरहाउस में कोयले के साथ ही पानी की भी बहुत जरूरत होती है। पानी की कमी न हो, इसके लिए कोरबा–दर्री में हसदो नदी पर एक बाँध बनाया गया है, जिसे दर्री बाँध के नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त कोरबा से कुछ ही दूरी पर हसदो नदी पर एक और विशाल बाँध बनाया गया है, जिसे मिनी माता (बाँगो) बाँध कहा जाता है। दर्री बाँध में पानी कम होने पर बाँगो बाँध से पानी दिया जाता है। बाँगो बाँध में जल–विद्युत की भी तीन इकाइयाँ हैं। प्रत्येक इकाई में 40 मेगावाट बिजली पैदा होती है। यहाँ पर बाँध के गिरते हुए पानी की ताकत से मशीन चलाकर बिजली पैदा की जाती है।

कोरबा में एल्यूमिनियम धातु बनाने का भी एक बड़ा कारखाना है। इस कारखाने में बॉक्साइट नामक खनिज का शोधनकर एल्यूमिनियम बनाया जाता है। एल्यूमिनियम से कई तरह के बर्तन, फर्नीचर, बिजली के तार आदि बनाए जाते हैं।

कोरबा में इनके अलावा भी छोटे–छोटे कई कल–कारखाने हैं, जो इन बड़े कारखानों की जरूरतों को पूरा करते हैं। यहाँ की खदानों एवं कारखानों के कारण सामान ढोने अर्थात् ट्रांसपोर्ट का भी काम बहुत ज्यादा है।

इन उद्योगों में बहुत बड़ी संख्या में कामगार काम करते हैं। इस कारण कोरबा का नगरीय क्षेत्र भी बहुत बड़ा हो गया है। सभी की जरूरतों को पूरा करने के लिए व्यापार भी काफी बढ़ा है। काम एवं व्यापार के लिए प्रायः देश के सभी क्षेत्रों के लोग यहाँ निवास करते हैं और आते–जाते रहते हैं।

कोरबा के ताप विद्युतगृह के कारण ही छत्तीसगढ़ में सभी को आवश्यकता के अनुसार बिजली मिल रही है। यही हमारी खुशहाली का कारण है। कोरबा के ताप विद्युतगृह से कई अन्य प्रदेशों को भी बिजली की पूर्ति की जाने की संभावना है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण कोरबा आज एक औद्योगिक तीर्थ बन गया है।

हमें आज बिजली पर्याप्त मिल रही है, किंतु इतना ध्यान रखें कि बिजली का दुरुपयोग न हो। जब आवश्यक न हो बिजली के बल्ब, पंखे, अन्य साधनों को बंद कर रखें। दिन में कमरे की खिड़कियाँ खोलकर रखें ताकि कमरे में रोशनी रहे और बिजली की बचत की जा सके।

शब्दार्थ

अनिवार्य – आवश्यक रूप से
वनवासी – वन में रहनेवाले
कामगार – काम करनेवाले, श्रमिक
अतिरिक्त – अलावा
दुरुपयोग – गलत उपयोग

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 कोरबा नगर कहाँ स्थित है ? और क्यों प्रसिध्द है ?

प्रश्न 2 हमें किन वस्तुओं से ऊर्जा मिलती है ?

प्रश्न 3 किस पदार्थ का शोधन करके पेट्रोल–डीजल बनाया जाता है ?

प्रश्न 4 हमारे प्रदेश में जल–विद्युत किस बाँध से पैदा की जाती है ?

प्रश्न 5 कोरबा में सामान ढोने का काम बहुत ज्यादा क्यों है ?

प्रश्न 6 हम अपने घरों में बिजली की बचत कैसे कर सकते हैं ?

प्रश्न 7 जब तुम्हारे घर की बिजली बंद हो जाती है तो तब तुम्हें क्या – क्या परेशानियाँ होती हैं ?

प्रश्न 8 नीचे लिखे शब्दों से तुम क्या समझते हो ? पाठ को पढ़ो और चर्चा करके लिखो । ऊर्जा, स्रोत, पेट्रोलियम, विद्युतगृह, ताप–विद्युत, जल–विद्युत।

भाषातत्व और व्याकरण

प्रश्न 1 नीचे दिए गए शब्दों के अर्थ जानकर इनका वाक्यों में प्रयोग करो।

स्रोत, शोधन, अनिवार्य, खुशहाली, अतिरिक्त, पर्याप्त।

समझो

'कमल भिलाई गया है।' 'मनोज भिलाई से आया है।' इन दोनों वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य इस तरह बना सकते हैं– कमल भिलाई गया है और मनोज भिलाई से आया हैं। दोनों वाक्यों को जोड़ने के लिए 'और' शब्द का प्रयोग किया गया है। ''कमल भिलाई गया है। '' सरल वाक्य है। ''कमल भिलाई गया है और मनोज भिलाई से आया है'', संयुक्त वाक्य है।

प्रश्न 2 नीचे दिए गए वाक्यों को इसी तरह जोड़कर नये वाक्य बनाओ।

क. सुशील खेल रहा है। रमेश पढ़ रहा है।

ख. सीमा हँसती है। रचना चिढ़ती है।

ग. वत्सल पढ़ने जाएगा। नमन मंदिर जाएगा।

घ. उषा सो रही है। श्वेता उसके पास बैठी है।

- नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़ो।

क. हमें पहले बिजली कम मिलती थी।

ख. हमें आज बिजली पर्याप्त मिलती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ग. हमें आगे बिजली पर्याप्त मिलती रहेगी।

वाक्य 'क' बीते समय–भूतकाल– की बात बताता है।

वाक्य 'ख' वर्तमान समय की बात बताता है।

वाक्य 'ग' भविष्य की बात बताता है।

- ''कमल भिलाई गया है ।'' यह वाक्य '' कमल कहाँ गया है ?'' प्रश्न का उत्तर है। इसी तरह हर उत्तर का एक प्रश्न होता है। अब तुम नीचे लिखे उत्तरों के प्रश्न बनाओ ।

क. छत्तीसगढ़ की ऊर्जा नगरी कोरबा को कहते हैं।

ख. मशीन को चलाने के लिए ऊर्जा का उपयोग करते हैं।

ग. कोरबा का ताप विद्युत गृह कोयले से चलता है।

घ. मनुष्य या अन्य जीव – जन्तु भोजन से ऊर्जा प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 3 अब नीचे दिए वर्तमान काल के वाक्यों को भूतकाल और भविष्यत् काल में बदलो।

क. इन उद्योगों में सैकड़ों कामगार काम करते हैं।

ख. भाप से मशीनें चलाकर बिजली पैदा की जाती है।

ग. रेलगाड़ियाँ बिजली की ऊर्जा से ही चलती हैं।

घ. इस नगर में बिजली बनाने का कारखाना है।

क्या तुम विद्यालय और अशुद्ध शब्दों की रचना समझते हो ?

- विद्यालय में 'द्या' की रचना 'द्या' के रूप में है। इसमें 'द' (आधा है) और 'या' मिला हैं। इसे विध्यालय लिखना गलत है।

- 'अशुद्ध' मे 'द्' और 'ध' मिले हैं। 'द' आधा है और 'ध' पूरा। इसे 'अशुध्द' लिखना गलत है।

यह भी समझो–'अशुद्धि' को यदि हम तोड़कर लिखेंगे तो उसका रूप होगा– अ+शु+द्+धि इसे अ+शु+दि+ध लिखना गलत है। आधे वर्ण (क,ख,ग आदि) पर मात्रा लगाना गलत है।

प्रश्न 4 'द्य' और 'द्ध' से बने तीन–तीन शब्द खोजकर लिखो।

- 'राम–रावण' यहाँ दोनों शब्दों के बीच में – चिह्न लगाया गया है जिसका अर्थ है 'और'। अतः 'राम–रावण' का अर्थ हुआ राम और रावण। इसी प्रकार 'विद्युत–गृह' एक शब्द है, यहाँ '–' चिह्न का अर्थ है 'का'। अतः इस पूरे शब्द का अर्थ है विद्युत का गृह।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नीचे लिखे शब्द युग्मों के अर्थ लिखो–

क. खेल–खिलाड़ी ख. विद्युत–मंडल

ग. सुबह–शाम घ. गुलाबजल

ङ. पशु–पक्षी च. सुरक्षा–कवच

प्रश्न 5 इन वाक्यों में एक–एक शब्द अशुद्ध लिखा है। इसे खोजो और शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखो।

क. इन खादानों से भारी मात्रा में कोयला निकाला जाता है ।

ख. बाँगो बाँध मैं जल–विद्युत की तीन इकाइयाँ हैं।

ग. कोरबा हमारा तीर्थस्थान है।

घ. बाँध से कई नालीयों में पानी निकाला जाता है।

प्रश्न 6 इन शब्दों को सुधारकर लिखो–

इकाइयाँ, बिजलीयाँ, अलमारीयाँ

4H6X5U

रचना

- कोरबा को औद्योगिक तीर्थ कहा गया है। अपने शिक्षक से जानकारी लेकर छत्तीसगढ़ के किसी अन्य औद्योगिक नगरी के संबंध में दस वाक्य लिखो।

यह भी जानो

इस पाठ में बिजली बनाने के कुछ प्रकार बताए गए हैं –

जल–विद्युत – बाँध में पानी इकट्ठा करते हैं और फिर गिराते हैं। इस विधि से बिजली पैदा की जाती है।

ताप–विद्युत – कोयला जलाकर ताप पैदा की जाती है, जिससे बिजली बनाई जाती है।

वायु–विद्युत – वायु की सहायता से भी बिजली पैदा की जाती है। पवन चक्की इसका उदाहरण है।

योग्यता विस्तार

- पुस्तकालय से पुस्तक ढूँढ़कर किसी अन्य औद्योगिक स्थान की जानकारी प्राप्त करो।
- कोरबा में बिजली कोयले से पैदा की जाती है। कोयला धीरे – धीरे खत्म होता जा रहा है। कोयला बनने में कई हजार वर्ष लग जाते हैं। यदि कोयला खत्म हो जाए तो क्या होगा ?

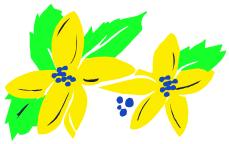

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4HFT7H

पाठ 7

घरौंदा

बच्चों को पशु–पक्षियों से बड़ा लगाव होता है। वे छोटे–छोटे पिल्लों, मेमनों के साथ खेलते, कूदते हैं। इस कहानी में बच्चों के पशु–प्रेम और उनके प्रति संवेदना का वर्णन है।

झुमरी कहाँ से आई किसी को नहीं मालूम। उसे किसी ने पाला भी नहीं था। वह गली में रहती और गली की डटकर रखवाली करती। गली का हर घर उसका अपना था। झुमरी गली–मुहल्ले के सभी बच्चों को बड़ी प्यारी थी। बच्चे दिन भर उसे घेरे रहते। अपने माँ–बाप के रोकने पर भी न रुकते। छिपा–छिपाकर रोटी का टुकड़ा ले आते और उसे खिलाते।

इस बार झुमरी के पाँच पिल्ले पैदा हुए। बच्चों की खुशी का ठिकाना न रहा। हर बच्चा उन्हें छू–छूकर देखता और खुश होता । बच्चे कभी–कभी उन छोटे पिल्लों को रोटी का टुकड़ा खिलाने का प्रयत्न भी करते, पर छोटे पिल्ले अपनी माँ का दूध पीकर ही मस्त रहते। तब कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। झुमरी और उसके पिल्ले खुले आसमान के नीचे ही ठंडी रात बिताते थे।

दूसरे दिन सब बच्चों ने देखा, एक पिल्ला मर गया। तीसरे दिन एक पिल्ला और चल बसा। किसी ने कहा, ''बेचारा ठंड के मारे मर गया । इनका घर बनाना चाहिए।''

सबने हाँ–में–हाँ मिलाई–''हाँ, बेचारों का घर बनना चाहिए।'' थोड़ी देर बाद सब अपने–अपने घर चले गए। कौन घर बनाने की जहमत मोल ले ? सब बच्चों के साथ अमिता भी रोज पिल्लों से खेलती। खेलकर घर आती तो माँ डाँटतीं, ''तूने जरूर उन गंदे पिल्लों को हाथ लगाया होगा। कहना नहीं मानती। चल, साबुन से हाथ धो।'' माँ के कहने से अमिता हाथ धोती, लेकिन एक विचार उसके मन में बराबर घुमड़ता रहता–''रश्मि का घर है, दीपक का घर है, मेरा घर है, सबका घर है। झुमरी और उसके पिल्लों का घर क्यो नहीं है ?''

वह सोचती–''रात में मुझे लिहाफ में भी ठंड लगती है। पिल्लों के पास तो कोई कपड़ा भी नहीं। इन्हें कितनी ठंड लगती होगी ?''

शिक्षण–संकेत : *बच्चों से पशु–पक्षियों के संबंध में चर्चा करें। उन्हें बताएँ कि पशु–पक्षी हमारे मित्र और सहायक हैं। वे कई रूपों में हमारी सहायता करते हैं। पालतू पशुओं के संबंध में उनसे प्रश्न पूछें। कुत्ते की वफादारी के संबंध में कोई घटना सुनाएँ। बताएँ कि इस कहानी में भी बच्चों का पशु–प्रेम दर्शाया गया है। पाठ में प्रयोग किए गए मुहावरों को स्पष्ट करें उनका वाक्यों में प्रयोग करके अर्थ स्पष्ट करें और विद्यार्थियों से उनका वाक्यों में प्रयोग कराएँ ।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उस रात को अमिता ने डरते–डरते अपनी माँ से कहा, ''माँ, झुमरी और उसके पिल्ले जाड़े में मरते हैं। बाहर वर्षा हो रही है। ठंडी हवा चल रही है। इन्हें अपने घर के बरामदे में बैठा दो न ?''

माँ पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। उलटे वे तो आगबबूला होकर अमिता को लगीं डाँटने–''तू तो पागल हो गई है, झुमरी, झुमरी के पिल्ले। हरदम इनकी रट लगाए रहती है। मैं कल ही इनका इलाज कराती हूँ। नौकर से इन्हें दूर जंगल में छुड़वा दूँगी। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी। चल, चुपचाप बैठकर अपना लिखने का काम पूरा कर।''

माँ की डाँट–फटकार सुनकर अमिता सुबकने लगी। 'कल को झुमरी और उसके पिल्लों को दूर जंगल में छुड़वा दिया जाएगा।' यह सोच–सोचकर वह व्याकुल हो उठी। रोई और खूब रोई। रोते–रोते उसकी आँखें लाल हो गईं।

माँ खाना लाई तो उसने उसकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखा। खाना रखकर माँ रसोई में काम निपटाने चली गईं। एक घंटे बाद लौटीं तो खाना ज्यों–का–त्यों रखा पाया। अमिता सोई पड़ी थी।

माँ ने उसे आवाज दी। अमिता चुप। माँ ने उसे झिंझोड़ा। वह तिल भर भी न हिली। वह तो न जाने कब से बेहोश पड़ी थी। उसका शरीर गरम तवे की तरह तप रहा था। माँ की चीख निकल गई। अमिता के पिता जी पत्नी की चीख सुनकर दूसरे कमरे से दौड़े–दौड़े आए।

डॉक्टर को बुलाया गया। डॉक्टर ने लड़की की जाँच की। तेज बुखार था। उन्होंने एक सुई लगाई। थोड़ी देर बाद लड़की ने आँखें खोल दीं। तब डॉक्टर बोले, ''चिंता की कोई बात नहीं, अब यह ठीक है। इसे आराम करने दें।''

डॉक्टर चले गए। अमिता को शीघ्र ही फिर नींद आ गई। माँ को अभी तक नींद आई भी न थी कि अमिता नींद में बार–बार बड़बड़ाने लगी, ''माँ, पिल्ले 'कूँ–कूँ' बोल रहे हैं। इन्हें ठंड लग रही है। इन्हें मेरे पास लिहाफ में सुला दो, माँ।''

माँ ने बेटी को प्यार से थपथपाते हुए कहा, ''कुछ नहीं है बेटी। चुपचाप सो जाओ।''

कुछ समय बीता। माँ भी बेटी की पीठ थपथपाती हुई सो गईं। मुश्किल से दो घंटे सोईं होंगी, अचानक चौंककर उठ बैठीं। अमिता पलंग से गायब थी। एक जगह ढूँढ़ा। हर जगह ढूँढ़ा। अमिता वहाँ कहीं नहीं थी। खटपट सुनकर अमिता के पिता जी भी उठ बैठे। घर का कोना–कोना छान मारा, पर अमिता का कोई पता नहीं चला।

माता–पिता दोनों परेशान, लड़की कहाँ गई ? सोचा, पड़ोसियों को जगाएँ। पुलिस को सूचना दें। दोनों पति–पत्नी बाहर गली में आए और उन्होंने पड़ोसी रहमान साहब के मकान की घंटी का बटन दबाया। रहमान साहब अपनी ऊनी चादर कंधे पर डाले हुए दौड़े–दौड़े बाहर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आए। रहमान साहब को अमिता के माता–पिता ने अपनी परेशानी सुनाई, ''भाई साहब! अमिता शाम से बीमार थी, अब अचानक घर से गायब हो गई है।''

"यह तो बड़ी परेशानी की बात है। क्या तुम लोगों ने उसे डाँट तो नहीं दिया था ?" रहमान साहब ने पूछा।

पति–पत्नी दोनों में से कोई उत्तर न दे सका। अचानक रहमान साहब ने गली में दूर तक अपनी टार्च की रोशनी फेंकी। ऐसा लगा कि गली के दूसरे छोर पर कुछ है।

वहाँ पहुँचकर सबके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। गली में पड़ी हुई गीली मिट्टी से चिनकर वहाँ एक छोटा–सा घर बनाया गया था। पुराने अखबार फैलाकर छत बनाई गई थी। फर्श की जगह पुराने अखबारों की गड्डी फैलाकर गुदगुदा बिछौना बिछाया गया था। उस पर सुलाए गए थे पिल्ले और इस घर के बाहर ठंड में बैठी थी एक लड़की, जिसके शरीर पर एक भी ऊनी वस्त्र न था। वह इस नन्हे–से घरौंदे के बाहर बैठी पिल्लों को प्यार से निहार रही थी। वह अमिता थी।

शब्दार्थ

प्रयत्न	–	कोशिश
कड़ाके की	–	बहुत जोर की
जहमत मोल लेना	–	परेशानी उठाना
आगबबूला होना	–	बहुत अधिक क्रोधित होना
ज्यों–का–त्यों	–	जैसा था वैसा ही
निहारना	–	प्यार से देखना
घरौंदा	–	छोटा घर
खुशी का ठिकाना न रहना	–	बहुत खुश होना।

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 अमिता के मन में कौन–सा विचार घुमड़ता रहता था ?

प्रश्न 2 अमिता को तेज़ बुखार किस कारण से आ गया ?

प्रश्न 3 घरौंदा से तुम क्या समझते हो ?

प्रश्न 4 झुमरी के प्रति बच्चों का प्रेम जिन पंक्तियों से प्रकट होता हो, वे पंक्तियाँ लिखो।

प्रश्न 5 सोचो, विचारो और प्रश्नों के उत्तर लिखो।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

क. अमिता के मन में पिल्लों को ठंड से बचाने का भाव जागा। उसने उनके लिए घरौंदा बनाया। क्या तुम्हारे मन में भी कभी किसी पशु–पक्षी को राहत देने का भाव जागा है ? उस समय तुमने क्या किया ?

ख. अगर तुम अमिता की जगह होते तो पिल्लों की मदद कैसे करते/करती?

ग. झुमरी को खिलाने के लिए बच्चे अपने–अपने घर से रोटी छिपाकर लाते थे। क्या तुम इसे ठीक समझते हो? हाँ, तो क्यों ?

भाषातत्व और व्याकरण

समझो

- इस पाठ में एक वाक्य आया है– 'न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।' यह एक लोकोक्ति या कहावत है। इसका अर्थ है यदि कारण नहीं होगा तो कार्य भी नहीं होगा।

प्रश्न 1 क. इस लोकोक्ति का प्रयोग किसी अन्य प्रसंग में करो।

ख. एक अन्य लोकोक्ति सोचकर लिखो और इसका अपने वाक्य में प्रयोग करो।

प्रश्न 2 नीचे दिए गए मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करो।

क. ज्यों–का–त्यों　　ख. ठिकाना न रहना

ग. आगबबूला होना　　घ. कोना–कोना छान मारना।

- इस वाक्य को पढ़ो।

'बेचारा ठंड के मारे मर गया।' 'मारे' का अर्थ है 'कारण'। इस वाक्य का अर्थ है– 'बेचारा ठंड के कारण मर गया।'

प्रश्न 3 इसी प्रकार के दो नए वाक्य बनाओ, जिनमें 'मारे' शब्द का प्रयोग हुआ हो।

- गीता ने रमीला को साईकिल सिखाई।

बानो ने शबनम को किताब दी।

इन दोनों वाक्यों में 'ने' दो नामों को जोड़ने का काम कर रहा है– पहले वाक्य में 'ने' गीता और रमीला को तथा दूसरे वाक्य में बानो और शबनम को।

इसी तरह इन वाक्यों में 'को' दो शब्दों को जोड़ने का काम कर रहा है– पहले वाक्य में रमीला और साईकिल को, दूसरे वाक्य में शबनम और किताब को।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न 4 उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर 'ने' और 'को' का प्रयोग करते हुए दो–दो वाक्य लिखो। 'ने' और 'को' का प्रयोग एक ही वाक्य में हो ।

- इस पाठ में एक वाक्य – 'डॉक्टर को बुलाया गया।'– आया है। इस वाक्य में कर्ता छुपा है। हम कह सकते हैं – माता–पिता के द्वारा डॉक्टर को बुलाया गया। इसको सीधे रूप में लिख सकते हैं – पिता जी ने डॉक्टर को बुलाया।

प्रश्न 5 नीचे लिखे वाक्यों को किताब में दिये गये घटना क्रम में लिखो–

क. लड़की ने घरौंदा बनाया। ख. पुराने अख़बार फैलाकर छत बनाई।

ग. डॉक्टर ने लड़की की जाँच की। घ. रहमान साहब से पूछा।

रचना

- इस कहानी को अपनी भाषा में संक्षेप में लिखो।

4HPP95

गतिविधि

- फलालेन का मुलायम कपड़ा लो। उस पर पिल्ले की आकृति खींचो; मोटे गत्ते पर चिपकाओ और काटो; फिर उसके आँख, मुँह आदि बनाओ।

योग्यता–विस्तार

- छत्तीसगढ़ी बोली की कोई पाँच लोकोक्तियाँ खोजो और कक्षा में सुनाओ। उनका वाक्यों में प्रयोग करके अपने शिक्षक को सुनाओ।

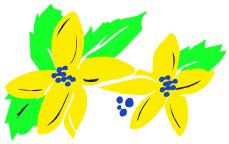

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ikB & 8

myV lkbZ

[ए पाठ ने सुतुर चो गोठ मन के उलटसाई कविता चो नाव ने तुलसीराम पानीग्राही हल्बी ने तियार करलासोत । नी बिचारून बुता करले काय नोकसान होयदे, एके गोटक उलटसाई ने सांगलोर आसे । दुसर उलटसाई ने धन पाउन गरब करतो लोगमन काजे सिख्या आसे कि धन पाउन गरब करतोर नुआय ।]

(1) बिन बिचारून करले बुता, पाछे पसतातोर आय ।
आपलो बुता के नसाउन, लोग ने हँसई होतोर आय ।
लोग ने हँसई होतोर आय, मन के नी लागे अछा ।
खातो–पिवतो, नाचा–डगा ने, मन रएदे काचा ।
उलटसाई कवि बलेसे, दुख नी अए सांगुन ।
बिचारून बुता करतोर आय, नी करा बिन बिचारून ।।

(2) धन पाउन नी करा, सपना ने बले गरब ।
लाख, करोड़ नाहले रोहो, तुमचो लगे अरब ।
तुमचो लगे अरब, धन चे काम नी अए ।
निको गोठ गोठयावा, जे सबय के भाए ।
उलटसाई कवि बलेसे, लोग जासोत इतराउन ।
गरब चो घर मेला आय, नी इतरावा धन पाउन ।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सब्दमन चो मायने; शब्दार्थ

उलटसाई	— पद के आरंभ में आने वाले शब्द/शब्दों की पद के अंत में पुनरावृत्ति करती हुई कविता, हिन्दी भाषा के कुण्डली छंद के समान, किन्तु मात्राओं का बंधन आवश्यक नहीं ।
पाछे	— पीछे
पसतातोर	— पछताना
बुता	— काम
नसाउन	— बिगाड़कर
हँसई होतोर	— हँसी का पात्र बनना
नाचा—डगा	— रास—रंग, मनोरंजन
सांगुन	— बताकर
गरब	— घमंड, अभिमान
गोठ	— बात
इतराउन	— इतराकर

iLu vkmj vH;kl

ck/k& iLu

• iMrk mokV & कक्छा चो पिलामन के दुय कुड़ा ने बाटुन गुरजी आगे लय ने उलटसाईमन के पड़ोत, पाछे दुनो कुड़ा चो पिलामन के लय ने पडुक बलोत आरू दुनो कुड़ा चो पिलामन के उलटसाई चो अरथ सांगुक बलोत । पाछे गुरजी सांगोत । गुरजी पिलामन के प्रस्न बले पुछोत ।

iLu (1) [kky fy[kyk iLueu pk mRrj fn;k l %&

(क) ए पाठ चो उलटसाई काय बोली ने लिखलासोत ?

(ख) नी बिचारून बुता करले काय होउ आय ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

iLu (2) fcpk:u mRrj fn;kI %&

(क) लोग हँसई ले बाचतो काजे काय करतोर आय ?

(ख) नाचा–डगा ने काय काजे मन नी लागे ?

(ग) 'सबे ठाने धन चे काम नी एए' ए गोठ के समझावा ?

(घ) कवि धन पाउन नी इतरातो काजे काय–काजे बलला ?

(ड़) बिन बिचारून बुता करले काय होएदे ?

iLu (3) [kky: fy[kyk /kkMheu pk vjFk@ek;u: fy[kk %&

(क) धन पाउन नी करा, सपना ने बले गरब।

लाख, करोड़ नाहले रोहो, तुमचो लगे अरब ।।

(ख) लोग ने हँसई होतोर आय, मन के नी लागे अछा ।

खातो–पिवतो, नाचा–डगा ने, मन रएदे काचा ।।

भासा–तत्व आउर ब्याकरन

€ खाले लिखलोर सब्दमन के धाड़ी ने प्रयोग करा :–

खातो–पिवतो, नाचा–डगा, गरब

€ समजा :–

हल्बी ने –

(1) लगे चो मनुक काजे बलुआत – ,pk]

(2) लाफी चो मनुक काजे बलुआत – gupk

(3) उलटसाई ने आग्याँ आरू सला देतो सब्द (आज्ञार्थ / इच्छार्थ शब्द) आत – गोठयावा, नी इतरावा आदि ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4IHCE3

पाठ 9 दीप जले

हर त्यौहार समाज में प्रेम और सहयोग की भावना का प्रसार करता है। दीपावली प्रकाश का त्यौहार है। यह बुराई पर अच्छाई की जीत का त्यौहार है। यह परस्पर प्रेम और सहयोग का संदेश देता हैं। ज्योति पर्व दीवाली के महत्व को इस कविता में पढ़ेंगे।

दीप जले, दीप जले
द्वार–द्वार दीप जले,
दीप जले गाँव–गाँव,
बगिया की छाँव–छाँव,
द्वारे पै, आँगन में,
धूम मची ठाँव–ठाँव,
आओ रे ! गाओ रे !
ढोलक पै नीम–तले,
दीप जले–दीप जले।
द्वार–द्वार दीप जले।।

नन्हे से दीप ये,
नेह के उजारे हैं।
मावस के चंदा हैं
राह के सहारे हैं।
रात के समुंदर में,
तारों की नाव चले,
दीप जले, दीप जले,
द्वार–द्वार दीप जले,

शिक्षण–संकेत : *यह कविता दीपावली के अवसर पर पढ़ाई जाए। दीपावली के आयोजन की कहानी सुनाइए। बच्चों को बताइए कि हजारों वर्षों की उसी परम्परा का पालन हमारा देश करता आ रहा है। यह पर्व आपसी प्रेम–भाव को बढ़ाने का है। हमें आपस के भेदभाव भुलाकर एक दूसरे से गले मिलना चाहिए। देश को सच्चा सुख तभी मिलेगा जब हर घर में उजियाला बिखरेगा। एक कविता की ये पंक्तियाँ सुनाइए और उन्हें याद कराइए–*

हम उजाला जगमगाना चाहते हैं,
हम अँधेरे को मिटाना चाहते हैं।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दानव की हार का,
मानव की जीत का।
दीपों का पर्व है,
जन–जन की प्रीति का।
भेदभाव भूलो रे !
आपस में मिलो गले,
दीप जले, दीप जले।
द्वार–द्वार दीप जले।।

शब्दार्थ

नेह	–	प्रेम	समुंदर	–	समुद्र
छाँव	–	छाया	ठाँव	–	जगह
पर्व	–	त्यौहार	मावस	–	अमावस्या
राह	–	रास्ता	नीम तले	–	नीम के पेड़ के नीचे
दानव	–	राक्षस	प्रीति	–	प्यार
उजारे	–	उजियारे, प्रकाश			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 तुम दिवाली में क्या – क्या करते हो ?

प्रश्न 2 दीवाली पर प्रकाश करने के लिए कौन–कौन–से साधन अपनाए जाते हैं?

प्रश्न 3 दीपक को कविता में 'मावस का चन्दा' क्यों कहा गया है?

प्रश्न 4 कविता में से वह पंक्ति लिखो जिसमें–

क. दीप को मार्ग दिखाने वाला बताया गया है।

ख. भेदभाव भूलकर परस्पर प्रेम से रहने का बोध कराया गया है।

ग. लोगों को मिलकर गाने–बजाने के लिए आमंत्रित किया गया है।

प्रश्न 5 नीचे दिए सकेतों के आधार पर इन खानों को भरो।

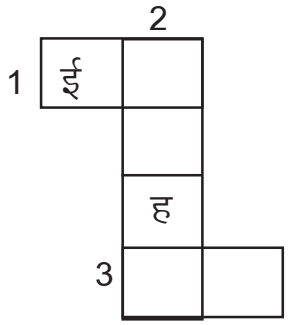

1. गले मिलने और सेवई खाने का त्यौहार ।

2. रावण दहन का त्यौहार ।

3. बहन अपने भाई की कलाई पर बाँधती है ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न 6 तुम और कौन – कौन से त्यौहार मनाते हो। उनके बारे में तालिका में लिखो ।

क्र.	त्यौहार का नाम	त्यौहार में कया – क्या करते हो ?
1.	.....	.....
2.	.....	.....
3.	.....	.....
4.	.....	.....
5.	.....	.....

भाषातत्व और व्याकरण

प्रश्न 1 निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी एक–एक अन्य शब्द लिखो।

दानव, मानव, राह, दीप, पर्व।

प्रश्न 2 'मानव' का विलोम शब्द है 'दानव'। इसी प्रकार नीचे दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखो–

रात, मावस, जलना, हार, प्रीति।

प्रश्न 3 नीचे कोष्ठक में कुछ शब्द दिए गए हैं। समान उच्चारण वाले शब्दों को अलग–अलग लिखो और उसके समान एक–एक शब्द याद करके लिखो।

(जीत, दीप, आज, तारा, नेह, सारा, सीप, काज, मीत, गेह, शीत, जीप, नाज, कारा, मेह)

रचना

- रोशनी करने के लिए तुम कौन – कौन सी चीजों का उपयोग करते हो ? उनके चित्र बनाओ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गतिविधि

- दीवाली पर दीप जलाए जाते हैं। सुबह ये दीप बेकार हो जाते हैं। कुछ दीपों को पानी में डाल दो। कुछ देर बाद इन्हें निकालो। किसी नुकीली वस्तु से इनमें छेद करके धागा डालो और तराजू बनाओ।
- रंग–बिरंगे, कई तरह के दीपावली के बधाई कार्ड बनाओ और अपने परिवारवालों और मित्रों को भेंट करो।

योग्यता–विस्तार

- अपने पसंद के त्यौहार के बारे में लिखो और उससे जुड़े चित्र बनाकर कक्षा की दीवार में लगाओ।

4IR8FQ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 10

संत रविदास

भारतीयों ने वर्ण–भेद को नकारते हुए संत–महात्माओं को सदा सम्मान दिया है। संत रविदास, जिन्हें आम जनता रैदास के नाम से पुकारती है, ऐसे ही संत थे। गुरु रामानन्द ने उन्हें शिष्य बनाया और रविदास ने कृष्ण के प्रेम में दीवानी राजघराने की महिला मीरा को अपनी शिष्या बनाया। उन्हीं संत रविदास का संक्षिप्त जीवन–परिचय इस पाठ में पढ़ें।

भारत के इतिहास में एक समय ऐसा था जब धर्म के नाम पर भारतवासियों पर बहुत अत्याचार हुए। उस समय के शासक निर्दोष जनता को लूटने और सताने को ही अपना कर्त्तव्य समझते थे। उच्च जाति माननेवाले लोग अपने से छोटी जाति को माननेवाले लोगों पर अत्याचार करते थे। दुखी लोगों की पुकार सुननेवाला कोई नहीं था। ऐसे समय में भारत में कई संतों और महात्माओं ने जन्म लिया। उनमें से एक थे– संत रविदास, जिन्हें संत रैदास भी कहते हैं।

संत रविदास का जन्म माघ पूर्णिमा संवत् 1433 को बनारस के समीप मँडवाडीह गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम मानदास और माता का करमा देवी था। इनके पूर्वज चमड़े का काम करते थे।

बचपन से ही बालक रविदास की रुचि साधु–महात्माओं के सत्संग में थी। जहाँ भी पूजा–पाठ अथवा हरिकीर्तन होता, वे वहीं पहुँच जाते। ऐसे समय वे प्रायः घर का काम–धाम भूल जाते। उनके ऐसे स्वभाव को देखकर उनके माता–पिता को चिंता हुई कि उनका बेटा कहीं बैरागी न हो जाए। इसलिए उन्होंने रविदास का विवाह कर दिया और यह कहकर– ''बेटा, कमाओ और खाओ,'' उन्हें घर से अलग कर दिया।

पत्नी लूणादेवी के साथ रविदास घास–फूस की झोपड़ी बनाकर रहने लगे। वे चमड़े का काम करते और उसी आय पर अपना जीवन निर्वाह करते। कुछ वर्षों के पश्चात् उनके यहाँ एक पुत्र–रत्न भी पैदा हुआ।

शिक्षण–संकेत : *कक्षा में कबीर, नानक, दादू, गुरु घासीदास आदि संतों की चर्चा कीजिए और संत रविदास के संबंध में संक्षेप में बताइए। एक अनुच्छेद का आदर्श वाचन कीजिए और बच्चों से अनुकरण वाचन कराइए। संत रविदास के संबंध में अतिरिक्त जानकारी लेकर कक्षा में बताइए। समाज में सब बराबर हैं, यह भी बताएँ। पाठ का एक–एक अनुच्छेद एक–एक समूह को देकर परस्पर चर्चा कराएँ। अन्त में पूरे पाठ पर चर्चा करें।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

विवाह–बंधन रविदास को ईश्वर–भक्ति से विमुख नहीं रख सका। साधु–सेवा, सत्संग तथा पूजा–पाठ निरंतर चलता रहा।

उन दिनों स्वामी रामानंद जी की भक्ति, ज्ञान तथा विद्वता की प्रसिद्धि पूरे भारत में फैली हुई थी। वे बनारस के ही रहनेवाले थे। प्रभु–भक्ति के प्यासे रविदास स्वामी जी के चरणों में पहुँच गए। शिष्य की अथाह भक्ति ने स्वामी जी का हृदय जीत लिया। रविदास स्वामी रामानंद के शिष्य बन गए। अब रविदास को अपना लक्ष्य प्राप्त करने का मार्ग मिल गया।

संत रविदास संत कबीर के गुरु भाई भी हो गए। दोनों जात–पात तथा ऊँच–नीच में विश्वास नहीं रखते थे। दोनों ने समाज के झूठे आडंबरों का विरोध किया। रविदास विनम्र और मधुर भाषी थे। यही कारण है कि समाज के बहुत–से लोगों ने उनके विचारों को बहुत ध्यान से सुना और उन्हें ग्रहण किया।

गुरु रविदास के शिष्यों तथा भक्तों की संख्या दिनों–दिन बढ़ने लगी। उनकी इस प्रसिद्धि को ऊँची जाति के लोग सह नहीं सके। वे काशी नरेश वीरदेव सिंह के दरबार में पहुँचे। उन्होंने रविदास की शिकायत की – ''महाराज, आपके राज्य में रविदास नाम का एक व्यक्ति है। वह अपने आपको बड़ा भक्त समझता है। वह लोगों को गुमराह कर रहा है। वह कहता है कि सभी लोग बराबर हैं। यदि ऐसे धर्म विरोधी व्यक्ति के कामों को न रोका गया तो समाज छिन्न–भिन्न हो जाएगा।''

राजा ने उन लोगों की बात शांतिपूर्वक सुनी और कहा – ''एक पक्ष की बात सुनकर ही निर्णय दे देना राजा का धर्म नहीं। मैं स्वयं संत जी से मिलूँगा और तभी कोई निर्णय करूँगा।''

दूसरे दिन काशी नरेश संत रविदास की कुटिया पर पहुँच गये। संत जी उन्हें देखकर चकित रह गए । उन्होंने आदरपूर्वक राजा से उनके आने का प्रयोजन पूछा।

राजा बोले – संत जी, मैं आपसे कुछ पूछने आया हूँ। क्या आप लोगों को यह शिक्षा दे रहे हैं कि समाज में कोई छोटा–बड़ा नहीं होता? क्या समाज में सभी बराबर हैं?

संत रविदास मुस्कराए और निर्भय होकर बोले –

''रविदास जन्म के कारणै, होत न कोऊ नीच।
नर कूँ नीच करति है, ओछे करम की कीच।।
जात–पात के फेर महिं, उरझि रहइ सब लोग।
मानवता कूँ खात है, रविदास जात का रोग।।''

काशी नरेश ध्यानमग्न होकर संत जी की वाणी सुन रहे थे।

संत जी ने बात जारी रखी – ''राजन्, जन्म और जाति से कर्म बड़ा है। जो कर्म से ऊँचा है, वही वास्तव में ऊँचा है। राजा भी वही महान है जो न्यायकारी है। अन्यायी राजा, यदि ऊँचे कुल का भी होगा, तो भी उसे हीन ही समझा जाएगा।''

काशी नरेश ने संत जी के चरण पकड़ लिए और विनय की– ''गुरु जी, इस प्राणी को भी स्वीकार कीजिए। मेरा भी उद्धार कीजिए।''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संत रविदास ने काशी नरेश का कल्याण तो किया ही, भारत के असंख्य लोगों को मानव–प्रेम और ईश्वर–भक्ति का पाठ भी पढ़ाया। उनकी प्रसिद्धि देश के कोने–कोने में फैल गई। चित्तौड़ के महाराणा साँगा सहित कई राजाओं ने उनकी शिक्षा को ग्रहण किया। कृष्ण–भक्ति की दीवानी मीराबाई ने तो उनसे दीक्षा भी ली थी। गुरु नानकदेव जी तो बात–बात में संत रविदास जी की वाणी का उल्लेख करते थे।

संत रविदास के जीवन की एक घटना का कई जगह उल्लेख हुआ है। कहते हैं कि कोई सिद्ध पुरुष उनकी कुटिया पर पहुँचे। संत जी का जीवन बहुत ही साधारण था। उन सिद्ध पुरुष को संत जी की आर्थिक स्थिति देखकर बहुत दुख हुआ। उन्होंने संत जी के अभावमय जीवन में परिवर्तन लाने के लिए उन्हें एक मणि देनी चाही। उसकी विशेषता बताते हुए सिद्ध पुरुष ने बताया, ''यह मणि अपने स्पर्श से लोहे की वस्तु को सोने की बना देगी। इससे आपकी दरिद्रता दूर हो जाएगी।''

संत रविदास ने कहा– ''महाराज! मुझे धन की कोई इच्छा नहीं। आप यह मणि अपने पास ही रखिए।''

सिद्ध पुरुष ने जब बहुत अधिक ज़ोर दिया तो संत रविदास ने कहा, ''महाराज! आप इतना आग्रह कर रहे हैं तो आप ही इसे झोपड़ी में कहीं रख दीजिए।''

सिद्ध पुरुष उस मणि को झोंपड़ी में, घास–फूस के बीच में, रखकर चले गए। एक वर्ष बाद वे फिर से संत रविदास से मिलने आए। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि रविदास की आर्थिक स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया। उन्होंने संत जी से पूछा– ''संत जी, मैं आपको मणि देकर गया था। उसका आपने क्या किया?''

संत रविदास बोले– ''महाराज! वह, जहाँ आप रख गए थे, वहीं देख लीजिए। वह वहीं होगी।''

सिद्ध पुरुष ने तलाश किया तो वह मणि उन्हें उसी जगह पर रखी मिली। उन्हें लगा कि यह व्यक्ति निर्लोभी है। इसे धन की कोई कामना नहीं।

संत रविदास उच्च कोटि के भक्त होने के साथ ही कबीर के समान एक उच्च कोटि के समाज–सुधारक भी थे। वे जाति–प्रथा के विरोधी थे। समाज में कोई छोटा, कोई बड़ा नहीं। सब समान हैं। वे हिंदू–मुसलमानों की एकता में विश्वास करते थे। उन्होंने लिखा है –

मंदिर मसजिद दोउ एक हैं, उन महँ अंतर नाहिं।
रविदास राम रहमान का, झगड़ा कोऊ नाहिं।।

उन्होंने हिंदू –मुसलमानों के बीच फैले द्वेष को मिटाने का प्रयत्न किया। हम उनकी महानता इसी बात से आँक सकते हैं कि मीराबाई जैसी कृष्ण–भक्ति में डूबी राजघराने की महिला ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। युगों–युगों तक गुरु रविदास की वाणी भूले–भटके लोगों को मानव–प्रेम का पाठ पढ़ाती रहेगी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ

शताब्दी	–	सौ वर्ष का समय	हीन	–	छोटा, नीच
निर्दोष	–	बिना दोष के	समीप	–	पास
पूर्वज	–	पुरखे	निर्वाह करना	–	निभाना, व्यतीत करना
सत्संग	–	अच्छे लोगों की संगति			
निरंतर	–	लगातार	उरझि	–	उलझना
आडंबर	–	दिखावा	वाणी	–	बोली
निर्भय	–	बिना डर के	पक्ष	–	गुट
डारि है	–	डालेगी	गुमराह करना	–	भटकाना
प्रयोजन	–	कारण	चकित होना	–	आश्चर्य में पड़ना
सभ	–	सब	ओछे	–	बुरे, नीच, छोटे
अत्याचार	–	बहुत बुरा व्यवहार करना			
अथाह	–	जिसकी थाह न ली जा सके।			
सर्वप्रियता	–	सबको समान मानकर प्यार करना			
छिन्न–भिन्न होना	–	अलग–थलग हो जाना, टुकड़े–टुकड़े हो जाना			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 संत रविदास का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

प्रश्न 2 संत रविदास के विचारों से सहमत अन्य संत–महात्माओं के नाम लिखो।

प्रश्न 3 काशी के लोग संत रविदास से क्यों नाराज थे ?

प्रश्न 4 संत रविदास ने जनता को क्या उपदेश दिए ?

प्रश्न 5 किस घटना से प्रभावित होकर काशी नरेश संत रविदास की शरण में गए ?

प्रश्न 6 किस घटना के कारण हम यह कह सकते हैं कि संत रविदास के मन में धन के प्रति कोई आकर्षण नहीं था?

प्रश्न 7 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के चार–चार विकल्पों में से सबसे सही विकल्प चुनकर लिखो।

अ. रविदास के माता–पिता चिंतित रहते थे –

(क) क्योंकि वे पढ़ते–लिखते नहीं थे।

(ख) क्योंकि वे साधु–संतों के पीछे लगे रहते थे।

(ग) क्योंकि वे बड़े हो गए थे, उन्हें उनका विवाह करना था।

(घ) क्योंकि वे हरिकीर्तन में घर का काम–धाम भूल जाते थे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ब. एक न्यायप्रिय राजा को किसी शिकायत पर निर्णय लेते समय –

(क) शिकायतकर्त्ता के पक्ष पर निर्णय देना चाहिए।

(ख) अपने मंत्रियों से जानकारी लेकर निर्णय देना चाहिए।

(ग) दोनों पक्षों की बात सुनकर निर्णय देना चाहिए।

(घ) मन की बात मानकर निर्णय देना चाहिए।

स. संत रविदास ने मणि का कोई उपयोग नहीं किया –

(क) क्योंकि वे मणि में विश्वास नहीं करते थे।

(ख) क्योंकि वे सिद्ध पुरुष में विश्वास नहीं करते थे।

(ग) क्योंकि धन के प्रति उनकी कोई कामना नहीं थी।

(घ) क्योंकि उनके गुरु ने ऐसा करने से मना किया था।

द. निम्नलिखित में से कौन–से दो कवि एक ही गुरु के शिष्य थे?

(क) रविदास और कबीर

(ख) रविदास और नानकदेव

(ग) रविदास और धर्मदास

(घ) रविदास और सूरदास

भाषातत्व और व्याकरण

- शिक्षक श्रुतलेख के रूप में निम्नलिखित शब्द बोलें और बच्चों को लिखने को कहें।

हरि–कीर्तन, घास–फूस, जात–पात, ऊँच–नीच, दिनों–दिन, मानव–प्रेम, समाज–सुधारक, भूले–भटके, आकर्षण, विश्वास, निर्लोभी, विश्वास।

प्रश्न 1 इन शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करके लिखो–

जात–पात, ऊँच–नीच, मानव–प्रेम, साधु–संत, भूले–भटके।

प्रश्न 2 निर् + दोष या निः+दोष मिलकर बना है 'निर्दोष'।

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों को तोड़कर लिखो –

निर्गुण, निर्भय, निर्मल, निर्दय।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न 3 निम्नलिखित शब्दों के जोड़ों में से सही शब्द चुनकर लिखो–

सत्संग / सत्संघ, निर्वाह / निग्राह, रवीदास / रविदास, चरन / चरण, गुरु / गुरू, रवि / रवी

प्रश्न 4 कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर खाली स्थान भरो।

क. भगवन्! इस पापी का ..... कीजिए। (उद्धार / उदार)

ख. संत रविदास की ..... पूरे भारत में फैली है। (प्रसिद्धि / प्रसिद्ध)

ग. लोग रविदास को बहुत बड़ा ..... समझते थे। (भक्त / भक्ति)

घ. राजा ने उन लोगों की बातें बड़ी ..... से सुनीं। (शांत / शांति)

प्रश्न 5 'व्यापार' शब्द में 'ई' की मात्रा (ी) लगने से बना है 'व्यापारी'। नीचे दिए गए शब्दों से इसी प्रकार नए शब्द बनाकर लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो।

व्यवसाय, मेहनत, मजदूर, कारीगर।

प्रश्न 6 निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा पहचानों और उनके प्रकार लिखो–

क. गुरू रविदास के शिष्यों और भक्तो की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी।

ख. चित्तौड़ के महाराणा साँगा तथा कई राजाओं ने उनकी शिक्षा को ग्रहण किया।

रचना

- संत रविदास की तरह ही किसी अन्य संत के बारे में पता लगाकर निम्न बिन्दुओं में लिखो–
  1. पूरा नाम।
  2. जन्म स्थान एवं तिथि।
  3. अभिभावक का नाम।
  4. उनके द्वारा किये गये उल्लेखनीय कार्य।

4J9ZJ1

योग्यता–विस्तार

- संत रविदास एक कवि भी थे। उनकी लिखी कविताएँ खोजो और उनका कक्षा में सस्वर वाचन करो।
- मीराबाई एवं कबीर दास की कविताओं को खोजकर उन्हें कक्षा में सुनाओ।
- कबीर, दादू, नानक आदि संत कवियों के चित्र संग्रह कर अपनी चित्रों की पुस्तिका में लगाओ।
- कैलेण्डर देखकर अन्य महापुरूषों की जयंतियों की सूची बनाओ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 11

जीत खेल भावना की

खेल में हार–जीत लगी रहती है। जीतने –हारने की दृष्टि से खेल नहीं खेलने चाहिए। खेल में अच्छा खेल खेलने की, मिल–जुलकर खेलने की भावना प्रमुख रहनी चाहिए। हारने पर न तो जीतनेवाली टीम से ईर्ष्या करने की भावना होनी चाहिए, न जीतने पर हारनेवाली टीम को नीचा दिखाने की भावना होनी चाहिए।

प्रधान अध्यापक जी के ऑफिस के आगे भीड़ लगी हुई थी। कुछ लड़कों ने सुरेश को इतना मारा था कि उसका सिर फूट गया था। सब इस बात को जानते थे कि यह काम महेश और उसके साथियों का है। सुरेश और महेश की दुश्मनी पूरे स्कूल में जाहिर थी। मगर बात इतनी बढ़ जाएगी, इसकी किसी को भी उम्मीद न थी। प्रधान अध्यापक जी के बहुत पूछने पर भी सुरेश ने महेश का नाम नहीं बताया।

प्रधान अध्यापक जी ने एक बार फिर पूछा, ''बताओ सुरेश, यह किसका काम है... उसे जरूर सजा दी जायगी।''

''नहीं सर, मेरा पैर सीढ़ियों से फिसल गया था। इसलिए चोट लग गई।''

मगर प्रधान अध्यापक जी को भनक लग गई थी कि वार्षिकोत्सव की तैयारी करते समय सुरेश और महेश में कुछ कहासुनी हो गई थी। हर बार सभी खेलों में सुरेश अव्वल आता, इस कारण महेश उससे ईर्ष्या करने लगा था। उसके कुछ साथियों ने उसके इतने कान भरे कि वह सुरेश को अपना दुश्मन समझने लगा था।

उसका नतीजा आज सबके सामने था। सुरेश को अस्पताल ले जाकर पट्टी करवा दी गई। साथ ही, सिर में कुछ टाँके भी लगे। फिर उसे घर भेज दिया गया।

दूसरे दिन हाल खचाखच भरा हुआ था क्योंकि प्रधान अध्यापक जी ने विशेष मीटिंग बुलाई थी। वातावरण एकदम शांत था।

प्रधान अध्यापक जी बोले, ''कल हमारे स्कूल में जो घटना हुई है, उससे मुझे गहरा आघात पहुँचा है। मुझे दुख है कि हमारे स्कूल की शिक्षा को कुछ छात्रों ने सही ढंग से ग्रहण नहीं किया।''

महेश और उसके साथियों के चेहरे पीले पड़ गए। उन्हें ऐसा महसूस हो रहा था मानो

शिक्षण–संकेत : *बच्चों से खेल के संबंध में चर्चा करें। उन्हें बताएँ कि खेल में हारना और जीतना लगा ही रहता है। खेल में खेल–भावना का महत्व है। इस कहानी का मुख्य उद्देश्य यही है। पहले एक अनुच्छेद का आदर्श वाचन करें और अनुकरण वाचन कराएँ। एक–एक विद्यार्थी से थोड़ा–थोड़ा अंश पढ़वाएँ। उच्चारण पर विशेष बल दें। कठिन शब्दों के अर्थ बताते जाएँ और उनका वाक्य प्रयोग विद्यार्थियों से कराएँ। कहानी का सारांश बच्चों से पूछें।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उनकी धमनियों में रक्त जम गया हो। महेश सोच रहा था कि कहीं ऐसा तो नहीं कि सुरेश ने उसका नाम प्रधान अध्यापक जी को बता दिया हो।

'हाय, अब क्या होगा ?' महेश सोच में पड़ गया। सुरेश को मारते वक्त वह इतना हिंसक हो गया, मानो उस पर शैतान सवार हो गया हो। उसने आगा देखा न पीछा, स्टिक से सुरेश के सिर पर कई वार किए। सुरेश जब लहूलुहान हो गया तो डरकर महेश व उसके दोस्त भाग गए।

तभी प्रधान अध्यापक जी की आवाज़ सुनकर महेश की तन्द्रा भंग हुई। वे कह रहे थे, ''मगर सुरेश ने मेरे बहुत पूछने पर भी उस छात्र का नाम नहीं बताया, जो उसे इस हालत में पहुँचाने का जिम्मेदार है। यदि वह छात्र अपनी गलती स्वीकार कर लेता है तो उसे कोई सजा नहीं दी जाएगी अन्यथा पता चलने पर उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।''

''हाँ, एक बात और,''प्रधान अध्यापक जी थोड़ा रुककर आगे बोले। ''इस बार वार्षिकोत्सव खेल रद्द किया जाता है। खेल अगर आपस में सहयोग, प्यार की भावना का संचार करने में असफल रहता है तो कोई फ़ायदा नहीं ऐसे आयोजनों का, जो आपस में ईर्ष्या और द्वेष की भावना को जन्म दें। खेल अगर खेल की भावना से खेला जाए तभी अच्छा है। अच्छा, अब आप सब जा सकते हैं।''

सभी छात्रों का उत्साह ठंडा पड़ गया।

उधर महेश के मन में उथल–पुथल मची हुई थी। वह ग्लानि के कारण स्वयं से भी नज़रें नहीं मिला पा रहा था। वह सोच रहा था कि सुरेश चाहता तो उसे सज़ा दिला सकता था। फिर उसने मन–ही–मन अपनी गलती स्वीकार की और प्रधान अध्यापक जी के पास जा पहुँचा।

''सर, मुझे माफ कर दीजिए। मैं ही सुरेश की इस हालत का जिम्मेदार हूँ ,'' कहते हुए महेश की आँखों से आँसू निकल पड़े।

''मैं जानता था कि तुम जरूर आओगे। तुम्हें गलती का अहसास हो गया, यही मैं चाहता था। तुम सुरेश से माफी माँगो, तुमने उसे गहरा आघात पहुँचाया है,'' प्रधान अध्यापक जी बोले।

''सर, एक विनती है आपसे,'' महेश आँसू पोंछते हुए बोला। ''आप वार्षिकोत्सव खेल रद्द न कीजिए। मैं वायदा करता हूँ कि हम खेल को खेल की भावना से ही खेलेंगे। उसे ईर्ष्या का कारण नहीं बनने देंगे।''

''ठीक है,'' प्रधान अध्यापक जी बोले।

नियत समय पर खेलोत्सव शुरू हुए। जैसा हमेशा होता आया था, सुरेश इस बार भी सभी प्रतियोगिताओं में विजयी रहा। सभी शिक्षकों के मन में आशंका थी कि कहीं फिर कोई हादसा न हो, मगर सबकी आशंका के विपरीत महेश आगे बढ़ा और सुरेश से बोला, ''बधाई हो सुरेश, वास्तव में मेहनत ही सफलता की हकदार होती है।''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

''तुम ऐसा क्यों सोचते हो,'' सुरेश बोला। अगली बार तुम्हें भी सफलता जरूर मिलेगी। मैं तुम्हें प्रैक्टिस कराऊँगा। बोलो स्वीकार है।''

महेश की आँखों में आँसू आ गए। बोला, ''क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे ?''

''क्यों नहीं ?''

सुरेश और महेश दोनों प्रधान अध्यापक जी के पास पहुँचे। प्रधान अध्यापक जी खुश थे कि उनका प्रयास बेकार नहीं गया।

शब्दार्थ

जाहिर	–	प्रकट	लहूलुहान	–	खून से लथपथ
उम्मीद	–	आशा करना	तन्द्रा	–	ध्यान
अव्वल	–	प्रथम, पहला	ईर्ष्या	–	जलन
ख़िलाफ	–	विरोधी, उल्टा, प्रतिकूल	आशंका	–	संदेह, शंका
आघात	–	चोट, मार	हकदार	–	अधिकारी होना, वारिस
ग्रहण	–	लेना, स्वीकार करना	प्रयास	–	प्रयत्न, कोशिश
स्टिक	–	हॉकी खेलने की छड़ी	हादसा	–	दुर्घटना
हिंसक	–	मारनेवाला, हिंसा करनेवाला	खचाखच	–	बिल्कुल जगह न होना
आयोजन	–	किसी कार्य का होना/करना			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 सुरेश ने महेश की शिकायत प्रधान अध्यापक जी से क्यों नहीं की ?

प्रश्न 2 प्रधान अध्यापक जी ने वार्षिकोत्सव रद्द करने की बात क्यों की ?

प्रश्न 3 महेश सुरेश से ईर्ष्या क्यों करता था ?

प्रश्न 4 प्रधान अध्यापक जी ने विशेष मीटिंग क्यों बुलाई थी ?

प्रश्न 5 महेश को आत्मग्लानि क्यों हुई ?

प्रश्न 6 क्या महेश ने सुरेश के साथ ठीक किया ? अगर तुम महेश की जगह होते तो क्या करते ?

प्रश्न 7 महेश और सुरेश में से तुमको कौन अच्छा लगा और क्यों ?

भाषातत्व और व्याकरण

- शिक्षक श्रुतलेख के लिए एक कहानी बोलें और बच्चे सुनकर लिखें। उसके बाद शिक्षक बारी – बारी से लिखी हुई कहानी पढ़कर सुनाने को कहें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न 1 निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो।

क. भनक लग जाना ख. कहासुनी हो जाना ग. आगा देखा न पीछा

घ. चेहरा पीला पड़ जाना ङ. कान भरना च. शैतान सवार होना

पढ़ो और समझो

महेश के मन में उथल–पुथल मची हुई थी।

महेश ग्लानि के कारण महेश से भी नजरें नहीं मिला रहा था।

महेश सोच रहा था कि सुरेश चाहता तो महेश को सजा दिला सकता था।

फिर महेश ने मन–ही–मन महेश की गलती स्वीकार की।

और महेश प्रधान अध्यापक जी के पास जा पहुँचा।

इस अनुच्छेद में 'महेश' शब्द का प्रयोग कई बार हुआ है जो पढ़ने में खटकता है। इसे निम्नलिखित प्रकार से भी लिखा जा सकता है:

महेश के मन में उथल–पुथल मची हुई थी।

वह ग्लानि के कारण स्वयं से भी नजरें नहीं मिला रहा था।

वह सोच रहा था कि सुरेश चाहता तो उसे सजा दिला सकता था।

फिर उसने मन ही मन अपनी गलती स्वीकार की।

और वह प्रधान अध्यापक जी के पास जा पहुँचा ।

इन पंक्तियों में 'महेश' के स्थान पर 'वह', 'स्वयं', 'उसे', 'उसने', 'अपनी', 'वह' शब्दों का प्रयोग हुआ है। **संज्ञा के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। 'वह', 'स्वयं', 'उसे', 'उसने', 'अपनी' सर्वनाम शब्द हैं।**

लोभी काका एक बार बीमार हो गया। खर्च के डर से लोभी काका वैद्य से औषधि भी नहीं खरीदना चाहता था। बैगा के पास जाने पर लोभी काका को एक नारियल लाने का हुकुम हुआ। नारियल खरीदने लोभी काका को लोभी काका के गाँव के दुकानदार के यहाँ जाना पड़ा।

प्रश्न 1 उपर्युक्त अवतरण को पढ़ो और रेखांकित के स्थानों पर उचित सर्वनामों का प्रयोग करते हुए अनुच्छेद को पुनः लिखो।

- एक वचन से बहुवचन बनाना–

क. यह आदमी गन्ना लाया था।

ख. यह आदमी गन्ने लाया था। या ये आदमी गन्ने लाए थे।

''क'' वाक्य को बहुवचन में परिवर्तित करके ''ख'' वाक्य बना है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न 2 नीचे लिखे वाक्यों को बहुवचन में परिवर्तित करके पुनः लिखो।

क. बकरी चना खा गई। ख. चरवाहा भैंस चराने गया।

ग. छात्र का उत्साह ठंडा पड़ गया। घ. लेखक ने कहानी लिखी।

- विशेषण–

क. महेश ताजे फल लाया।

ख. सुरेश पाँचवीं कक्षा में पढ़ता है।

ग. रेणु सुंदर लड़की है।

घ. रेखा ने थोड़ा पानी पिया।

ङ सलमा ने एक लीटर दूध माँगा।

इन वाक्यों में 'ताजे', 'पाँचवीं', 'सुंदर', 'थोड़ा', 'एक' क्रमशः फल, कक्षा, लड़की, पानी और दूध' की विशेषता बता रहे हैं। **संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, संख्या, मात्रा आदि बतानेवाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं।**

प्रश्न 3 अब निम्नलिखित विशेषण शब्दों का प्रयोग करते हुए खाली जगह भरो–

(दस, भारतीय, मीठे, छोटे)

क. रमेश.....मीटर कपड़ा लाया।

ख. राजेश के पास.....फल हैं।

ग. रवि ..... नागरिक है।

घ. राहुल ..... बच्चों को पढ़ाता है।

किसी को सम्मान देने के लिए हम उसके नाम के बाद 'जी' जोड़ देते हैं–जैसे गुरु जी, पिता जी। यह 'जी' शब्द–मूल शब्द से हटकर लिखा जाता है।

रचना

- खेल के आयोजन के साथ किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, उनकी सूची बनाओ।

गतिविधि

- कहानी को नाटक के रूप में तैयार करो और कक्षा में प्रस्तुत करो।
- क्लब बनाएँ –
  - तुम्हें अपने स्कूल में एक क्लब बनाना है, जो स्कूल में खेल – कूद के कार्यक्रमों की तैयारी करेगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

- इस क्लब में शामिल होने वालों की सूची बनाओ।
- इसे चलाने के बारे में नियम सोचकर लिखो।
- क्या इसे चलाने के लिए नियम जरूरी है या नहीं ? कारण भी बताओ।

योग्यता–विस्तार

- अपने प्रदेश में प्रचलित विभिन्न प्रसिद्ध खेलों और उनके खिलाड़ियों के बारे में जानकारी एकत्रित करो।
- समाचार पत्र में छपे किसी खेल समाचार की कटिंग कक्षा की दीवार पर चिपकाओ।

यह भी समझो

- विशेषण जिसकी विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं, जैसे–

  क. प्रधान अध्यक्ष पंत जी ने विशेष बैठक बुलाई थी।

  ख. नियत समय पर खेलोत्सव शुरू हुए।

- ऊपर के वाक्यों में –'विशेष बैठक' और 'नियत समय' शब्दों पर ध्यान दो। 'बैठक' की विशेषता 'विशेष' शब्द और 'समय' की विशेषता 'नियत समय' बना रहा है। –'बैठक' और 'समय' विशेष्य कहलाएँगे और 'विशेष' तथा 'नियत' विशेषण।

प्रश्न 5 इस पाठ में से विशेषण और विशेष्य के कोई चार जोड़े चुनकर लिखो।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4SSIGG

पाठ 12 कूकू और भूरी

जहाँ पर चार बर्तन होते हैं, वे टकराते ही हैं। यही बात हम सब पर भी लागू होती है। आपस में तकरार होना, मनमुटाव होना स्वाभाविक है। लेकिन इससे यह नहीं होना चाहिए कि हमारे मनमुटाव का लाभ तीसरा उठाए। अगर हमारे मनमुटाव का लाभ कोई अन्य उठाना चाहे तो हम उसका मुँहतोड़ ज़वाब दें। कूकू और भूरी ने यही किया।

दो मुर्गियाँ थीं– कूकू और भूरी। दोनों एक पुराने दड़बे में रहती थीं। दोनों को डींग मारने और शान बघारने का बहुत शौक था। आप सोचते होंगे कि कूकू और भूरी ज़्यादातर समय साथ–साथ बिताती थीं इसलिए शायद उनमें अच्छी दोस्ती होगी। परन्तु ऐसा बिल्कुल भी नहीं था। दोनों आपस में बहुत ही कम बातचीत करती थीं।

एक दिन कूकू ने डींग मारी, ''मेरे नए अंडे तो दुनिया में सबसे सुंदर हैं, एकदम रेशम की तरह चिकने हैं।''

भूरी भला कहाँ चुप रहनेवाली थी, ''नहीं, ऐसा नहीं है। मेरे अंडे सबसे ज्यादा खूबसूरत हैं। देखो न, वे मोतियों की तरह चमक रहे हैं।''

''मेरे अंडे कोरे कागज़ की तरह सफेद हैं,'' कूकू बोली।

शिक्षण–संकेत : *रोटी के टुकड़े के लिए झगड़ती हुई दो बिल्लियों के झगड़े का लाभ एक बन्दर ने उठाया। यह कहानी सुनाते हुए बच्चों को बताइए कि आपस में झगड़ा हो तो उसे आपस में ही सुलझा लें। अगर कोई तीसरा उससे लाभ उठाना चाहे तो उसे मुँहतोड़ जवाब दें। इतना बताकर अनुच्छेद का आदर्श वाचन करें और अनुकरण वाचन कराएँ। बच्चों को छोटे–छोटे समूह में बाँटकर उन्हें एक–एक अनुच्छेद को पढ़ने के लिए दें और उनसे उस अनुच्छेद पर चर्चा करें। अन्त में पूरे पाठ पर बच्चों से चर्चा करें।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

''मेरे अंडे एकदम दूध की तरह उजले हैं,'' भूरी ने जवाब दिया।

दोनों मुर्गियों के बीच नोंक–झोंक चलती रही।

''देखना, जब मेरे अंडों में से चूजे निकलेंगे तो वे भी मेरी तरह खूबसूरत होंगे,'' यह कहकर कूकू दड़बे के फर्श पर कूदी और धूप में इतराकर चलने लगी।

भूरी भला कहाँ चुप रहनेवाली थी। वह भी सूखी घास पर अपने पंख फैलाकर थिरकने लगी, ''मेरे चूजे कितने खूबसूरत होंगे!''

दोनों मुर्गियाँ अपनी खूबसूरती का बखान और गुणगान करने में इतनी व्यस्त थीं कि उनका दड़बे की खिड़की की ओर ध्यान ही नहीं गया।

खिड़की की दूसरी तरफ एक कुत्ता बैठा था। उसने दोनों मुर्गियों को शेखी मारते हुए सुना। वह वहीं रुक गया और मौके की तलाश करने लगा।

कुत्ते को जैसे ही मौका मिला वह मुर्गियों के दड़बे में कूद पड़ा। एक जोर का धमाका हुआ! दोनों मुर्गियों के घोंसले तहस–नहस हो गए और चारों तरफ सूखी घास उड़ने लगी।

जिस रास्ते कुत्ता आया था वह उसी रास्ते से चुपचाप हवा में गायब हो गया।

काफी देर बाद कूकू और भूरी को होश आया। सब कुछ पहले जैसा ही था। परंतु अपने घोसलों में पहुँचते ही मुर्गियाँ घबरा गईं।

''यह सब तुम्हारी गलती के कारण ही हुआ,'' दोनों मुर्गियाँ एक–दूसरे को दोष देने लगीं।

तभी उन मुर्गियों को पीछे से किसी चीज़ के लुढ़कने की आवाज़ सुनाई दी। कूकू और भूरी ने तुरंत मुड़कर देखा। उन्हें वहाँ एक अंडा पड़ा मिला।

कूकू और भूरी दोनों ज़ोर से चीखीं, ''यह अंडा मेरा है!''

उसके बाद दोनों में जमकर लड़ाई हुई। कूकू को कोई शक नहीं था। वह सोचती थी कि अंडा उसी का है। दूसरी ओर भूरी को भी पक्का विश्वास था कि वह अंडा उसी का है।

अंत में कूँकूँ करते दो कबूतरों ने उन्हें टोका।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

"अगर तुम दोनों ऐसा करोगी, तो यह इकलौता अंडा भी धीरे–धीरे ठंडा हो जाएगा। अगर तुम दोनों जल्दी नहीं करोगी तो यह अंडा भी बाहर पड़े–पड़े मर जाएगा और फिर झगड़ने के लिए कोई चूजा ही नहीं बचेगा। तुम दोनों चाहो तो इस चूजे को आपस में मिलकर पाल सकती हो।"

कूकू और भूरी दोनों ने एक–दूसरे को शक की निगाहों से देखा। "एक साथ मिलकर पालना! असंभव! यह कभी नहीं हो सकता।"

"चलो, मैं अंडे पर पहले बैठती हूँ," कूकू ने निर्णय लेते हुए कहा, "तुम अंडे को बाद में सेना।"

"नहीं, पहले मैं," भूरी ने कहा। "उसके बाद तुम बैठना।"

एक–दूसरे से सहयोग करना तो कूकू और भूरी ने कभी सीखा ही नहीं था। बस आपस में झगड़ा ही करती रहती थीं।

दोनों मुर्गियाँ दिन–रात एक–दूसरे से इस तरह लड़ते–लड़ते तंग आ गईं। उन्हें पता था कि वे एक–दूसरे के विचारों को बिल्कुल नहीं बदल पाएँगी। अंत में दोनों चुप होकर बैठ गईं।

दिन बीतते गए।

कभी–कभी कबूतर मुर्गियों के दड़बे के पास आकर रुकते और अंडे की प्रगति का हालचाल पूछते।

इधर कूकू और भूरी बिना हिले–डुले बैठी रहतीं। वे एक–दूसरे की पड़ोसी हैं, इसे भी मानने से इंकार करतीं।

इतने दिनों तक कुत्ता केवल एक चीज के बारे में सोचता रहा कि वह दड़बे में उस आखिरी अंडे को क्यों छोड़ आया। उसे बार–बार अंडे की याद सता रही थी। वह दड़बे में वापस जाकर उस अंडे को खाना चाहता था।

"दड़बे में पहुँचकर मैं उस अंडे के साथ–साथ उन दोनों मुर्गियों को भी हज़म करूँगा।" इस मंशा के साथ कुत्ता दड़बे की ओर बढ़ा।

इस बीच दोनों मुर्गियों के बीच में अनबन और बढ़ गई। अगर वे एक–दूसरे से बात करतीं तो उसका कारण होता शिकायत करना।

"गुनगुनाना बंद करो।"

"अपने पंजे हिलाना बंद करो।"

"थोड़ी दूर खिसको।"

दोनों गुस्से से तमतमा रही थीं।

तभी कहीं से एक मक्खी भिनभिनाती हुई दड़बे में घुस आई। मक्खी भिन–भिन करती और चारों ओर उड़ती। कभी वह कूकू की नाक पर बैठती और कभी भूरी की पीठ को गुदगुदाती। अंत

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

में मक्खी से दोनों मुर्गियाँ परेशान हो गईं।

तभी मक्खी कूकू की चोंच के पास उड़ती हुई आई।

भूरी मक्खी को पकड़ने के लिए उड़ी, परंतु वह मक्खी को पकड़ नहीं पाई।

भूरी, कूकू से जाकर धड़ाम से टकराई।

''देखो, इसने फिर से लड़ाई शुरू कर दी,'' कूकू चिल्लाई। कूकू तब ज़मीन पर कूदी और भूरी को पकड़कर खदेड़ने लगी।

कुत्ते को हमला बोलने का यही सही समय लगा।

ध–ड़ा–म करके कुत्ता खिड़की से कूदा।

पहले तो कूकू और भूरी एकदम सहम गईं। फिर वे दोनों हिम्मत बटोरकर कुत्ते का सामना करने के लिए आगे बढ़ीं।

''कुत्ते को रोको,'' कूकू चिल्लाई।

''उसे अंडे के पास मत जाने दो,'' भूरी गुर्राई।

फिर क्या था। कूकू कुत्ते की पीठ पर कूदी और भूरी सिर पर कूदी। दोनों लड़ाकू मुर्गियों ने कुत्ते को अपनी पैनी चोंचों से गोदा और अपने नुकीले पंजों से नोंचा। कुत्ता बहुत चीखा–चिल्लाया परंतु मुर्गियों ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। अंत में कुत्ता किसी तरह खिड़की से कूदकर अपनी जान बचाकर भागा।

लड़ते–लड़ते दोनों मुर्गियाँ थककर एकदम पस्त हो गईं थीं। वे भी सुस्ताने के लिए दड़बे में लेट गईं।

''हमारी जीत हुई,'' कूकू ने कहा, ''हमने कुत्ते की जमकर पिटाई की।''

भूरी ने कहा, ''क्या कोई कभी सोच भी सकता था कि हम दोनों इतनी बहादुर निकलेंगी?''

'यह लड़ाई एक मुर्गी के बस की नहीं थी,'' भूरी ने कहा।

जीवन में पहली बार कूकू ने भूरी की बात मानी, ''हम कितने भाग्यशाली हैं कि हम दोनों एक साथ थे,'' कूकू ने कहा।

''चुप! ज़रा सुनो, भूरी ने कहा।

नीचे अंडे में से हल्की–सी आवाज आ रही थी।

''हमारा अंडा!'' दोनों पहली बार मिलकर चिल्लाईं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

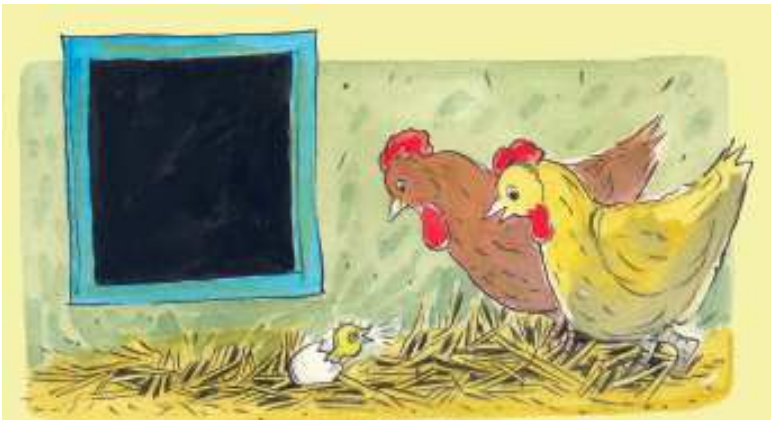

कूकू और भूरी दोनों घोंसले के पास आ गईं और उत्सुकता से अंडे को ताकने लगीं। पहले तो अंडे पर एक हल्की–सी दरार पड़ी। परंतु फिर बहुत देर तक कुछ भी नहीं हुआ। समय बीत ही नहीं रहा था। घंटे, दिनों जैसे लगने लगे। पर अंत में अंडा फूटा और उसके खोल में से एक नन्हा–सा, गीला–सा, एक हड्डीवाला चूजा बाहर निकला।

''कितना सुंदर है!'' कूकू के मन में चूजे को देखकर लड्डू फूटने लगे।

''सच में कितना खूबसूरत है!'' भूरी ने हामी भरते हुए कहा।

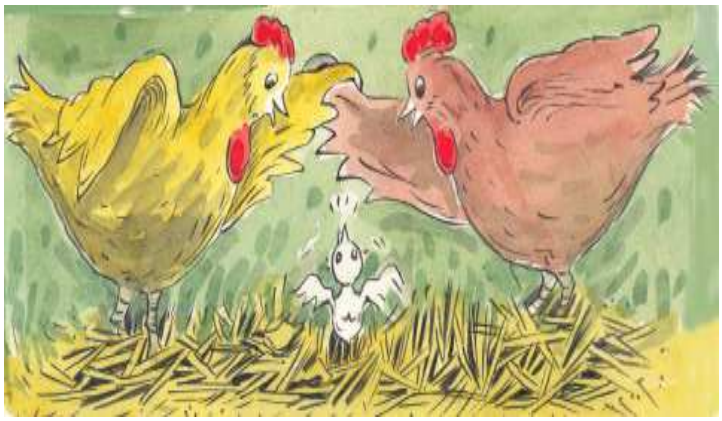

कूकू ने चूजे के पास से मुआयना करते हुए कहा, ''देखो भूरी, इस चूजे की चोंच तो बिल्कुल तुमसे मिलती है।''

''परंतु इसके पैर तो बिल्कुल तुम्हारे पैरों जैसे हैं, कूकू,'' भूरी ने कहा। छोटे–से चूजे ने दोनों मुर्गियों की आँखों में प्यार से झाँककर देखा।

''हमारा चूजा दुनिया में सबसे प्यारा है,'' कूकू और भूरी दोनों गाने लगीं।

दुनिया में शायद ही कोई ऐसा चूजा हो जिसे इतना प्यार और दुलार मिला हो।

''ऐसा चूजा जिसकी एक नहीं बल्कि दो माँ हों।''

इसका मतलब यह नहीं कि कूकू और भूरी की बाद में कभी लड़ाई नहीं हुई।

वे खूब लड़ती भी थीं परन्तु उनमें गहरी दोस्ती भी थी।

शब्दार्थ

खूबसूरत	–	सुन्दर	उजले	–	साफ,सफेद
थिरकना	–	नाचना	तहस–नहस करना	–	बर्बाद कर देना
नोक–झोंक	–	परस्पर की छेड़छाड़			
दड़बा	–	मुर्गी के रहने का स्थान			
डींग मारना	–	घमंड में आकर अपनी तारीफ करना			
शान बघारना	–	स्वयं की विशेषताओं को बताना			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 इस पाठ में एक कुत्ते का भी उल्लेख है। तुम उसको क्या नाम देना चाहोगे ?

प्रश्न 2 दोनों मुर्गियाँ किस प्रकार अपनी–अपनी प्रशंसा कर रही थीं ?

प्रश्न 3 कुत्ते को दड़बे पर आक्रमण करने का कब मौका मिला ?

प्रश्न 4 कबूतर ने मुर्गियों को क्या सलाह दी और क्यों दी ?

प्रश्न 5 दोनों मुर्गियों में अंत में कैसे दोस्ती हो गई ?

प्रश्न 6 कुत्ता यदि सभी अंडों को नष्ट कर देता तो क्या होता ?

प्रश्न 7 कूकू या भूरी यदि कुत्ते से अकेले मुकाबला करती तो क्या होता ?

भाषातत्त्व और व्याकरण

- श्रुतिलेख और शब्दार्थ की गतिविधि कराएँ।

प्रश्न 1 नीचे लिखे मुहावरों के अर्थ लिखो एवं वाक्यों में प्रयोग करो।

डींग मारना, शान बघारना, तहस–नहस कर देना, मन में लड्डू फूटना।

प्रश्न 2 ऐसे दो शब्द छाँटकर लिखो जिनकी मात्रा बदलने पर अर्थ बदल जाता है जैसे 'दिन' तथा 'दीन'।

प्रश्न 3 'ई' की मात्रा वाले पाँच स्त्रीलिंग शब्द लिखो।

प्रश्न 4 इस तालिका में चार–चार वर्णों से बने चार शब्द लिखे गए हैं। ये वर्ण एक निश्चित नियम से लिखे गए हैं। इनमें पशु है, एक पक्षी है, एक सब्जी है और एक फल है। सोचकर इनके नाम लिखो।

ख	क	क	सी	र	बू	ट	ता	गो	त	ह	फ	श	र	ल	ल

रचना

- इस चित्रकथा को पढ़कर इस पर एक एकांकी तैयार करो।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गतिविधि

- मुर्गियों के रहने का गत्ते का एक दड़बा तैयार करो।
- अंडे के छिलकों से जोकर का मुँह बनाओ।

योग्यता–विस्तार

- अलग–अलग जानवरों की आवाज स्वयं बोलो।
- भूरी और कूकू की तरह तुम और चित्रकथा ढूँढ़ो और अपने सहपाठियों के साथ बैठकर पढ़ो।

4T2EI4

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ikB & 13

fn;kjh frgkj

RFT5L8

[ए पाठ ने बस्तर चो दियारी तिहार कसन होउ आय, एचो रूसुम के लिखलोर आसे। ए तिहार ने खेतयार मनुक उबजन होलिसे बलुन तिहार मानु आत । तिहार दिने गाय–बयला–भँयसामन के खिचड़ी भात खोआउ आत। गोरधन भाटा ने काय–काय होउ आय, हुन जमाय रूसुम के सांगलोर आसे ।]

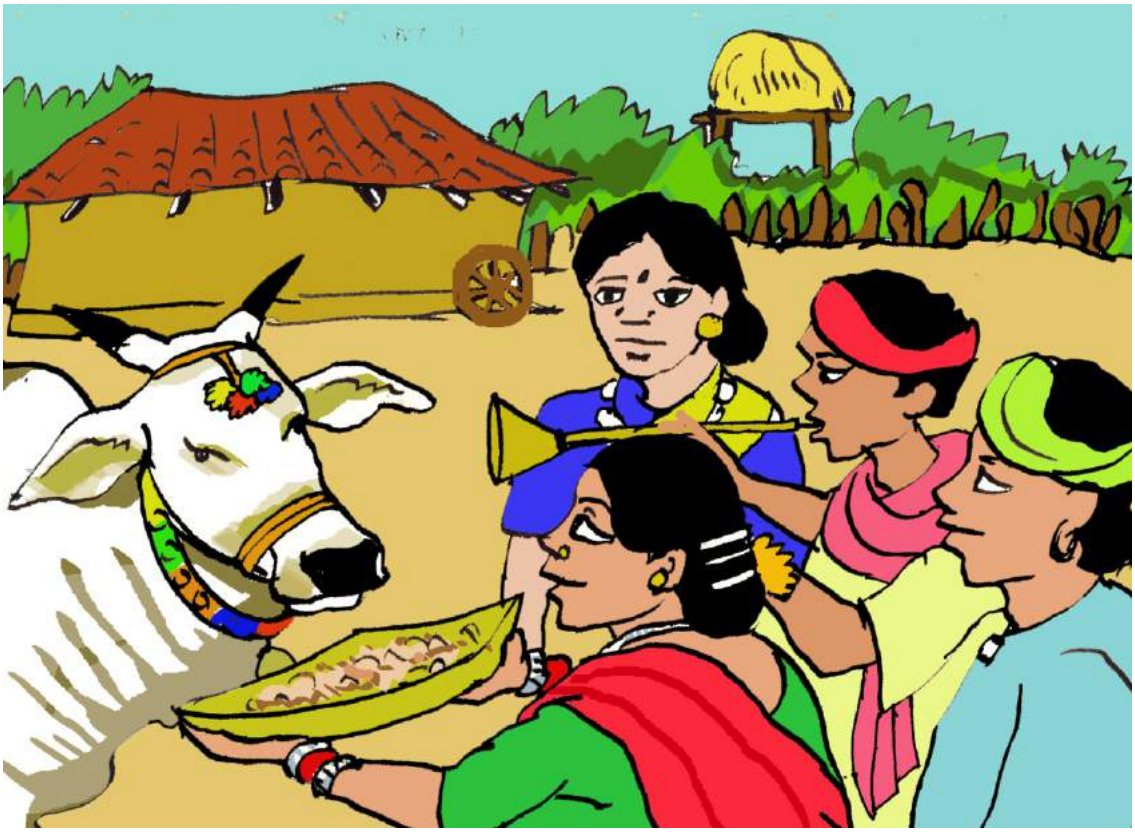

आमचो बस्तर चो लोग बारा–मयना काईं ना काईं उबज धरते रउ आत । उबज पाकुन तियार होले उपजन खातो पहिल आपलो देव–धामि के उबज चेगाउन तिहार मानु आत । बस्तर चो तिहार मन ने दियारी तिहार बले बड़े तिहार आय । ए तिहार धान चो उपज

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

के काटुन–मिण्डुन कोठार ले घरे आनले मुर होउ आय । भिने–भिने गाँव ने सुभ जोग दखुन भिने–भिने दिन दियारी मानु आत।

तिहार मुर होतोर दस–पंदरा दिन पहिल गाँव चो लोगमन कोनी मंजार खोरे नाहले गुड़ी ने रूंडुन गाँव गोसाइन माता के चरू देतो काजे सोर होउ आत । चरू देतोर रूसुम सरली बलले दियारी मानतो दिन सुभाउ आत ।

दियारी तिहार चो मुख–दलारी गाय–बयला चराउ धोरई होउ आय ।

दियारी तिहार चो एक दिन पहिल सांज बेरा धोरईमन गाँव चो मातागुड़ी ने बाजा–मोहरेया संगे गेठा डोरी, कासन ठेङ्गा आरू सेवा–जमक धरून अमरू आत । माटी पुजारी धोरई चो आनलो गेठा डोरी, कासन ठेङ्गा आरू सेवा–जमक के माता चो सिला लगे मंडाउन सेवा करू आय । जमाय गाँव चो लोग नंगन उपज होलिसे बलुन माता के सांगु आत । माता हरिक होउन सिला ले परसाद देउ आय । माटी पुजारी परसाद के जमाय लोग के बाटुन देउ आय आरू गेठा बांधतो काजे हुकुम करू आय। धोरईमन माता चो किरपा होली बलुन बाजा–मोहरेया संगे गेठा बांधुक निकरू आत । सबले पहिल पुजारी घरे गेठा बांधु आत । पाछे आपलो हिसाप ने गुलाय राति बुलुन–बुलुन घर–घर चो गाय बयलामन के गेठा बांधुआत । गेठा बांधले घर चो सवकार एक सुपा धान उपरे दिया धराउन धोरई के देउ आय । धोरई सवकार के पाँय पडुन धान के धरू आय । मरून–जिउन बाचलु बलुन धोरई आपलो बाट ले काईं बले जिनिस सवकार के खातो काजे देउ आय ।

दुसर दिने दियारी तिहार चो मुर होउ आय । गाँव चो मेहरार–लेकीमन घर के सरा–बड़ा करू आत । मनुकमन धान चो सेला, आमा पान संगे सियाड़ी डोरी ने घर चो दुआरे, धान ढोलंगी आरू देव बाखरा ने बांधु आत । एइ दिने कोठा चो दावाँ के धोउ आत आरू गाय–बयला, भईंस–भँयसा के नाहाउन घरे आनु आत । घर चो लोग धोरई चो दिलो गेठा–कासन के नुआ हाण्डि ने बांधुन खिचड़ी रांधु आत । धोरई हुन दिने हिसाप ले आपलो बाट ले मास–साग देउ आय ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मुंडे बेरा चेगती पाहार ने लोगमन आपलाहान पितर–देव–धामि के सेवा करू आत । मेहरार–बायलेमन कोठा ले धरून रांदा बाखरा आरू भीतिमन ने बाना–चिना बनाउ आत । गाय–बयला, भईंस–भँयसा, छेरी–मेण्डीमन के लाली टिकु आत आरू खिचड़ी भात खोआउ आत । खिचड़ी भात ने बोबो–मिठई बले रउ आय । पिलामन हरिक काजे बयला चो खिचड़ी टुकना ले झिकुन खिचड़ी भात खाउ आत । गाय–बयला खिचड़ी खादले टोण्ड धोआउन कोनी बांधतो बिता घरे बांधुन रउ आत नाहले कोठा ले ढिलुन देउ आत।

एचो पाछे घर चो जमाय लोग गोटोक बाखरा ने बसुन रांदलो भात–साग खाउ आत। एइ बतर ने धोरई फेर बाजा–मोहरेया संगे किरकिरते, नाचते–डगाते जुहारनी करू आय । जमाय लोगमन के पाँय पड़ते सांगु आय – ''राति बेरा बाजा नाचुक इया ।'' गुलाय राति लेका–लेकीमन गीत गाउ आत, नाचु आत, हरिक–उदिम करू आत ।

दियारी दिने सांजबेरा नाहले गाँव चो रूसुम हिसाप ने दुसर दिने गोरधन होउ आय। धोरई बाजा–मोहरी संगे गोरधन भाटा ने एतो काजे लोगमन के घरे–घरे जाउन नेवता देउ आय । लोगमन आपलाहान घर चो जुना बयला, नाहले मारखण्डया बयला के खिचड़ी खोआउन, घर चो पितर देव के सुमरून नवा कपड़ा के सिङ्गमन ने बांधुन गोरधन भाटा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नेउ आत । सिङ्ग ने बांधलो कपड़ा के सिङ्गबांधा बलु आत । फेर गाँव चो जमाय सिङ्गबांधा बयला गोरधन भाटा ने अमरला बलले गाँव चो माटी पुजारी गाँव चो देव–धामि के मान सेवा देउ आय । मान सेवा दिलोर पाछे धोरईमन पुजारी के पाँय पडुन किरकिरते बयलामन चो सिँङ्गबांधा कपड़ा ढिलुक मुरयाउ आत । कोनी–कोनी बयला बिचकुन घरे पराउ आत । घरे पराउन गेले घर चो सवकार धोरई के डांडु आय । धोरई सवकार के डांड सेवा देउन सिङ्गबांधा के निकराउ आय । धोरई चो निकरालो सिङ्गबांधा के सिङ्गटी बलु आत । सिङ्गटी के निकराउन धोरई गोरधन भाटा ने एउ आय । गोरधन भाटा ने धोरईमन आपलाहान पारा चो सिङ्गटीमन के बाछु आत । सिङ्गटीमन के बाछला बलले गाँव चो माटी पुजारी के खांदगुड़ी चेगाउन बाजा–मोहरी संगे नाचा–डगा करते घरे अमराउन देउ आत । पुजारी हरिक होउन धोरईमन संगे इलो लोगमन के सगा मान करू आय । एथा ले धोरई चो बरख पुरू आय आरू नवा बरख मुर होउ आय ।

असन आय आमचो बस्तर चो दियारी तिहार ।

सब्दमन चो मायने; शब्दार्थद्ध

तिहार – त्यौहार

रूंडुन – इकट्ठा होकर

बरख – वर्ष, साल

धोरई – चरवाहा

सांजबेरा – शाम का समय

मुंडेबेरा – दोपहर का समय

कोठार – वह स्थान, जहाँ किसान फसल काटकर लाने के बाद मिण्डाई द्वारा पुआल से अनाज अलग करता है

देव–बाखरा – वह कमरा, जहाँ देवी– देवता का सामान रखा

गोरधनभाटा – वह स्थान, जहाँ इकट्ठा होकर दियारी के दूसरे दिन गाँव के लोग अपने बैलों के सीङ्गों पर नये कपडे बांधकर ले जाते हैं

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गेठा–कासन – दियारी के त्यौहार के समय पालतू पशुओं को चरवाहा द्वारा बांधी जाने वाली माला

जुआरनी – भेंट करने की परंपरा

सिङ्गबांधा – दियारी के समय बैलों के सीङ्गों पर किसान द्वारा बांधा हुआ नया कपड़ा

सिङ्गटी – दियारी के समय बैलों के सीङ्गों से चरवाहा द्वारा निकाला हुआ कपड़ा/सिङ्गबांधा

iLu vkmj vH;kl

बोध–प्रस्न

कक्छा चो पिलामन के दुय कुड़ा ने बाटुन गुरजी प्रस्नमन पुछा–पुछी होतो काजे बलोत । पिलामन नी जानले गुरजी सांगोत । गुरजी असन प्रस्नमन पुछोत :–

(1) ए पाठ ने लिखलोर सिङ्गटी काय के बलु आत ?

(2) गेठा बांदुक जातो बेरा धोरई काय–काय धरून जाउ आय ?

iLu (1) [kky fy[kk iLueu pkmRrj fn;kl %&

(क) आमचो बस्तर ने दियारी तिहार केबे मानु आत ?

(ख) तिहार मुर करतो पहिल लोगमन काय–काय करू आत ?

(ग) धोरई काय–काय धरून गुडी ने जाउ आय ?

(घ) सबले पहिल धोरई काचो घरे गेठा बांधु आय ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

iLu (2) fcpk : u mRrj fn ;k l %&

(क) दियारी दिने मेहरार–लेकीमन काय करू आत ?

(ख) गोरधन भाटा ने काय–काय होउ आय ?

(ग) गोरधन भाटा ले धोरई काके अमराउन देउ आय ?

(घ) धोरई चे गेठा काय–काजे बांदु आय ?

भासा–तत्व आउर ब्याकरन

iLu (3) [kky fy[kyk lCneu d [kky pk okD ;eu pk eyk Bkueu u fy[ku okD ; lgh cukok %&

जुहारनी, परसाद, नवा हाण्डि, एक सुपा धान

(क) माता हरिक होउन सिला ले ..... देउ आय ।

(ख) गेठा बांदले घर बिता सवकार ..... देउ आय ।

(ग) कासन–गेठा के ..... ने बांदुन खिचड़ी रांदु आत ।

(घ) एइ बतर ने धोरई बाजा–मोहरेया संगे किरकिरते, नाचते .....करूक एउ आय ।

iLu (4) [kky fy[kyk lCneu pk i;kx d : u okD ;eu cukok %&

सिङ्गटी, गोरधन भाटा, पितर, गेठा, खांदगुड़ी, धोरई

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

iLu (5) [kky: fy[kyk lCneu pk lgh :i dk fl[kk%&

lgh :i		xyr :i
सिङ्गटी	–	सिंगटी
डेङ्ग	–	डेंग
नाङ्ग/नांग	–	नाँग
रान्दा/रांदा	–	राँदा

गुरजी पिलामन के बिस्तार ले सांगोत कि pn:fcUn अनुनासिक स्वर बलले नाक ले उच्चारन होतो स्वर काजे प्रयोग होउ आय आरू fcUn नासिक्य ब्यंजन बलले नाक ले उच्चारन होतो आधा ब्यंजन काजे । सिरोरेखा बिती मात्रा संगे बिन्दु चो प्रयोग नासिक्य ब्यंजन काजे नी होए । सिरोरेखा बिती मात्रा संगे चंद्रबिन्दु चो प्रयोग काजे चुचाय बिन्दु लगाउ आत । जसन :–'देहें' (देहेँ)ने बिन्दु, चंद्रबिन्दु चो पलटा इलिसे ।

योग्यता बिस्तार

€ गुरजी पाठ चो दस धाड़ी इमला लिखाओत आरू अलटुन–पलटुन लेका–लेकीमन के जाँचुक बलोत । नी जानले आपन सायता करोत ।

€ ए पाठ ने सांगलो असन बस्तर चो आउर तिहार मन चो बारे ने लिखुन आना ।

RG31MV

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 14 ऊर्जा की बचत

लकड़ी, तेल, कोयला, पेट्रोल आदि ऊर्जा के स्रोत हैं। धीरे–धीरे इनके भंडार कम हो रहे हैं। बिजली भी ऊर्जा का स्रोत है। इसकी माँग बढ़ रही है, उत्पादन उतना नहीं हो रहा। इसलिए वैज्ञानिक ऊर्जा के नए स्रोत खोज रहे हैं और उसकी बचत के उपाय बता रहे हैं।

जाड़े के दिन थे। मीनू अपने आँगन में रस्सी कूद रही थी– एक, दो, तीन, चार .. पच्चीस तक आते–आते थककर हाँफने लगी। उसकी माँ सोलर कुकर में दाल, चावल, आलू रख रही थीं। इतने में मीनू की सहेली रजिया आई और बोली, ''मौसी, ये क्या कर रही हो ? इस बक्से में आप क्या रख रही हैं ?

मौसी कुछ जवाब देतीं इसी बीच मीनू ने हँसते हुए कहा, ''अरी मूर्ख, यह बक्सा नहीं है, सोलर कुकर है।''

''सोलर कुकर! मौसी यह क्या होता है ? यह किस काम आता है?'' अब मौसी बोलीं–''बेटी! इसे सोलर कुकर कहते हैं। सोलर का अर्थ है सूर्य का और कुकर का अर्थ है खाना बनाने का यंत्र। सोलर कुकर का अर्थ हुआ– वह यंत्र जिसमें सूर्य की ऊर्जा से खाना पकता है।''

''मौसी, हमें सोलर कुकर की आवश्यकता क्यों पड़ी ? खाना तो हम चूल्हे पर, स्टोव पर और गैस पर ही बनाते हैं।''

मौसी बोलीं, ''यह तो तू जानती है हमारे देश की जनसंख्या दिन दूनी, रात चौगुनी बढ़ती जा रही है। ऊर्जा के जो स्रोत हैं– लकड़ी, तेल, गैस आदि –वे धीरे–धीरे कम होते जा रहे हैं। इसलिए नए स्रोतों को खोजा जा रहा है। सूर्य से हमें बहुत ऊर्जा मिल सकती है। इसलिए वैज्ञानिकों ने यह नया यंत्र बनाया है– सोलर कुकर। इसमें खाना पकाया जाता है। इसमें खाना बहुत स्वादिष्ट पकता है।''

''मौसी, इसमें काले–काले डिब्बे रखे हैं, भीतर आइना लगा है। यह किसलिए?''

''हाँ, देख इसके ढक्कन में अंदर की तरफ बड़ा–सा आइना लगा है। उसके बाद यह एक पारदर्शी काँच की पट्टी है। बक्से के अंदर खाना रखने के लिए काले–काले डिब्बे हैं। बक्से के ढक्कन को खोलकर धूप की तरफ रखते हैं। सूरज की किरणें आइने से टकराकर अंदर वाले काँच पर सीधी पड़ती हैं। इसकी गर्मी से ही डिब्बों में रखा खाना पकता है।''

''मौसी, खाना तो गैस चूल्हे पर भी पक जाता है– फिर सोलर कुकर पर क्यों पकाया जाए।''

शिक्षण–संकेत : *पाठ प्रारंभ करने के पूर्व ऊर्जा पर चर्चा कीजिए। ऊर्जा के स्रोत पूछिए और बताइए। इनका महत्व भी बताइए। यह भी बताइए कि ऊर्जा के भंडार समाप्त होते जा रहे हैं। उनकी बचत करने के उपायों पर भी चर्चा करें। कक्षा को छोटे–छोटे समूहों में बाँट दें और उन्हें एक–एक अनुच्छेद पढ़ने और चर्चा करने को दें। फिर आदर्श वाचन करें और बच्चों से पढ़वाएँ। पढ़ने के साथ–साथ कठिन शब्दों का अर्थ बताते जाएँ और बच्चों से वाक्य प्रयोग कराते जाएँ।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मौसी ने बताया, ''तू ठीक कहती है। खाना तो चूल्हे पर लकड़ी जलाकर, मिट्टी के तेल से जलनेवाले स्टोव पर या गैस के चूल्हे पर भी बनता है। लेकिन इन साधनों से खाना बनाने में जितनी ऊर्जा खर्च होती है, उससे बहुत कम ऊर्जा इस सोलर कुकर में लगती है। इससे सबसे बड़ा लाभ यह है कि हमें लकड़ी जलाने या मिट्टी का तेल जलाने या गैस जलाने पर जो खर्च होता है, सोलर कुकर पर ऐसा कोई धन खर्च करना नहीं पड़ता।''

''मौसी, लकड़ी या मिट्टी के तेल को बचाने का सवाल नहीं है। कभी बिजली की कमी हो जाती है, कभी पेट्रोल की कमी हो जाती है। इनको बचाने के भी उपाय होने चाहिए।''

''तू ठीक कहती है, बेटी! वैज्ञानिक दिन–रात इनको अधिक–से–अधिक बचाने के उपाय सोच रहे हैं। तूने वायु–ऊर्जा के संबंध में सुना होगा। वायु से बिजली पैदा की जा रही है। पवन–चक्कियाँ बनाई जा रही हैं, जो हवा की ऊर्जा से चलती हैं। पहाड़ों पर पानी की धार से बिजली पैदा की जाती है और उससे आटा–चक्कियाँ चलती हैं। अपने राज्य के गाँवों में गोबर गैस से बहुत ऊर्जा पैदा की जाती है, जो तरह–तरह से हमारे काम आती है।''

''मौसी, वैज्ञानिक तो ऊर्जा के नए–नए स्रोत खोज रहे हैं। हम लोगों को भी कुछ काम करना चाहिए।''

''बेटी! तूने बहुत अच्छी बात कही। अगर हर आदमी ऐसा सोचे तो हमारी सारी समस्याएँ दूर हो जाएँ। बिजली की बचत के लिए हम आसानी से यह कर सकते हैं कि जब प्रकाश या हवा की जरूरत न हो तो बिजली के बल्ब, ट्यूबलाइट, पंखे न चलाए जाएँ। बल्ब जलाने में अधिक मात्रा में बिजली खर्च होती है। उनके स्थान पर ऐसी ट्यूब लाइट या बल्ब जलाएँ जिनमें बिजली कम खर्च हो। विवाह–शादी, जन्म–दिन आदि अवसरों पर अधिक तड़क–भड़क न करें। इसी प्रकार नल से जितना पानी जरूरी हो, उतना ही लें। फालतू पानी न बहने दें। मोटर साइकिल, स्कूटर, कार का कम–से–कम उपयोग करें। हर चीज़ की बचत करना हमारी आदत बन जाए तो हमारी सारी समस्याएँ दूर हो जाएँ।''

''मौसी! मैं तो मीनू के साथ बैठकर होमवर्क करने आई थी। आपने इतनी अच्छी बातें बताई। मैं भी ये बातें अपनी सहेलियों को बताऊँगी। मीनू, अब चल, थोड़ा पर्यावरण अध्ययन पढ़ लें।''

शब्दार्थ

ऊर्जा	–	शक्ति	स्वादिष्ट	–	अच्छा स्वाद देनेवाला
यंत्र	–	मशीन	आइना	–	दर्पण

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 सोलर कुकर का वर्णन करो।

प्रश्न 2 सोलर कुकर से क्या–क्या लाभ हैं ?

प्रश्न 3 पेट्रोल की बचत हम कैसे कर सकते हैं ?

प्रश्न 4 बिजली की बचत किस प्रकार की जा सकती है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भाषा–तत्त्व और व्याकरण

- शिक्षक बच्चों से किसी एक अनुच्छेद का श्रुतिलेख लिखवाएँ।

प्रश्न 1 नीचे दिए गए शब्दों/वाक्यांशों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

अधिक–से–अधिक, नए–नए, तरह–तरह।

प्रश्न 2 निम्नलिखित वाक्यों को अलग–अलग प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग कर बदलो।

क. हम लोगों को भी कुछ काम करना चाहिए।

ख. वैज्ञानिक ऊर्जा के नए स्रोत खोज रहे हैं।

ग. ऊर्जा की बचत के लिए उपाय होने चाहिए।

प्रश्न 3 'इक' लगाकर नए शब्द बनाओ, जैसे–

समाज + इक – सामाजिक

धर्म + इक – ————— , परिवार + इक – ——————

साहित्य + इक – ————— , अर्थ + इक – ——————

समझो

- आवश्यक में 'ता' जोड़कर बना है 'आवश्यकता'।

प्रश्न 4 स्वच्छ, नम्र, पवित्र शब्दों में 'ता' जोड़ो और नए शब्द बनाकर उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

प्रश्न 5 इन शब्दों के विलोम शब्द लिखो।

अधिक, ठीक, सीधी, उपयोग, बनाना, अर्थ ।

रचना

- पानी को बचाने के कोई दस उपाय लिखो।

4U3XPP

योग्यता–विस्तार

- यदि तुम्हारे आसपास गोबर गैस से चलनेवाला कोई यंत्र हो तो उसके संबंध में विस्तार से जानकारी लो।
- अपने घर में या आसपास के घरों में जाकर पता करो कि लकड़ी के चूल्हे में खाना बनाने में किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है।
- शिक्षक की मदद से आसपास की चीजों से सोलर कुकर का मॉडल बनाओ।

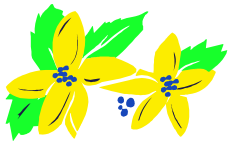

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 15

चूड़ीवाला

यह सोचना बिल्कुल गलत है कि छोटे लोगों का ईमान मूल्यवान वस्तुओं पर डिग जाता है। इस कहानी में एक छोटी बालिका ने अपने पिता के चोरी करने के कारनामे को बताकर यह सिद्ध कर दिया है कि छोटे लोग भी बहुत ईमानदार होते हैं।

मैं अपनी गुड़िया से खेल रही थी कि बाहर से किसी ने लंबी हाँक लगाई, 'चूड़ियाँ ले लो, चूड़ियाँ। फिर किसी ने कहा, ''अरे नन्हीं, बाहर आकर देखो तो। तुम्हारे लिए चूड़ियाँ लाया हूँ।''

मैं भागी–भागी बाहर गई तो देखा कि चूड़ीवाला सिर पर चूड़ियों की टोकरी रखे खड़ा है। उसने मुझे देखकर कहा, ''आओ नन्हीं, कुछ चूड़ियाँ खरीद लो।''

मैं बोली, ''मुझे चूड़ियाँ खरीदनी तो थीं, मगर खरीद नहीं सकती क्योंकि माँ बाहर गई हैं। पैसे कौन देगा ?''

''कोई बात नहीं। आओ, आकर चुन तो लो। मैं पैसे किसी और दिन आकर ले जाऊँगा।''

मैं थोड़ी देर सोचती रही। चूड़ीवाले ने मुस्कराकर पूछा, ''बिटिया, तुम्हें कौन–से रंग की चूड़ियाँ सबसे ज्यादा पसंद हैं ?''

'' नारंगी,'' मैंने उत्तर दिया और चूड़ियाँ भी चुन लीं। चूड़ीवाले ने वे छह चूड़ियाँ मुझे पहना दीं। तब तक माँ भी आ गईं और उन्होंने चूड़ीवाले को पैसे दे दिए।

कुछ दिनों बाद चाचा मेरे लिए एक सुन्दर–सी, बोलनेवाली गुड़िया ले आए। उसे पाकर मैं तो पुलकित हो उठी।

मैंने माँ से कहा, ''अम्मा, मैं अपनी गुड़िया के लिए भी चूड़ियाँ खरीदूँगी।''

माँ ने कहा, ''बेटी, जरूर लेना। चूड़ीवाले को आने दो।''

एक दिन गली में ''चूड़ियाँ ले लो, आओ लड़कियो, चूड़ियाँ ले लो,'' की आवाज़ सुनाई पड़ी। मैं अपनी गुड़िया को साथ लेकर, लपककर नीचे उतरी। मैंने चूड़ीवाले को बुलाया। वह चूड़ियों की टोकरी के साथ बरामदे में आकर बैठ गया।

उसने पूछा, ''अब कौन–सी चूड़ियाँ चाहिए ?''

मैंने उसे अपनी गुड़िया दिखाकर कहा, ''मेरी गुड़िया के लिए अच्छी–सी चूड़ियाँ दे दो।''

चूड़ीवाले ने हँसकर कहा, ''हाँ, हाँ! क्या यह तुम्हारी बिटिया है ?''

शिक्षण–संकेत : *बच्चों से फेरीवालों के संबंध में चर्चा करें। इनसे तुमको क्या लाभ होता है– पूछें और बताएँ। चूड़ियों के संबंध में भी चर्चा करें। पाठ का सारांश बता दें और छोटे–छोटे समूह में पाठ बाँट दें। बच्चे समूह में अनुच्छेद पढ़कर चर्चा करें। अपने–अपने समूह का सारांश कहलवाएँ। बाद में पाठ का वाचन करें और अनुकरण वाचन कराएँ। विद्यार्थियों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। ड और ड़ के उच्चारण को स्पष्ट करें।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

"हाँ!"

उसने मेरी गुड़िया के लिए लाल चूड़ियाँ चुनकर निकालीं। फिर मेरी गुड़िया को देखकर बोला, "बड़ी सुन्दर है गुड़िया तुम्हारी; बहुत महँगी होगी।"

"हाँ, बहुत कीमती है।"

"मेरी बेटी को भी ऐसी गुड़िया पसंद आएगी।"

"तुम्हारी बेटी भी है क्या ?"

"हाँ, तुम्हारी ही उम्र की होगी।"

"क्या उसके पास गुड़िया नहीं है ?"

"नहीं, हम गरीब आदमी हैं। ऐसी गुड़िया कहाँ से खरीदेंगे ?"

"चिंता मत करो। मैं चाचा से कहकर एक गुड़िया और मँगवा दूँगी। चूड़ियों के कितने पैसे देने हैं ?"

"पचास पैसे।"

"जरा मेरी गुड़िया का ध्यान रखना, मैं पैसे लाती हूँ।"

मैं लपककर ऊपर माँ के पास पैसे लेने गई लेकिन जब वापस नीचे पहुँची तो चूड़ीवाला जा चुका था और मेरी गुड़िया भी गायब थी।

"मेरी गुड़िया, मेरी गुड़िया....." मैं रोती हुई माँ के पास पहुँची।

"माँ, चूड़ीवाला मेरी गुड़िया ले गया। मेरी नई गुड़िया।"

"चूड़ीवाला! तुमने उसे गुड़िया क्यों दी ?" माँ ने कहा और वे भागकर चूड़ीवाले को देखने बाहर निकलीं।

मैं रो रही थी।

मेरी माँ ने मुझे चुप किया और पड़ोसियों को भी सतर्क रहने के लिए कहा।

उस रात मैं रोती–रोती सोई। अगली सुबह मैं जल्दी ही उठ खड़ी हुई और खिड़की के पास बैठ गई। तभी मैंने देखा कि एक आदमी चादर ओढ़े हमारे घर की ओर आ रहा है। उसके साथ एक छोटी लड़की भी थी। मैं उस आदमी का चेहरा नहीं देख पा रही थी।

हमारे घर के सामने आकर वह आदमी रुक गया। उस आदमी ने लड़की को एक पैकेट दिया और कुछ कहा।वह लड़की पैकेट पकड़े हुए हमारे फाटक के निकट आई। उसकी फ्राक गन्दी और फटी हुई थी।

मैं उसे फाटक के पास खड़े देख नीचे उतरी। मैंने लड़की से पूछा, "तुम कौन हो ? क्या चाहिए ?" वह कुछ देर देखती रही, फिर उसने पूछा "तुम्हारी अम्मा कहाँ हैं ?"

"ऊपर हैं।"

लड़की ने सावधानी से पैकेट खोला। उसमें मेरी गुड़िया थी।

"अरे , यह तो मेरी गुड़िया है। तुम्हें कहाँ मिली ?"

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वह ऐसे बोली, जैसे उसने मेरा प्रश्न सुना ही न हो। ''तुम अपनी गुड़िया ले लो। ये जो फाटक के पास खड़े हैं, मेरे पिता जी हैं। वे चूड़ियाँ बेचते हैं। जब वे मेरे लिए यह गुड़िया ले गए तो मुझे आश्चर्य हुआ कि वे इतनी कीमती गुड़िया कहाँ से लाए।'' कुछ देर रुककर उसने फिर कहना शुरू किया, ''हम गरीब हैं। ऐसी गुड़िया के बारे में मैं सपने में भी नहीं सोच सकती थी।''

मैं कुछ बोल न सकी। तभी चूड़ीवाला भी आगे आ गया। उसने चेहरे से चादर हटाई और धीमे स्वर में कहा, ''नन्हीं, अपनी गुड़िया ले लो। मैं इसे अपनी बेटी के लिए ले गया था। जब इसने सुना कि मैंने गुड़िया चोरी की है तो इसने इसे लेने से इंकार कर दिया।''

मैंने अपनी गुड़िया उठाई और गले से लगा ली और कहा –

''मुन्नी! धन्यवाद। मैं तुम्हें सदा याद रखूँगी।''

इतने में मेरी अम्मा फुर्ती से नीचे उतर आईं। जब उन्होंने पूरी कहानी सुनी तो वे बोलीं, ''चूड़ीवाले, ये पैसे लो। जाकर अपनी बेटी को गुड़िया खरीद देना।''

जैसे ही वे फाटक से बाहर निकले, मुन्नी मुड़कर मुस्कराई। मैंने हाथ हिलाया और उसने भी इसका उत्तर हाथ हिलाकर दिया।

शब्दार्थ

परिचित	–	जाना–पहचाना	सँभलकर	–	सावधानीपूर्वक
फाटक	–	बड़ा दरवाजा	सतर्क	–	सावधान
आश्चर्य	–	हैरानी, अचंभा			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 नन्हीं की गुड़िया कौन ले गया और क्यों ?

प्रश्न 2 नन्हीं की माँ ने पड़ोसियों को चूड़ीवाले से सावधान रहने के लिए क्यों कहा ?

प्रश्न 3 चूड़ीवाले की बच्ची ने नन्हीं की गुड़िया क्यों लौटा दी ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न 4 तुम्हारी कोई प्रिय चीज खो जाने या नष्ट हो जाने पर तुम्हें कैसा लगता है ?

प्रश्न 5 चूड़ियाँ किस–किस पदार्थ से बनती हैं ?

प्रश्न 6 चूड़ीवाला अपना मुँह ढँककर क्यों आया था ?

प्रश्न 7 नन्हीं और मुन्नी दोनों में से तुम्हें किसका चरित्र अच्छा लगा? उसके चरित्र की विशेषताएँ लिखो।

प्रश्न 8 'दुकान' शब्द में 'दार' शब्द लगाने से शब्द बना 'दुकानदार'। इसी तरह तुम भी 'दार' लगाकर पाँच शब्द बनाओ और उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

प्रश्न 9 जैसे 'चूड़ी बेचनेवाले को चूड़ीवाला कहते हैं, वैसे ही इन्हें क्या कहेंगे ?'

क. दूध बेचनेवाले को ख. सब्जी बेचनेवाले को।

ग. रिक्शा चलानेवाले को। घ. चाट बेचनेवाले को।

ङ. ताँगा चलानेवाले को ।

प्रश्न 10 चूड़ीवाले ने मुस्कराकर पूछा। इस वाक्य का अर्थ है – चूड़ीवाला मुस्कराया फिर उसने पूछा। अब इन वाक्यों को इसी प्रकार तोड़कर लिखो।

क. चूड़ीवाला गुड़िया लेकर चला गया ।

ख. पुलिस ने चोर से डाँटकर पूछा।

ग. मैंने उसे अपनी गुड़िया दिखाकर कहा।

प्रश्न 11 नीचे लिखे सभी शब्द स्त्रीलिंग शब्द हैं। इनमें बाईं ओर के सभी शब्द आ की मात्रा (ा) से अन्त होने वाले हैं और दाईं ओर के शब्द 'ई' की मात्रा (ी) से अंत होनेवाले हैं। इनके बहुवचन बनाने के नियम समझो।

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
गुड़िया	गुड़ियाँ	चूड़ी	चूड़ियाँ
चुटिया	चुटियाँ	खिड़की	खिड़कियाँ
खटिया	.....	लड़की	.....
डिबिया	.....	बिजली	.....
पटिया	.....	चींटी	.....
बछिया	.....	सीटी	.....
चिड़िया	.....	सीढ़ी	.....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रचना

- किसी फेरीवाले पर आठ वाक्य लिखो।

योग्यता विस्तार

- तुम्हारे आसपास इसी तरह की घटना घटी हो या तुम्हारी जानकारी में ऐसी घटना हो तो उसे कक्षा में सुनाओ।
- ऐसी कौन – कौन सी चीजें हैं जो तुम्हारे घर के पास ही बिकने आती है।
- जब ये अपना सामान बेचने आते हैं तो बताओ कैसी आवाजें निकालते हैं।

सब्जीवाला – .....

दूधवाला – .....

कबाड़ी वाला – .....

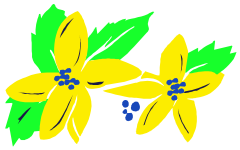

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 16

राजिम मेला (सहेली को पत्र)

पत्र लिखने की आवश्यकता सभी को पड़ती है। सभी परिवारों के कुछ लोग, संबंधी, मित्र देश–विदेश में दूर–दूर तक रहते हैं। धनवान लोग उनसे दूरभाष पर बात करते रहते हैं, पर सभी लोगों के यहाँ तो दूरभाष नहीं हैं। वे पत्र–व्यवहार के द्वारा एक–दूसरे का कुशल–क्षेम पूछते हैं और आवश्यक जानकारी देते हैं। इस पाठ में एक सहेली ने एक मेला देखने के बाद इस पत्र में उसका वर्णन किया है। पत्र पढ़कर पत्र लिखने का तरीका जानो।

शंकर नगर, रायपुर
(छत्तीसगढ़)
22 दिसम्बर, 2010

प्यारी सहेली श्वेता,

मैं यहाँ पर अच्छी हूँ। तुम कैसी हो? तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है। हमारे स्कूल में अभी खेल प्रतियोगिताएँ चल रही हैं। मैं भी खो–खो और लम्बी दौड़ में भाग ले रही हूँ। तुम्हारे यहाँ खेल प्रतियोगिताएँ कब हैं? अरे हाँ, एक बात मैं तुम्हें बताना चाह रही थी। कुछ दिन पहले मैं राजिम अपने मामा के यहाँ गई थी, माँ और पिता जी के साथ। पिता जी के लिए मामा का पत्र आया था कि आप लोग सत्तो को लेकर आ जाइए; यहाँ माघ का मेला लगा है। बस, हम लोग चल पड़े। मामा–मामी से मिलना और मेला देखना– एक पंथ दो काज। जिस बस में हम लोग राजिम जा रहे थे, उसमें बहुत ज्यादा भीड़ थी। थोड़ी देर तो हमें बस में सीट ही नहीं मिली; हमें खड़े–खड़े ही जाना पड़ा। लेकिन फिर बैठने के लिए सीट मिल गई। बस में मैं बैठी रास्ते भर मेले के बारे में ही सोचती रही। वहाँ तरह–तरह के झूले होंगे, अच्छे–अच्छे खिलौने मिलेंगे। यह सोचते–सोचते हम कब राजिम पहुँचे, पता ही नहीं चला।

घर पर मामा हम लोगों का इंतजार कर रहे थे। मुझे देखकर उन्होंने मुझे गले से चिपका लिया। वे बोले, ''सत्तो, तू आ गई। सब लोगों के साथ मेला देखने में आनंद आएगा। शाम को सब मेला देखने चलेंगे।''

मैंने मामा से पूछा, ''मामा, इस मेले के बारे में कुछ बताइए।''

वे बोले, ''यह मेला हर वर्ष माघ माह में लगता है। पूरे महीने यहाँ खूब रौनक रहती है। माघी पूर्णिमा को इस मेले की शुरुआत होती है और महाशिवरात्रि को समापन। यहाँ भगवान राम का राजीवलोचन मंदिर और कुलेश्वर महादेव मंदिर हैं। यहाँ तीन नदियों–सोंढूर, पैरी और

शिक्षण–संकेत : *पत्र के संबंध में उसकी आवश्यकता और महत्त्व पर चर्चा कीजिए। पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय और लिफाफा, जिन पर पत्र भेजे जाते हैं, दिखाइए। इस पत्र के स्वरूप पर चर्चा कीजिए। किसने लिखा है, किसे लिखा है, कब लिखा है, क्या लिखा है, चर्चा के बिंदु हों।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

महानदी– का संगम होता है। इसलिए इसे त्रिवेणी संगम भी कहते हैं। राजिम को छत्तीसगढ़ का प्रयाग भी कहते हैं। मेले में बहुत सारे खेल–तमाशे आए हैं। तू देखेगी तो नाच उठेगी।''

हम लोग जल्दी–जल्दी नहाए, हमने खाना खाया और फिर हम मेला जाने के लिए तैयार हो गए। मामा जी के घर से मेले का स्थान थोड़ी ही दूर पर था। मेले से लाउडस्पीकर की आवाजें दूर–दूर तक सुनाई पड़ रही थीं। गाने भी हो रहे थे। बातें करते हुए हम लोग चल रहे थे। मामा जी पिता जी को राजिम के मंदिरों के बारे में बता रहे थे। मुझे तो उन बातों में कुछ मजा नहीं आ रहा था। मेरे मन में तो ऊँचे–ऊँचे, गोल–गोल झूले घूम रहे थे। खिलौनों की दुकानें, चाट दिमाग पर छा रही थीं। पन्द्रह–बीस मिनट में हम मेले में पहुँच गए।

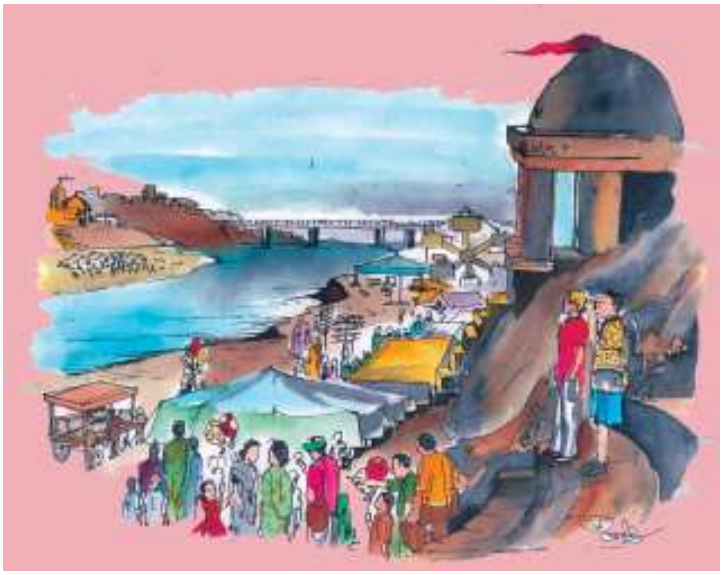

मेले में खूब भीड़ थी। तरह–तरह की दुकानें सजी थीं। छोटे–बड़े कई तरह के झूले थे। कोई बहुत ऊँचे–ऊँचे थे तो कोई चक्कर में चलनेवाले थे। खिलौनों की दुकानें तरह–तरह के खिलौनों से सजी थीं। जगह–जगह गुब्बारेवाले खड़े थे। खाने–पीने की छोटी–छोटी दुकानें लगी हुई थीं। मामा ने पहले तो मुझे गोलवाले झूले में झुलवाया, फिर ऊँचेवाले झूले में वे खुद भी मेरे साथ बैठकर झूले। ऊँचेवाले झूले में बैठकर बहुत मजा आया। इसके बाद मैंने एक बड़ा–सा गुब्बारा खरीदा। तभी माँ ने एक दुकान की तरफ मेरा ध्यान दिलाया जहाँ पर एक बहुत ही सुंदर गुड़िया रखी थी। वह गुड़िया मुझे बहुत पसंद आई। मैंने उस गुड़िया के लिए माँ से कहा तो माँ ने मुझे गुड़िया दिला दी। पिता जी ने मुझे एक बड़ा–सा खिलौना दिलाया। एक दुकान पर बहुत सुंदर चूड़ियाँ थीं। मैंने खुद अपने लिए चूड़ियाँ खरीदीं। मेले से निकलते हुए एक दुकान के कोने से लगकर मेरा गुब्बारा फूट गया। मामा हम

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सबको चाट की एक दुकान पर ले गए। सबने चाट खाई। रात होते–होते हम मामा के घर पहुँच गये।

मेले के बारे में बताने लायक बहुत सारी बातें हैं लेकिन अब नींद आने लगी है। जब मिलूँगी तब और बातें बताऊँगी।

तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में

तुम्हारी सहेली

सरिता

शब्दार्थ

पूर्णिमा	–	वह रात जिसमें पूरा चाँद निकलता है ।
त्रिवेणी	–	जहाँ तीन नदियाँ आपस में मिलती हैं।
प्रतिवर्ष	–	हर साल
प्रयाग	–	इलाहाबाद (प्रयाग प्राचीन नाम हैं)
समापन	–	समाप्त होना/खत्म होना

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 यह पत्र कहाँ से लिखा गया है ?

प्रश्न 2 इस पत्र का मुख्य विषय क्या है ?

प्रश्न 3 यह पत्र किसने किसको लिखा ?

प्रश्न 4 राजिम का मेला किस माह में भरता है ?

प्रश्न 5 राजिम किन नदियों के संगम पर बसा है ?

प्रश्न 6 किसी भी मेले में बच्चों के आकर्षण की कौन–सी चीज़ें होती हैं ?

प्रश्न 7 त्रिवेणी से क्या तात्पर्य है ?

प्रश्न 8 राजिम को छत्तीसगढ़ का प्रयाग क्यों कहा जाता है ?

प्रश्न 9 तुमने किसी मेले में झूला अवश्य झूला होगा। अपने अनुभव लिखो।

भाषातत्त्व और व्याकरण

- पाठ के अंत में दिए शब्दों एवं शब्दार्थों को शुद्ध उच्चारण सहित पढ़ो और समझो। पुस्तक को बंद कर लो। एक बच्चा इन शब्दों को बोले, शेष बच्चे लिखें। लिखने के बाद बच्चे अभ्यास पुस्तिकाओं को एक दूसरे से अदल–बदलकर उनकी जाँच करें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

समझो

- कभी–कभी एक ही शब्द का एक साथ दो बार प्रयोग होता है। ऐसे शब्दों को 'पुनरुक्त शब्द' कहते हैं; जैसे –

  ''सड़क के किनारे–किनारे वृक्ष लगे हैं।''

प्रश्न 1 इसी तरह के चार पुनरुक्त शब्द बनाओ और उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

प्रश्न 2 नीचे चौखटे में कुछ शब्द और उनके विपरीत अर्थवाले शब्द दिए गए हैं। इनकी जोड़ी बनाकर लिखो।

सुख, प्रसन्न, असफल, अप्रसन्न, ऊँचा, दुख, बुद्धिमान,
सफल, पसन्द, थोड़ा, नीचा, बुद्धिहीन, नापसंद, बहुत।

प्रश्न 3 दिए गए शब्दों के अंत में 'इक' लगाकर नए शब्द बनाओ। जैसे,

उदाहरण–	सप्ताह	–	साप्ताहिक	वर्ष	–	वार्षिक
	परिवार	–	.....	दिन	–	————————
	मास	–	.....	संसार	–	————————
	व्यवहार	–	.....	शरीर	–	————————
	समाज	–	.....	देह	–	————————

प्रश्न 4 इस पत्र में एक लड़की ने दूसरी लड़की को 'प्रिय सहेली' लिखा है। तुम बताओ कि इनको पत्र लिखने पर क्या लिखकर संबोधित करोगे/करोगी–

– मित्र/सहेली को
– बड़े भाई/पिता जी/माँ को
– छोटे भाई को/छोटी बहिन को।

रचना

- अपनी किसी यात्रा या विद्यालय के किसी कार्यक्रम का वर्णन करते हुए अपने/मित्र अपनी सहेली को पत्र लिखो।

पढ़ो और जानो

क. अपने से बड़ों को पत्र लिखते समय संबोधन में आदरणीय, पूजनीय, पूजनीया, पूज्य लिखते हैं।

ख. अपने से छोटों को पत्र लिखते समय संबोधन में आयुष्मान, चिरंजीव तथा बराबर उम्रवालों को प्रिय, बंधुवर, मित्रवर, प्रिय सहेली आदि लिखते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ग. पत्र के ऊपर दाहिनी ओर पत्र पर भेजनेवाले का पता और उसके नीचे दिनाँक लिखा जाता है।

यह भी जानो

- जनश्रुतियों के अनुसार राजिम नाम की तेली समाज की एक महिला इस स्थान पर रहती थी। एक दिन वह रास्ते में पत्थर से टकराकर गिर गई । उसके सिर पर रखा तेल का पात्र भी गिर गया। वह डर गई कि घर पर उसे डाँट पड़ेगी। वह पत्थर पर बैठकर रोने लगी। अंत में पात्र उठाकर जब वह घर जाने लगी तो उसने देखा कि पात्र में तेल भरा हुआ है। वह रोज उस पत्थर पर अपना पात्र रखकर तेल भरने लगी। एक दिन वह उस पत्थर को ही उठाकर घर ले आई। वहाँ के राजा जगतपाल को स्वप्न में मंदिर बनाने का आदेश मिला लेकिन स्वप्न में जो शिलाखंड दिखाई दिया था, वह राजिम तेलिन के पास था। राजा ने वह शिलाखंड उससे लेकर मंदिर में स्थापित किया। इसी से इस जगह का नाम राजिम पड़ा।
- राजिम से पंचकोसी की यात्रा जुड़ी है। छत्तीसगढ़ में पाँच ज्योतिर्लिंग हैं। वे सभी परस्पर आठ से दस किलोमीटर की दूरी पर ही हैं। बीच में कुलेश्वर महादेव हैं। इसी की चारों दिशाओं में श्री चम्पेश्वर नाथ (चंपारण्य), श्री ब्रझनेश्वर (ब्रझणी), श्री फणेश्वरनाथ (फिंगेश्वर) और श्री कोपेश्वर नाथ (कोपरा) स्थित हैं। इनसे ही पंचकोसी यात्रा जुड़ी है जो कार्तिक–अगहन से प्रारम्भ होकर पूस–माघ तक पूरी होती है।
- राजिम में श्री खंडोवा–तुलजा भवानी का मंदिर भी है। यह मराठा समाज की तीर्थस्थली के रूप में प्रसिद्ध है। इसका मूल मंदिर पुणे शहर में है।
- दानेश्वरदास मंदिर को गुफावाले महादेव का मंदिर भी कहा जाता है।

योग्यता विस्तार

- छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध तीर्थ–स्थलों की जानकारी एकत्रित करो।
- शाला वार्षिकोत्सव के अवसर पर अपने शिक्षकों की सहायता से शाला प्रांगण में मेले का आयोजन करो।

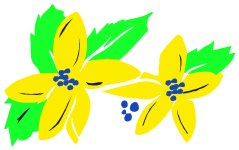

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ikB & 17

vkiyk dguh lkxsls bnjkcrh

[छतिसगढ़ चो दक्छिन दिसा ने आसे – बस्तर । बस्तर के लोग रान, डोङ्गरी, करपन, नंदि आउर घुमर चो किरता जानसोत । बस्तर ने कएक नंदिमन आसोत, हुनमन ने इंदराबती सबले बड़े नंदि आय । ए पाठ ने इंदराबती नंदि आपलो कहनी के सांगेसे ।]

मँय आँय इंदराबती, गोटोक नंदि । मोचो उबजन होलिसे ओड़यान राज चो कालाहांडि जिला चो डोङ्गरी ले । उबजन ठाने मँय नानी असन आँसे । हुता ले धीरे–धीरे बोहेंसे आगे खिण्डिक–खिण्डिक । फेर खिण्डिक बाड़ते जाँयसे ।

मोचो दुनो पाट आसोत बेड़ा–खाड़ा, रान आरू गाँवमन । किसान मन मोचो पानी ले टेण्डसोत आपलो उबज के । ओड़यान राज के धान–पान, साग–भाजी पानी–कांजि देते मँय पुरे बोहेंसे ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ओड़यान राज के नाहकतो पुरे मँय जुआन होलेसे । ओड़ेयान राज ने मोचो आधा पानी जोरा बाहार ले बोहुन सबरी नंदि ने जायसे । जोरा बाहार लागुन निमल/कमजोर हालत ने धीरे–धीरे छतिसगड़ राज ने बस्तर चो भेजापदर–धनपुजी गाँव लगे ओलेंसे । एथा चो लोग, बेड़ा–खाड़ा, रूख–राई जमाय मोचो मान करसोत । मोचो खंडे कएक गाँवमन आसोत । मोचो पानी ले कमानी–धमानी आउर दुसर निस्तार बुता करसोत । छानुन भाति मोचो पानी के पिवतो काजे बले नेसोत ।

मोचो खंडे रउ जगतुगुड़ा आजि जगदलपुर सहर बनलिसे । जगदलपुर चो खड़क घाटे मोचो पानी के नाहाकतो काजे अंगरेज सरकार पहिल पकी पुलया बनाली । हुन पुलया के आजि–कालि नानी पुलया बलु आत । खुबे पुर इले नानी पुलया बुड्डुन जाउ आय । नानी पुलया चो उपरे कुमडाकोट आरू डोङ्गाघाट नाव चो पारा चो मंजि गोटोक बड़े पुलया बनालासोत । मोचो पुर चो पानी बड़े पुलया के नी अमरे । एचो लागुन पुर बेरा बले लोग मन चो इयार– जाहार नी थेबे ।

जगदलपुर सहर के जितुन मँय फयले जाँयसे । आसना, तामाकोनी, तितिर गाँव, घाट लोहंगा असनेच कितरेय गाँवमन के नाहकुन गँवरेयामन चो बुता सारते बेड़ा–खाड़ा के उबजाते जाँयसे । बरसा सरले कोनी–कोनी लगे मोचो पानी खुबे कम रउ आय । असन लगे लोगमन हिण्डते मोके नाहाकु आत। असन ठान के खड़क बलु आत । बोहते–बोहते

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मँय लोहंडीगुड़ा लगे अमरतो ने बोदरा, नारंगपाल, उसरीबेड़ा, बेनीधाराउर आरू चितरकोट गाँव चो संद ने नारंगी नंदि आरू नानी बाहार एउन मोचो संगे त्रिवेड़ीं सागम बनासोत । एके लोग –मन चोण्डिघाट बलु आत । ए ठान के आमि बस्तर चो प्रयाग बलुक सकुँ ।

एचो ले आगे चितरकोट आरू तीरथा गाँव चो मंजि बले गोटोक खड़क आसे । ए खड़क के खिण्डिक जितले मोचो पानी बड़े भारी छिलपट ले खुबे उपर ले खाले कचाड़ी होयसे । एके घुमर बलुआत । चितरकोट चो घुमर । चितरकोट चो जलप्रपात । मँय इंदराबती चो नाव पड़ले लोग झपके घुमर चो नाव के सुरता करू आत । घुमर खाले पानी खुबे खोल आसे । बेर तरास ने घुमर ने सपाय बेरा सात रंगेया इंदर धनउ दखा देउ आय ।

घुमर ले मँय आगे जाँयसे । डोङ्गरी, रान, पखना–छिलपट ए जमा मोके पोटारून नेसोत । आगे घाटी ने गड़ चंदेला, भेजा–बिन्ता लगे मोचो पाट खुबे ओसार आसे । एथा ले मोचो कएक धारमन आसोत । असनेच बारसूर लगे मँय सातधार ने अलगेंसे । हुता ले फयले बड़े तुमनार गाँव ने डंकनी नंदि एउन मोचो संगे सागम बनाउन मिरेसे । एथा ले आगे मँय भयरमगड़ के जितुन भाति इंदराबती रास्ट्रीय उद्यान भितर ले बोहेंसे आरू भोपालपटनम बाटले बोहते– बोहते छतिसगड़, महारास्ट्र आरू आंध्रप्रदेस चो संद ने बस्तर चो बीजापुर जिला चो भद्रकालि गाँव लगे गोदावरी नंदि ने जाउन सागम बनाउन मिरेंसे । मोचो पानी गोदावरी नंदि चो पानी संगे जाउन समुंद ने मिरेसे ।

कालाहांडि ले धरून भद्रकालि तक सबले आगर मँय बस्तर संभाग ने बोहेंसे, हुनि काजे मोके एथा चो माटी ले, डोङ्गरी, घाटी, रूख–राई ले मया होलिसे । मोके बस्तर भुँय के जीवना देतो बिती नंदि बलुआत । ए गोठ मोचो मान के बड़ाउ आय ।

सब्दमन चो मायने; शब्दार्थ

ओड़यान राज	–	उड़ीसा प्रदेश	सागम	–	संगम
नानी	–	छोटा, छोटी	त्रिवेड़ीं	–	त्रिवेणी
जुआन	–	जवान, युवा	घुमर	–	जलप्रपात
टेण्डसोत	–	सिंचाई कर रहे हैं			
निस्तार	–	नाहातारे–धोवतोर			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बहार	–	नाला
खड़क	–	नदी का वह स्थान जहाँ तल में चट्टानें होने से पानी गर्मियों में उथला रहता है और नदी को पैदल पार किया जा सकता है
छिलपट	–	विशाल चट्टान, शिलापट्

iLu vkmj vH;kl

xfrfcf/k (xfrfof/k) %&

€ गुरजी कक्छा चो पिलामन के दुय कुड़ा ने बाटुन प्रस्नमन पुछा–पुछी होतो काजे बलोत । आपने प्रस्न पुछोत । प्रस्न असन होउक सके :–

(क) तुमचो गाँव लगे चो नंदि चो काय नाव आय ?

(ख) तुमचो गाँव चो लोग नाहाउक काहाँ जाउ आत ?

बोध–प्रस्न

iLu (1) [kky: fy[kk iLueu pk mRrj fn;k s %&

(क) इंदराबती नंदि काहाँ ले निकरलिसे ?

(ख) ओड़यान राज ने इंदराबती चो आधा पानी कोन बाहार ने जायसे ?

(ग) जगदलपुर सहर चो जुना नाव काय आय ?

(घ) बड़े पुलया कोन लगे बनालासोत ?

(ङ) घुमर काहाँ आसे ?

(च) कोन नंदि आरू बाहार इंदराबती संगे मिरून/मिसुन त्रिवेड़ीं सागम बनासोत ?

(छ) कोन ठान के बस्तर चो प्रयाग बलुक सकुँ ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

iLu (2) ufn xkB;krh tkys ,eu dks dk; cyrh] fy[kk %&

(क) ओड़यान राज चो सरकार के, जे इंदराबती चो पानी के जोरा बाहार बाटे नेयसे ?

(ख) नंदि खण्डे भाटा बसतो लोग के ।

(ग) नंदि ने ढोबरतो लेका–लेकीमन के ।

iLu (3) bnjkcrh ufn lkxs l] ukjixiky yxs xkVkd ufn vk: xkVkd ckgkj gupk lxs fel u f=oMh lkxe cuk lkr] rcs lkxk %&

(1) त्रिवेड़ीं सागम बनाउ नंदि आरू बाहार कोन–कोन आत ?

(2) ए ठान के आमि काय बलुक सकुँ ?

(3) गँवरेया ए ठान के काय बलु आत ?

iLu (4) fudk (lgh) tksMh cukok %&

घुमर	–	बारसूर
हिण्डुन नाहकतो ठान	–	इंदराबती गोदावरी सागम
भद्रकालि	–	चितरकोट
सातधार	–	खड़क

भासा–तत्व आउर ब्याकरन

¼1½ letk %&

- बिसेसँड़ (विशेषण) आत – नानी, बड़े, खुबे ओसार, खुबे खोल ।

  बिसेसँड़ काईं जीव नाहले तीज चो गुन के सांगतो सब्द आय । ए पाठ ने इलोर बिसेसँड़मन के चितावा ।

- खाले लिखलो सब्दमन चो मंजारे '–' चिना लगालोर आसे । ए चिना के tksM fpuk (योजक चिह्न) बलु आत । ए चिना दुय नाहले

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आगर सब्दमन के जोड़तो बुता करू आय । जसन :– रूख–राई, धान–पान, पिला–झिला, आया–बाबा आदि ।

½2½ [kky pk lCneu u eyk jyk Bkueu d fudk@ lgh vDNj fy [ku ijk djk (i] M] Vk] d] g) %&

नाहा....तो, पो....रून, ख....क, आ....लो, बो....न ।

योग्यता बिस्तार

गोटोक लेका नाहले लेकी दस धाड़ी इमला लिखाओत, जमाय पिला लिखोत । पाछे अलटुन–पलटुन लेका–लेकीमन जाँचोत ।

मायने काजे बले असने गतिबिधि करोत ।

आपलो गुरजी आरू कक्छा चो लेका–लेकीमन संगे नंदि चो बारे ने गोठयावा ।

तुमि कोन–कोन नंदि चो नाव जानास, सूची बनावा ।

होउक सकले, गुरजी पिलामन के आपलो गाँव लगे चो नंदि नाहले बाहार रेटे नेउन नंदि/बाहार चो उबजन थान (उद्गम स्थल) ले धरून हुनचो सागम थान तक चो बारे ने पिलामन के सांगोत ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 18

पिंजरे का जीवन

4VX528

मनुष्य हो या पशु–पक्षी, बंधन किसी को पसंद नहीं। मनुष्य अपने स्वार्थ–साधन, सेवा और मनोरंजन के लिए पशु–पक्षियों को पालता है। वे विवशता में बंधन में बँधते हैं, जबकि वे मन से स्वछन्द जीवन जीना चाहते हैं। इस कविता में बंदी तोते को सुखी जानकर एक मैना स्वयं उसके स्थान पर बंदी बन जाती है और तोते को स्वतंत्र कर देती है लेकिन बाद में वह पिंजड़े के जीवन से दुखी होती है।

पिंजरे के तोते से बोली
छत पर बैठी मैना।
''बड़े मजे से तुम रहते हो
बोलो ये सच है ना ?

बैठे–बैठे मिल जाते हैं
भाँति–भाँति के व्यंजन।
काश! मुझे भी मिल पाता
जो इस पिंजरे का जीवन।

भोजन औ जल की तलाश में
हम दिन–रात भटकते।
तब जाकर दो–चार अन्नकण
अपने पल्ले पड़ते ।।

शिक्षण–संकेत : *पालतू पशुओं और पक्षियों के संबंध में कक्षा में चर्चा कीजिए। छात्रों पूछिए कि यदि उन्हें बहुत अच्छा खाना दिया जाए, रहने के लिए सब आराम दिए जाएँ और उन्हें एक कमरे में बंद रखा जाए तो कैसा लगेगा? यही बात पक्षियों के संबंध में है। हम अपने मनोरंजन के लिए उन्हें पिंजरों में बंद रखते हैं– यह बहुत अनुचित है। कविता में मैना तोते के सुखमय जीवन के लालच में स्वयं पिंजड़े में बंद हो जाती है। और फिर वही स्वतंत्रता पाने को पछताती है कविता को लय–स्वरपूर्वक सुनाएँ और बच्चों से अनुकरण वाचन कराएँ। एक–एक विद्यार्थी से एक–एक छन्द वाचन कराएँ। बाद में कविता का अर्थ स्पष्ट करें।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उस पर हरदम चिड़ीमार का
डर रहता है मन में।
हिंसक जीव–जंतुओं का
भीषण खतरा है वन में।।''

तोता बोला, ''अगर सोचती
हो सुख है पिंजरे में,
मुझे निकालो, आओ अंदर
मैं जाता हूँ वन में।।

तुम ले लो पिंजरे का सुख
मैं लूँ जंगल की पीड़ा।
बड़े मजे से रहना इसमें,
करना निशि–दिन क्रीड़ा।।''

मैना ने खोला दरवाजा
जैसे ही पल–छिन में।
मैना को अंदर कर तोता
खुद उड़ गया गगन में।।

चार दिनों में ही वह मैना
अंदर तड़प रही थी।
उड़ने को अकाश में ऊँचे
तबीयत फड़क रही थी।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भाँति–भाँति के भाते थे
उसको ना कोई व्यंजन।
ना आराम सुहाता उसको
ना पिंजरे का जीवन।।

शब्दार्थ

भाँति–भाँति	–	तरह–तरह	भीषण	–	भयंकर
व्यंजन	–	खाने की अच्छी वस्तुएँ	क्रीड़ा	–	खेल
हिंसक	–	मारनेवाला	सुहाना	–	मनोहर, अच्छा लगना
छिन	–	क्षण	पल–छिन	–	थोड़ी देर में।
चिड़ीमार	–	पक्षियों को पकड़ने तथा मारनेवाला।			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 इस कविता में किस–किस पक्षी के बीच बातचीत बताई गई है ?

प्रश्न 2 पक्षी के लिए पिंजरे का जीवन दुखदाई क्यों होता है ?

प्रश्न 3 अगर तुम्हें खाने–पीने, आराम करने का सारा सामान रखकर किसी कमरे में बंद कर दिया जाए, तो तुम्हें कैसा लगेगा ? अपने शब्दो में लिखो।

प्रश्न 4 पिंजरे के बाहर रहनेवाली मैना ने पिंजरे में बंद तोते से यह क्यों कहा, 'बड़े मजे में तुम रहते हो।'

प्रश्न 5 पिंजरे में बंद हो जाने पर मैना दुखी क्यों रहने लगी ?

प्रश्न 6 ''हिंसक जीव–जन्तुओं का भीषण खतरा है वन में'', वन में पक्षियों के हिंसक जीव–जन्तु कौन–कौन–से होते हैं ?

भाषातत्व और व्याकरण

- पाठ में से कविता की चार पंक्तियाँ शिक्षक बोलें और बच्चों को लिखने को कहें। परस्पर कॉपियाँ अदल–बदलकर उन्हें जाँचने को बच्चों से कहें। अंत में शिक्षक इन पंक्तियों को श्यामपट पर लिखें और बच्चों को पुनः जाँच करने को कहें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पढ़ो और समझो

- 'गैंडा' और 'मच्छर' दोनों पुल्लिंग शब्द हैं। इनके स्त्रीलिंग रूप नहीं होते। इसी प्रकार चील और मैना स्त्रीलिंग शब्द हैं। इनके पुंल्लिंग रूप नहीं होते।

प्रश्न 1 ऊपर उदाहरण में बताए शब्दों के अतिरिक्त पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्द लिखो जिनके लिंग नहीं बदलते।

- दो शब्द हैं– अगर और मगर। दोनों शब्दों में कोई मात्रा नहीं लगी है।

प्रश्न 2 ऐसे ही पाँच बिना मात्रा वाले शब्द लिखों जिसके अंत में 'र' वर्ण आता हो।

- कभी–कभी दो विलोम शब्दों का प्रयोग एक साथ होता है, जैसे

करते निशि–दिन क्रीड़ा

हम दिन–रात भटकते।

यहाँ निशि–दिन का अर्थ है, रात–दिन, जो कि एक दूसरे के विलोम शब्द हैं।

प्रश्न 3 ऐसे दो वाक्य लिखो जिनमें इसी प्रकार के दो विलोम शब्दों का प्रयोग हुआ हो।

प्रश्न 4 'हर' में 'दम' लगाकर 'हरदम' शब्द बना है। 'हर 'लगाकर दो शब्द और बनाओ और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

प्रश्न 5 नीचे लिखे शब्दों की समान ध्वनिवाले दो–दो शब्द लिखो

जैसे – तोता, होता, सोता।

जंगल, मंगल, दंगल।

प्रश्न 6 व, म, न, र, क वर्णों में से दो–दो वर्णों के जितने शब्द बना सकते हो, बनाकर लिखो, जैसे – मन, कम।

समझो– कुछ शब्दों के लिए दो या अधिक शब्दों का भी प्रयोग होता है जैसे गंगा के लिए सुरसरि, भागीरथी भी कहते है। इन्हें गंगा का पर्यायवाची शब्द कहते हैं;

प्रश्न 7 दिए गए शब्दों में से शब्द और उनके पर्यायवाची शब्द अलग–अलग करके लिखो।

जंगल, आकाश, दिन, जल, गंगा, दिवस, नीर, नभ, कानन, दिवा, स्वप्निल, वन

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रचना

- इस कविता को कहानी के रुप में लिखो।

गतिविधि

- गत्ते, कागज, रुई आदि की सहायता से पक्षियों के नमूने बनाओ, उनमें रंग भरो।

योग्यता–विस्तार

- नीचे लिखी कविता पढ़ो और कविता में ही पूछे गए प्रश्न का उत्तर कक्षा में बताओ।

कौन तुम्हें अच्छा लगता है ?
बंदी तोता, उड़ता तोता ?

नभ में उड़नेवाला तोता
टें–टें करनेवाला तोता ।
पेड़ों पर जो सो जाता है
जो चाहे सो फल खाता है।

वन में उड़े बाग में आए
कुतर–कुतर कच्चे फल खाए।
पिए नदी का ठंडा पानी
करे जंगलों में मनमानी।

दूध–भात जो नित खाता है,
पिंजरे में जो सो जाता है।
राम–राम कहता है दिन भर
पिंजरे में रहता जीवन भर।

जो न कभी उड़ पाया वन में
जो न उड़ेगा अब आँगन में।
जिसे न अब कुछ भी करना है
पिंजरे में जीना–मरना है।

कौन तुम्हें अच्छा लगता है ?
बंदी तोता, उड़ता तोता ?

4H713V

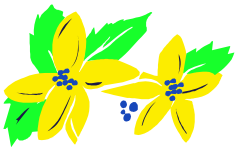

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4WFW5I

पाठ 19

हाय मेरी चारपाई

होली का त्योहार बुराई पर अच्छाई की विजय का त्योहार है। लेकिन इसमें बहुत–सी बुराइयाँ आ गई हैं। हँसी–खुशी के वातावरण में त्योहार मनाने की जगह इस त्योहार पर लोगों का परस्पर एक दूसरे पर कीचड़ डालना, गालियाँ देना, चोरी के सामान से होली का झाड़ भरना आदि कार्यों से इस त्योहार का महत्व कम होता जा रहा है। इसी तरह की एक घटना इस कहानी में पढ़िए।

बात उन दिनों की है, जिन दिनों मैं निकर पहनता था; यानी छोटा भी था और शरारती भी। मौज–मस्ती के दिन थे; चिंता–फिक्र कोई थी नहीं।

इस वर्ष की तरह उस वर्ष भी होली आई थी। मुहल्ले में होली जलाने के लिए लकड़ी जमा करने की समस्या थी सो आसपास से जितने लकड़ी–फट्ठे इकट्ठे किए जा सकते थे, वे पर्याप्त नहीं थे। इसलिए तय हुआ कि मुहल्ले के पीछे की पहाड़ी से कुछ सूखी झाड़ियाँ काट लाई जाएँ।

आखिर होली का दिन आ गया, लेकिन होली का झाड़ अभी पहाड़ नहीं हो पाया था। दोस्तों की चिंता को देखते हुए मैंने मंडली को सुझाव दिया, ''क्यों न कुछ लोगों के यहाँ से चारपाई, लकड़ी के फाटक, कुर्सी–मेज और ऐसा कोई भी सामान, जो बाहर रखा हो, उठा लिया जाए। इस काम में मुहल्ले के खूसट और गुस्सैल लोगों का विशेष ध्यान रखा जाए, जिन्होंने हमें वर्ष भर सताया है।'' सुझाव मान लिया गया।

अब क्या था ? सारी मंडली चार–पाँच टुकड़ों में बँट गई। हर टुकड़े में तीन–चार लड़के थे। सबने अपने–अपने घरों से दूर के इलाके चुने और हमारा अभियान शुरू हो गया। फिर तो तरह–तरह का लकड़ी का सामान आता रहा और टूट–टाटकर होली के झाड़ में पड़ता रहा। कुछ ही घंटों में झाड़ का पहाड़ बन गया।

मैं अपनी टुकड़ी का नेतृत्व कर रहा था; मेरे साथ तीन लड़के और थे। हम लोगों ने मास्टर रतिलाल और पंडित गंगाप्रसाद की चारपाई, मन्ने साव का फाटक, हरीचंद चूनेवाले की सीढ़ी और न जाने क्या–क्या होली की भेंट चढ़ा दिया।

शिक्षण–संकेत : *कक्षा में होली के हुड़दंग पर चर्चा करें। बच्चों से पूछें कि वे उस दिन क्या–क्या करतब करते हैं। इनसे कुछ लोगों को प्रसन्नता होती होगी तो कुछ दुखी भी होते होंगे। उनसे पूछिए कि लोगों को दुख पहुँचाकर खुश होना अच्छी बात है क्या ? हम किसी की वस्तु को लाकर होली में जला देते हैं और खुश होते हैं लेकिन जब अपनी वस्तु इस तरह चोरी की जाने के बाद राख हो जाती है तो हमें दुख होता है। ऐसे कामों का परिणाम सोचकर ही काम किए जाएँ।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आखिर होली जलने का समय भी आ गया। होली–दहन आरंभ हुआ और देखते–ही–देखते झाड़ का पहाड़ धू–धूकर जलने लगा। टूटे टीन के कनस्तर का ढोल बजा, मंडली के बदन में थिरकन हुई और फिर जो हुड़दंग शुरू हुआ, तो रात के बारह बजे जाकर रुका।

घर पहुँचकर मैंने देखा कि सब लोग परेशान बैठे हैं। माँ और पिता जी के चेहरों पर गुस्से और परेशानी के भाव हैं। मैंने सोचा, आज तो मेरी खैर नहीं। डरते–डरते जैसे ही घर में कदम रखा कि पिता जी की सख्त आवाज सुनाई दी,''क्यों रे! तेरी चारपाई कहाँ है ?''

''मेरी चारपाई ?'' मैंने चौंककर कहा। ''हाँ, हमने सारा घर देख लिया। कहीं नहीं मिली। कहाँ रखी थी निकालकर ?'' माँ ने पूछा।

मुझे काटो तो खून नहीं। अब से कुछ देर पहले की सारी मस्ती उतर गई। हुड़दंग का रंग फीका पड़ गया। टूटे हुए कनस्तर की ठक्–ठक् कानों में गूँजने लगी।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया, मगर तभी मुझे ध्यान आया कि हमारी मंडली के जो छोकरे इस तरफ आए थे, उनमें बिल्लू भी था और उन दिनों मेरी बिल्लू से कुछ खटक भी रही थी। बात साफ हो चुकी थी कि हो–न–हो यह जरूर बिल्लू का ही काम है।

खैर, जैसे–तैसे मन को समझाया कि अब जो होना था, सो हो गया। मगर उस रात तो मुझे फर्श पर दरी बिछाकर ही सोना पड़ा। अब भी जब–जब होली आती है, मैं अपनी चारपाई को जरूर याद कर लेता हूँ।

शब्दार्थ

शरारती	–	शरारत करनेवाला
हुड़दंग	–	उपद्रव
अभियान	–	किसी विशेष कार्य के लिए योजना बनाकर उस पर कार्य करना।
कनस्तर	–	खाली पीपा
होली दहन	–	होली जलना/होली जलाना
खटकना	–	बुरा लगना, अनबन होना
थिरकन	–	ठुमक–ठुमककर चलना, नाचते हुए चलना।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 होली के झाड़ को पहाड़ जैसा ऊँचा बनाने के लिए बच्चों को क्या करना पडा ?

प्रश्न 2 होली के लिए कहाँ–कहाँ से सामान लाया गया ?

प्रश्न 3 होली के लिए सामान उठाने में किन लोगों का विशेष ध्यान रखा गया ?

प्रश्न 4 कहानी के नायक को होली–दहन की रात फर्श पर ही दरी बिछाकर क्यों सोना पड़ा?

प्रश्न 5 माँ और पिता जी के चेहरे पर गुस्से और परेशानी के भाव क्यों थे ?

प्रश्न 6 बच्चों की टोली ने लोगों के घरों से होली जलाने के लिए जो सामान उठाया, क्या तुम्हारी दृष्टि में यह काम उचित था ? क्यों?

प्रश्न 7 होली पर लोग हुड़दंग मचाते हैं, दूसरों को परेशान भी करते हैं। तुमने किस तरह से होली मनाई ? क्या तुम हुड़दंग मचाना उचित समझते हो ?

भाषातत्व और व्याकरण

- शिक्षक पाठ में से किसी एक अनुच्छेद का श्रुतिलेख बच्चों को लिखाएँ। पुस्तक में से शब्द देखकर तथा अनुच्छेद देखकर बच्चों को इसकी जाँच करने को कहें।

प्रश्न 1 दुख और शोक की अवस्था में लोगों के मुँह से 'हाय' शब्द निकलता है। इसी प्रकार निम्नलिखित अवसरों पर हमारे मुँह से कौन से शब्द निकलते हैं –

प्रसन्नता में / आश्चर्य में /उत्साह में /चिन्ता में ।

प्रश्न 2 नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो।

क. काटो तो खून नहीं ख. रंग फीका पड़ जाना

ग. झाड़ का पहाड़ बन जाना घ. भेंट चढ़ा देना।

प्रश्न 3 नीचे दिए गए शब्दों/शब्द–समूहों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

मौज–मस्ती, आसपास, डरते–डरते, देखते–ही–देखते, मंडली, परेशान, शरारत, चौंककर, नेतृत्व।

प्रश्न 4 नीचे लिखे वाक्यों को सही करके पुनः लिखो।

क. रिमझिम–रिमझिम पानी की बूंद बरस रहा है।

ख. हर टुकड़ा में तीन–चार लड़के था।

ग. हर वर्ष का तरह होली आया।

घ़ उन दिनों मेरा बिल्लू से खटक रहा था।

ङ. लड़कियाँ हंस रहे हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

- नीचे लिखे वाक्य को पढ़ो।

  ''राम ने रावण को मारा''।

  इस वाक्य में 'ने' शब्द राम व रावण को जोड़ने का काम कर रहा है। 'को' शब्द रावण व मारा को जोड़ने का काम कर रहा है।

प्रश्न 5 'ने' और 'को' का प्रयोग करते हुए दो वाक्य बनाकर लिखो।

- शब्दों का वाक्य में प्रयोग करके शब्दों के लिंग के बारे में पता किया जा सकता है, जैसे भैंस काली होती है। कौआ काला होता है। काला, काली; होता है, होती है शब्दों से पुल्लिंग और स्त्रीलिंग की जानकारी हो सकती है।

प्रश्न 6 निम्नलिखित शब्दों में जो स्त्रीलिंग हैं उन्हें स्त्रीलिंग के वर्ग में और जो पुल्लिंग हैं उन्हें पुल्लिंग वर्ग में लिखो :

घुँघरू, भैंस, बोतल, पोशाक, हिरन, वेदना, घटना, पीपल, घी, सुपारी, चपाती, दाँत, अरहर, चारपाई, होली, रंग, कनस्तर, पहाड़, झाड़, मंडली, पहाड़ी।

रचना

- होली शांति और सद्भावना के साथ मनाया जानेवाला एक पवित्र त्योहार है। इस दिन लोगों को कीचड़ लगाना, गाली–गलौज करना, देर रात तक नगाड़े बजाकर बुजुर्गों और बच्चों को परेशान करना क्या ठीक है ? अब की बार तुम अपने मुहल्ले में होली का त्यौहार किस तरह शालीनता से मनाओगे, आठ वाक्यों में लिखो।

गतिविधि

- गत्ते/कागज से होली में पहननेवाली झालरदार टोपी और मुखैटा बनाओ।

योग्यता–विस्तार

- पता करो हम होली का त्यौहार क्यों मनाते हैं?
- निम्न बिन्दुओं के आधार पर होली त्यौहार का वर्णन करो–
  1. कब मनाया जाता है।
  2. क्यों मनाया जाता है।
  3. कैसे मनाया जाता है।
  4. होली त्यौहार का क्या महत्व है।
  5. होली त्यौहार मनाते समय क्या–क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

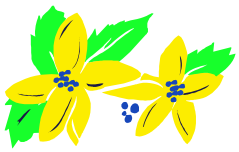

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 20 अमीर खुसरो की पहेलियाँ

पहेलियाँ बूझने–बुझाने का खेल बच्चे खेलते ही रहते हैं। गाँव और शहर दोनों में ये पहेलियाँ खूब प्रचलित हैं। लेकिन यह कहना कठिन है कि इनमें से कौन–सी पहेली किसने रची है। हाँ, पहेलियाँ रचने के संबंध में एक नाम बहुत प्रसिद्ध है। वह है– अमीर खुसरो। अमीर खुसरो और उनकी पहेलियों के संबंध में इस पाठ में पढ़ेंगे।

आज से लगभग 700 वर्ष पहले भारत में गुलाम वंश का एक बादशाह था– बलबन। उसके समय में ही दिल्ली में हज़रत निजामुद्दीन औलिया नाम के एक संत थे। उनका एक आठ वर्ष का प्यारा शिष्य था– अमीर खुसरो। खुसरो बड़ा होकर अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर बलबन का राज–दरबारी बना।

खुसरो अरबी, फारसी, तुर्की और हिंदी के विद्वान् थे। उन्हें संस्कृत भाषा का भी थोड़ा ज्ञान था। उन्होंने फारसी में तो बहुत श्रेष्ठ रचनाएँ कीं; हिंदी में भी अनेक पुस्तकें लिखीं। खुसरो एक अच्छे संगीतज्ञ भी थे। कहा जाता है कि सितार का आविष्कार खुसरो ने ही किया था।

खुसरो इसलिए भी प्रसिद्ध हैं कि हिन्दी की खड़ी बोली में कविता लिखनेवाले वे सर्वप्रथम कवि माने जाते हैं। यहाँ उनकी कुछ चुनी हुई पहेलियाँ दी जा रही हैं। इन्हें पढ़ो और बूझो–

(1) धूपों से वह पैदा होवे,
छाँव देख मुरझाए।
एरी सखी मैं तुझसे पूछूँ,
हवा लगे मर जाए।।

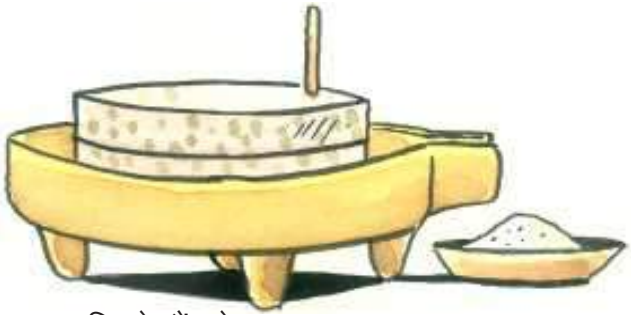

(2) एक नारि के हैं दो बालक,
दोनों एकहि रंग।
एक फिरै एक ठाढ़ा रहे,
फिर भी दोनों संग।।

शिक्षण–संकेत : *पहेलियों के संबंध में कक्षा में चर्चा करें। स्थानीय बोली की कुछ पहेलियाँ बच्चों से बूझे। उन्हें बताएँ कि यह खेल दिमाग का है। पत्र–पत्रिकाओं में पहेलियाँ प्रकाशित होती रहती हैं, उन्हें पढ़ने और बूझने के लिए प्रेरित करें। बच्चों को अपनी–अपनी बोली (भाषा) की पहेलियों का संग्रह कर बूझने के लिए भी प्रेरित करें।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

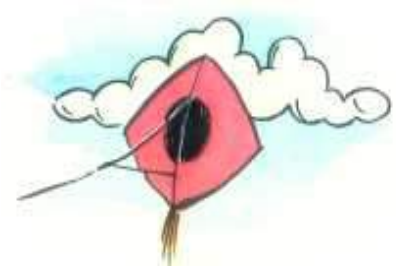

(3) आदि कटे तो सबको पाले,
मध्य कटे तो सबको मारे।
अंत कटे से सबको मीठा,
खुसरो वाको आँखों दीठा।।

(4) एक कहानी मैं कहूँ,
तू सुन ले मेरे पूत।
बिना परों वह उड़ गया,
बाँध गले में सूत।।

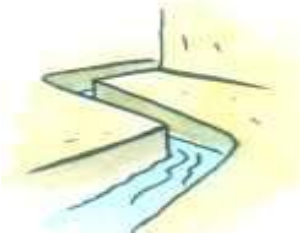

(5) सावन–भादों बहुत चलत है,
माघ–पूस में थोरी।
अमीर खुसरो यों कहे,
तू बूझ पहेली मोरी ।।

(6) बीसों का सिर काट लिया।
ना मारा ना खून किया।।

(7) जल–जल चलती बसती गाँव,
बस्ती में ना वाका ठाँव।
खुसरो ने दिया वाका नाँव,
बूझ अरथ नहिं छोड़ो गाँव।।

(8) घूम–घुमेला लहँगा पहिने,
एक पाँव से रहे खड़ी।
आठ हाथ हैं उस नारी के,
सूरत उसकी लगे परी।।

(9) एक थाल मोती से भरा,
सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे,
मोती उसका एक न गिरे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ

दीठा	–	देखना	वाका	–	उसका
नारि	–	स्त्री	नाँव	–	नाम, नाव
सूत	–	धागा	थोरी	–	थोड़ी, कम
पूत	–	पुत्र	सूरत	–	शक्ल
मध्य	–	बीच			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 वह कौन–सी चीज है जो धूप में पैदा होती है, लेकिन हवा लगते ही मर जाती है?

प्रश्न 2 चक्की के कितने पाट होते हैं ?

प्रश्न 3 मोरी (नाली) पूस–माघ के महीनों में धीमी और कम क्यों चलती है ?

प्रश्न 4 छतरी के कितने पाँव और कितने हाथ होते हैं ?

प्रश्न 5 वह कौन–सा थाल है, जो मोतियों से भरा होता है ?

प्रश्न 6 'सूरत उसकी लगे परी' इस पहेली में परी के समान सूरत की बात कही गई है। सोचकर लिखो कि परी की सूरत में क्या खास बात रहती है ?

प्रश्न 7 छत्तीसगढ़ी में पहेली को क्या कहते हैं ? छत्तीसगढ़ी बोली की दो पहेलियाँ लिखो।

भाषातत्त्व और व्याकरण

- पाठ के शब्दों के अर्थ भी पूर्ववत् पूछे जाएँ और उनका प्रयोग कराएँ।

प्रश्न 1 इस पाठ में निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग हुआ है–

नार, छाँव, ठाढ़ा, पूत, परों, लहँगा, औंधा।

इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करके लिखो।

4X8JAG

गतिविधि

- अपने बड़े–बुजुर्गों से पहेलियाँ एकत्रित करो और कक्षा में सुनाओ।

योग्यता–विस्तार

- पंखा, किताब, शिक्षक, पानी, मोर, बादल, आदि पर पहेलियाँ बनाओ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ikB &21

cLrj pk frgkj & xk´pk

[आमचो बस्तर ने भिने–भिने कएक तिहारमन के मानु आत । ए तिहारमन ने गोञ्चा आरू दसराहा तिहार खुबे हरिक–उदिम बिती तिहार आत । ए पाठ ने आमि गोञ्चा तिहार चो बारे ने पड़ुन जानुन्दे कि कसन ने ए तिहार चो मुर होली आरू एचो कसन–कसन रूसुम आय ।]

आमचो बस्तर ने राजासाई बेरा पुरसोतम देव नाव चो गोटोक राजा होउ रला । हुन बड़े बीर आरू धरमाति रला । सन् 1408 ईस्वी ने हुन तीरथ करतो काजे आपलो राज बस्तर ले जगन्नाथ पुरी तक पेटसँलगा गेला । हुता पुरी चो जगन्नाथ गुड़ी ने अमरून भगवान जगन्नाथ के खुबे हीरा–मोती–मानिक आरू सोन चो मोहर चेगाला । हुनचो भगती के दखुन भगवान जगन्नाथ आपलो गुड़ी चो पुजारी के सपना ने परगट होउन बलला मने कि बस्तर चो राजा के मँय रथपति होतोर बर देंयसे । बिहान पाहतो के पुजारी सपनलो गोठ के

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राजा के सांगलो । तेबे राजा पुरसोतम देव हरिक–हरिक बस्तर एउन xk´pk आरू n l jkgk तिहार मानुक मुरयाला ।

गोञ्चा तिहार बेरा भगवान जगन्नाथ, बलले, भगवान सिरिक्रिस्न, हुनचो भाई बलभद्र आरू बहिन सुभद्रा चो मूर्तिमन के रथमन ने बसाउन जगदलपुर ने किन्दराउ आत । एकेय रथजातरा बलु आत । असाड़ मयना चो उदया जोन चो दुसर दिने सिरि गोञ्चा बलले, पहिल रथजातरा होउ आय । नव दिन पाछे हुनि मयना चो उदया जोन चो इगारवाँ दिने बोहड़ती गोञ्चा होउ आय ।

गोञ्चा काजे जगदलपुर ने रान ले रूख आनुन चार–चार चका बिती तीन ठन रथ के बनाउ आत । ए रथमन के लाल, नीला आरू हरदेया रंग चो कपड़ा ने सिङ्गारू आत । सिरि गोञ्चा दिने जगन्नाथ मंदिर, जगदलपुर ने गोल बजार लगे आसे, हुवा ले भगवान जगन्नाथ, बलभद्र आरू सुभद्रा चो मूर्तिमन के निकराउन रथमन ने बसाउ आत । रथमन के गाँव–सहर चो लोगमन गोल बजार के किन्दराउन जगन्नाथ गुड़ी लगे चो सिराहासारे नेउन नव दिन काजे मण्डाउन पुजा–पाठ करू आत । असाड़ मयना चो उदया जोन चो इगारवाँ दिने फेर हुनि मूर्तिमन के रथमन ने बसाउन जगन्नाथ गुड़ी ने आनु आत । नव दिन ले भगवान जगन्नाथ, बलभद्र आरू सुभद्रा के गाजा होलो मुंग आरू सकर नाहले गुर मिसालो परसाद चेगाउ आत । ए परसाद के 'गजामुंग' बलु आत । भगवानमन के फनस

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

खुआ चो परसाद बले भोग लगाउ आत । लोगमन गोञ्चा बेरा मीत बांधतोर होले 'गजामुंग' बांधु आत । कएक लोगमन सिराहासारे भगवान सतनारायन चो कथा बले सुनु आत।

गोञ्चा तिहार चो मुर कहनी असन आय – गोटोक हार भगवान जगन्नाथ, हुनचो

बड़े भाई बलभद्र आरू नानी बहिन सुभद्रा भगवान जगन्नाथ चो बायले महालछमी रूकमनी के नी सांगुन आपलो आया चो बहिन घरे सगा गेला । हुता आट दिन थेबुन घरे बोहड़ला । आट दिन ले महालछमी रूकमनी भगवान जगन्नाथ, बलभद्र आरू सुभद्रा के खुबे डगराउ आत, मान्तर नी भेटोन । तीनो भाई–बहिन घरे इले रूकमनी खुबे रीस होउ आत । भगवान जगन्नाथ फेर रूकमनी के मनाउ आत । एइ कथा चो हिसाप ने गोञ्चा तिहार मानु आत ।

ओड़यान चो पुरी सहर ने पहिल जगन्नाथ गुड़ी आसे । जसन ए पाठ ने आगे सांगलोर आसे कि हुताय जाउन बस्तर चो राजा पुरसोतम देव बर पाउन बस्तर ने गोञ्चा तिहार मानुक मुरयाला । जगन्नाथ पुरी ने गोञ्चा बेरा भारत आरू बिदेसमन ले लोग जाउ आत । आट दिन काजे जे गुड़ी ने भगवान जगन्नाथ, बलराम आरू सुभद्रा चो मूर्तिमन के संगाउन पुजा–पाठ करू आत, हुन गुड़ी के 'गुंडिचा मंडप'' बलु आत । आमचो हल्बी ने एचो अरथ होयदे – 'गोञ्चा मांडो' । पुरान चो कथा ने सांगलोर आसे कि पुरी ने जे राजा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इंद्रदुम्न पहिल जगन्नाथ गुड़ी बनालो, हुनचो रानी चो नाव 'गुंडिचा' रली मने । हुनि रानी चो नाव ने आट दिन काजे भगवानमन के मंडाउन पुजा–पाठ करतो बिती पुरी चो गुड़ी के 'गुंडिचा मंडप' नाव दिला । 'गुंडिचा' सब्द के आमचो बस्तर ने 'गोञ्चा' बलुक धरला, मान्तर आट दिन काजे भगवानमन चो मूर्ति के मंडाउन पुजा–पाठ करतो गुड़ी बला कि मांडो चो नाव 'गोञ्चा मांडो' नी होली । आमचो बस्तर ने जगन्नाथ रथ जातरा तिहार चो नाव 'गोञ्चा' होली आरू आट दिन काजे जे गुड़ी बला कि सार ने भगवानमन के मंडाउ आत, हुन सार के 'सिराहासार' बलु आत।

जगदलपुर ने राजा चो महल पुरे गोल बजार जगन्नाथ गुड़ी आसे। हल्बी ने जगन्नाथ गुड़ी के 'भगवान गुड़ी' बले बलु आत। एथा भगवान जगन्नाथ संगे हुनचो 'राम अवतार' आरू 'कल्कि अवतार' बलले कलि अवतार चो मूर्तिमन बले आसोत। जगदलपुर ने गोञ्चा बेरा मंडई बसु आय । उदलदाँय आनी–बानी चो बेभार करतो लोगमन सहरे एउ आत । खाजा, झुलना, फुगा बितामन एउ आत। ए जमाय बानी पिलामन के खुबे भाउ आय । सियानमन बले कएक किसम चो जमक घेनु आत। पिलामन आरू जुआन लेका–लेकीमन तुपकी खेलु आत ।

तुपकी आमचो बस्तर चो गोञ्चा चो चिना आय। राजासाई बेरा राजा आरू भगवान के परघातो काजे तोप चलाओत। हुनि हिसाप ने बस्तरयामन भगवान जगन्नाथ चो मान काजे तुपकी बजाउ आत। तोप चो नानी रूप तुपकी होली। तुपकी बनातो काजे बाँवसी बनातो बाँवस चो दुनो पाट चो गठमन के गोन्दुन नरी बनाउ आत । फेर गोटोक बाँवस काड़ी के हुन नरी ने भरतो असन चिकन बनाउ आत । बाँवस काड़ी ने गोटक पाट बाँवस चोय ढेटा बले पिन्दाउ आत । बाँवस नरी चो गोटक पाट ताड़ पाना नाहले बाँवस टाटी चो पोङ्गा बनाउन लगाउ आत । असन बनाउ आत तुपकी । तुपकी के बजातो काजे बाँवस नरी बलले तुपकी ने, पोङ्गा नी रलो बाटे पेङ्ग फर के भरून ढेटा बिती बाँवस काड़ी संगे नंगत बल करून ठेगलुआत । पेङ्ग पोङ्गा बाट ले बन्दुक गोली असन उधलु आय । उदलेदाँय तुपकी टाँय करून गरजु आय । तुपकी ले निकरलो पेङ्ग काकेय पावली जाले खुबे दुखु आय । ए तुपकी चो खेल आमचो बस्तर चो गोञ्चा के आउर बाट चो गोञ्चा ले भिने बनाउ आय । बस्तर के छांडुन आउर राज ने तुपकी नी खेलोत ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गोञ्चा तिहार काजे आमचो बस्तर चो सहर आरू गाँव–गाँव ले लोगमन एउ आत । गोञ्चा बेरा जमाय मिसुन हरिक–उदिम ले भगवान चो पुजा–पाठ करू आत । रथ झिकते काजे कोनी जात–धरम चो फरक नी होय । भगवान चो पुरे जमाय मनुक बराबर आत आरू एइ बिचार मने धरून रथ झिकुन आपलो भाईग के सहराउ आत । गोञ्चा के जमा बस्तरया गोटोक कुटुम असन होउन मानु आत ।

सब्दमन चो मायने; शब्दार्थ

तिहार – त्यौहार

धरमाति – धर्मात्मा, धार्मिक

मानिक – माणिक्य, कोरंडम

पेट–सँलगा – पेट के बल घिसटना

गुंडिचा – राजा इंद्रद्युम्न की रानी

पुरसोतम देव – बस्तर का राजा पुरूषोत्तम देव

फनस खुआ – कटहल का पका हुआ कोसा / कोवा

पेङ्ग – मालकांगिनी लता का फल, जिसे तुपकी में भरा जाता है ।

गजामुंग – भगवान जगन्नाथ को चढ़ाया जाने वाले अंकुरित मुंग का प्रसाद

सिराहासार – जगदलपुर में राजमहल, मावली मंदिर और जगन्नाथ मंदिर के बीच स्थित मण्डप, जहाँ गोञ्चा के समय भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियाँ रखी जाती हैं। यहीं दशहरे के समय 'जोगी' बैठता है।

इंद्रदुम्न – पौराणिक कथा के अनुसार अवंतिपुरी (प्राचीन उज्जैन) का तत्कालीन राजा इंद्रद्युम्न

सार – उप भवन, मुख्य भवन से लगा हुआ या परिसर अथवा अहाते में निर्मित छोटा भवन, जैसे–ढेकीसार, दुकानसार आदि।

तुपकी – बस्तर में जगन्नाथ रथयात्रा 'गोञ्चा' के समय खेला जाने वाला बाँस का विशेष खिलौना

राजासाई – राजा का शासन, राजतंत्र

ओड़यान – उड़ीसा प्रदेश

रथपति – रथ का स्वामी / मालिक

मांडा – मंडप

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

iLu vkmj vH;kl

बोध–प्रस्न

€ कक्छा चो पिलामन के दुय कुड़ा ने बाटुन गुरजी प्रस्नोत्तर कराओत । पिलामन नी जानले गुरजी सांगोत । गुरजी असन प्रस्नमन पुछोत :–

(1) जगन्नाथ रथ जातरा चो मुर कोन थाने होली ?

(2) बस्तर ने गोञ्चा कोन थाने होउ आय ?

(3) गोञ्चा रथ ने कित ठन चकामन होउ आत ?

(4) बस्तर चो गोञ्चा ने काय के बजाउन खेलु आत ?

iLu (1) [kky fy[kyk iLueu pk mRrj fn;kl %&

(क) जगन्नाथ पुरी ने रथ जातरा चो मुर कोन राजा करलो ?

(ख) बस्तर चो राजा पुरसोतम देव के भगवान जगन्नाथ काय बर दिला ?

(ग) गोञ्चा तिहार ने सिरि गोञ्चा काय दिने होउ आय ?

(घ) बोहड़ती गोञ्चा काय दिने होउ आय ?

(ङ) जगन्नाथ भगवान चो भाई–बहिन चो काय–काय नाव आय ?

iLu (2) fcpk:u mRrj fn;kl %&

क) गोञ्चा बेरा भगवान जगन्नाथ के काय–काय परसाद चेगाउ आत ?

(ख) तुपकी काय तीज चो बनाउ आत ?

(ग) जगदलपुर ने गोञ्चा बेरा आट दिन काजे भगवानमन के काहाँ मंडाउन पुजा–पाठ करू आत ?

(घ) गोञ्चा बेरा लोगमन सिराहासारे काय कथा सुनुआत ?

(ङ) गोञ्चा रथ चो कपड़ा काय–काय रंग चो होउ आय ?

(च) पेड्ग फर नी रले आमि तुपकी कसन बजातु ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भासा–तत्व आउर ब्याकरन

iLu (3) [kky fy [kyk lCneu d [kky pk okD;eu pk eyk Bkueu u fy [ku okD;eu d ijk djk %&

पेट सँलगा, कुकुसनाय, अलंगढिण्डा, खालामाता, डिडिगोड़ी

(क) मोट लोगमन ..... बसुक नी सकोत ।

(ख) राजा पुरसोतम देव ..... जगन्नाथ पुरी गेलो ।

(ग) नानी पिलामन ..... उबा होउ आत ।

(घ) लेकीमन ..... बोझा बोउन हिण्डु आत ।

(ङ) ..... बसुन भात–पेज खातोर आय ।

RGKSR6

iMu letk %&

ब्यंजनमन ने d /kkMh] p /kkMh] V /kkMh] r /kkMh आरू i /kkMh चो पाँचवाँ ब्यंजन बलले – ³] ´] .k ¼.½] u ¼U½ आरू e ¼E½ चो प्रयोग हुनि धाड़ी चो ब्यंजनमन संगे होउ आय । हुनि काजे ए पाठ ने गोञ्चा ने p चो पुरे ´ चो प्रयोग होलिसे । एथा u नाहले U चो प्रयोग गलत होयदे । नी समजुक होले गुरजी के पुछा ।

योग्यता बिस्तार

गुरजी पाठ चो दस धाड़ी इमला लिखाओत आरू अलटुन–पलटुन लेका–लेकीमन के जाँचुक बलोत । नी जानले आपन सायता करोत ।

ए पाठ ने सांगलो असन पाँचवाँ ब्यंजन बलले नासिक्य ब्यंजन चो आधा रूप चो प्रयोग होलो सब्दमन के गुरजी इमला लिखालो असन लिखाओत आरू जाँचुन समजाओत।

जसन :– गङ्गा–गंगा, ब्यञ्जन–ब्यंजन, मुण्ड–मुंड, मन्तर–मंतर,

चम्पा–चंपा । मांतर दखा :– डेंगा (डेँगा), गोंचा (गोँचा), हिंड (हिँड),

टेंडा (टेँडा), बेंदरा (बेँदरा) आरू टेंपो (टेँपो) नाईं, सही रूप आत – डेङ्गा, गोञ्चा, हिण्ड, बेन्दरा आरू टेम्पो ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 22

किताबें

किताबें हमारी सबसे गहरी मित्र हैं। किताबों से ही ज्ञान का प्रसार होता है। किताबें बिना किसी भेदभाव के सभी तक ज्ञान पहुँचाती हैं। किताबों से ही हमें पुरानी बातों की जानकारी मलती है। किसी देश के उत्थान–पतन की जानकारी भी किताबों से ही मिलती है। किताबों ने बहुत–से लोगों का जीवन बदल डाला है। हमें ऐसी किताबें पढ़नी चाहिए जो हमें प्रगति–पथ पर बढ़ने में प्रोत्साहित करें। प्रस्तुत कविता में किताबों के इन्हीं गुणों का उल्लेख किया गया है।

किताबें करती हैं बातें
बीते जमानों की,
दुनिया की, इंसानों की,
आज की, कल की,
एक–एक पल की,
खुशियों की, गमों की,
फूलों की, बमों की
प्यार की, भार की
जीत की, हार की
क्या तुम नहीं सुनोगे
इन किताबों की बातें ?

किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं
किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
किताबों में परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज़ है
किताबों में साइंस की आवाज़ है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान का भंडार है

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

क्या तुम इस संसार में
नहीं जाना चाहोगे ?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

शब्दार्थ

इंसान – मनुष्य साइंस – विज्ञान

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 किताबें पढ़ने से क्या लाभ है ?
प्रश्न 2 तुम्हारी लायब्रेरी में कौन–कौन सी किताबें हैं सूची बनाओ ?
प्रश्न 3 'किताबें तुम्हारे पास रहना चाहती हैं' कवि ने ऐसा क्यों कहा है ?
प्रश्न 4 किताबें प्रकृति के किन रहस्यों को खोलती हैं ?
प्रश्न 5 कवि ने किताबों के संसार को बड़ा क्यों बताया है ?
प्रश्न 6 तुम किताबों के संसार में जाना चाहोगे या नहीं? कारण बताते हुए इस प्रश्न का उत्तर लिखो।
प्रश्न 7 नीचे लिखी पंक्तियों को पूरा करो–
क. किताबों में चिड़ियाँ .....।
ख. किताबों में ज्ञान की .....।
ग. किताबें कुछ .....।
घ. किताबों में साइंस .....।
प्रश्न 8 तुमने कुछ किताबें अवश्य पढ़ी होंगी। उनमें से तुम्हें सबसे अच्छी किताब कौन–सी लगी ? उस किताब की कुछ अच्छी बातें लिखो।
प्रश्न 9 तुम्हें अपनी कक्षा की कौन–सी किताब सबसे कठिन लगती है और क्यों ?
प्रश्न 10 तुम अपनी किताबों में कैसी बातें पढ़ना पसंद करोगे ? क्या वे बातें तुम्हारी किताबों में हैं ? उदाहरण देकर लिखो।

भाषातत्व और व्याकरण

प्रश्न 1 इन शब्दों की जोड़ियाँ बनाओ–

चिड़ियाँ	लहलहाते हैं
खेत	सुनाते हैं
झरने	चहचहाती हैं
किस्से	गुनगुनाते हैं

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न 2 रिक्त स्थानों में सही शब्द सोचकर लिखो।

जैसे किताबों के पन्ने.

पेड़ों के	फूलों की .....
आकाश के	सागर की .....
वर्षा की	हिमालय की .....
	चिड़ियों की .....

प्रश्न 3 निम्नलिखित विदेशी शब्दों की हिन्दी शब्दों के साथ सही जोड़ियाँ मिलाओ–

किताबें	रहस्य
ज़माना	प्रसन्नता
राज़	दुख
खुशी	पुस्तकें
ग़म	कथा
किस्सा	युग

प्रश्न 4 निम्नलिखित समान उच्चारणवाले शब्दों को पढ़ो और वैसे ही दो–दो शब्द लिखो–

मार, हार, ..., ... जीत, मीत, ..., ...

कल, पल, ..., ... झरना, भरना, ..., ...

प्रश्न 5 'हार' शब्द के अक्षरों को अगर हम उलटकर रखें तो 'रहा' शब्द बनता है, जो सार्थक शब्द है। ऐसे चार शब्द (दो–दो अक्षरवाले) सोचकर लिखो जिनके अक्षर अगर उलटकर रखे जाएँ तो वे सार्थक शब्द बनेंगे।

रचना

- अपनी पसंद की पुस्तक के बारे में आठ वाक्य लिखो।

योग्यता–विस्तार

- पुस्तकालय से कहानी, कविता की पुस्तकें लेकर पढ़ो।
- कोई एक कहानी पढ़कर कक्षा में सुनाओ।
- किसी समाचार पत्र या पत्रिका में छपी कहानी को पढ़कर कक्षा में सुनाओ।

4YA3H2

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 23

डॉ. जगदीश चन्द्र बोस

भारतीय वैज्ञानिकों ने अपने अलौकिक आविष्कारों और अनुसंधानों से संसार को चमत्कृत किया है। डॉ. रमन, डॉ. श्रीनिवास रामानुजन की खोजों की ही तरह डॉ. जगदीश चन्द्र बोस की वनस्पतियों के संबंध में की गई खोज से संसार चमत्कृत हुआ। वृक्षों में भी जीवन होता है, यह तथ्य डॉ. बोस ने दुनिया को बताया। इस पाठ में हम डॉ. बोस का संक्षिप्त जीवन–परिचय और उनकी खोजों के संबंध में पढ़ेंगे।

सूर्य अस्त हो रहा था। चिड़ियाँ चहकती हुईं अपने–अपने घोंसलों में लौट रही थीं। ठंडक बढ़ती जा रही थी। गरम स्वेटर, मोजे, हॉफ पैण्ट पहने, हाथ में एक बेंत लिए विक्की अपने घर के बगीचे में टहल रहा था। वह कभी किसी पेड़ पर अपना बेंत जमा देता, कभी किसी फूलदार पौधे को झकझोर देता। उसके दादा जी बरामदे में बैठे चाय का घूँट ले रहे थे । उनकी दृष्टि विक्की की ओर ही थी। उसे पेड़–पौधों में उलझा देखकर वे बोले, ''विक्की, अब इधर आ जाओ। पौधों को मत छेड़ो। यह उनके आराम करने का समय है । ''

विक्की ने कहा, '' वाह दादा जी! आपने खूब कहा। मानो पेड़–पौधे भी सचमुच आराम करते हैं, सोते हैं।''

''हाँ, वे सचमुच आराम करते हैं, रात को सोते भी हैं और प्रातः जाग जाते हैं'', दादा जी ने विक्की को समझाया।

''दादा जी, यह आपने नई बात बताई। भला पेड़–पौधे भी कहीं सोते हैं! आपने कैसे जाना कि पेड़–पौधे सोते हैं ? वे तो रात को भी हिलते–डुलते रहते हैं। सोनेवाला आदमी तो हिलता–डुलता नहीं।''

''अच्छा, यहाँ आओ। मैं तुम्हें इसकी कहानी सुनाता हूँ''– दादा जी ने विक्की से कहा।

विक्की को कहानी सुनने का बड़ा शौक था। वह तुरंत आकर दादा जी की गोद में बैठ गया।

''अब सुनाइए कहानी–'' वह दादा जी से बोला ।

शिक्षण–संकेत : *पेड़–पौधों के संबंध में चर्चा कीजिए। पेड़–पौधे मानव की तरह पैदा होते हैं, बढ़ते हैं, मरते हैं। उन पर भी सर्दी, गर्मी का प्रभाव पड़ता है। तोड़ने या काटने पर उन्हें भी पीड़ा होती है। कभी ऐसी बातें कल्पना की उड़ान मानी जाती थीं, बाद में भारतीय वैज्ञानिक डॉ. जगदीश चंद्र बोस ने अपने अनुसंधान से इन बातों को सत्य कर दिखाया। कक्षा में इन बातों की चर्चा करें।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दादा जी ने चाय का प्याला रख दिया। वे एक हाथ से उसकी पीठ सहलाते हुए कहानी कहने लगे। ''उस समय अपना देश बहुत बड़ा था। तब बांग्लादेश भी भारत का भाग हुआ करता था। बांग्लादेश की राजधानी ढाका है। ढाका के पास एक गाँव है, राढ़ीरवाल। वहाँ एक डिप्टी कलेक्टर के घर एक बालक का जन्म हुआ। उसका नाम रखा गया जगदीश चंद्र। जगदीश की पाठशाला में किसानों के बच्चे खेती–बाड़ी और पेड़–पौधों के बारे में अकसर बातें करते रहते थे। इस कारण बचपन में ही जगदीश चंद्र की रुचि पेड़–पौधों में हो गई। ''

''बचपन में जगदीश ने देखा कि छुईमुई नाम के पौधे की पत्तियाँ हाथ लगाते ही सिकुड़ जाती हैं और थोड़ी देर के बाद वे पुनः खिल जाती हैं। सूरजमुखी नाम के पौधे के फूल का मुँह सदैव सूरज के सामने होता है। इस बालक ने बड़े होकर पेड़–पौधों पर बहुत–से प्रयोग करके यह सिद्ध कर दिया था कि पेड़–पौधे भी हम सबकी तरह सोते, जागते हैं। उन्हें भी भोजन और पानी चाहिए। वे भी सुखी और दुखी होते हैं। वे भी रोते हैं।''

''दादा जी, आप तो जगदीश चंद्र बोस के बारे में पूरी बातें बताइए।'' विक्की ने मचलते हुए कहा।

''अच्छा, तो सुनो। जगदीश चंद्र जब छोटे थे तो रोते बहुत थे– तुम्हारी तरह।'', दादा जी ने हँसते हुए कहा।

''मैं कहाँ रोता हूँ।''– विक्की बोला।

''तुम्हें क्या पता ? तुम तो तब बहुत छोटे थे। खैर! उसके माता–पिता ने उसके लिए एक तरकीब सोची। रात में जैसे ही वे रोना शुरू करते, वैसे ही ग्रामोफोन पर कोई गाना बजा दिया जाता था। गाना सुनते ही बालक जगदीश का रोना बंद हो जाता था और वह सो जाता था। जगदीश चंद्र की प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। पाठशाला के आसपास खूब पेड़–पौधे थे। बालक जगदीश का उनसे खूब लगाव हो गया था। गाँव की पढ़ाई पूरी होने पर जगदीश को आगे की शिक्षा के लिए कोलकाता भेज दिया गया। वे पढ़ने में बहुत होशियार थे, जैसे तुम हो।'' विक्की यह सुनकर बहुत खुश हो गया। ''फिर क्या हुआ?''– उसने पूछा ।

''जब कोलकाता में उसने पढ़ाई पूरी कर ली, उसे आगे की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड भेजा गया। वहाँ पढ़ते हुए उसका सम्पर्क बड़े–बड़े वैज्ञानिकों से हुआ।''

''फिर क्या वे वहीं रहने लगे?'' विक्की ने पूछा।

''नहीं, वहाँ की पढ़ाई पूरी करके वे वापस कोलकाता आ गए और वहाँ के प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रोफेसर बन गए। बड़ी कक्षाओं को जो टीचर पढ़ाते हैं, उन्हें प्रोफेसर कहते हैं। जगदीश चंद्र अपने सिद्धांत के बड़े पक्के थे। वे गलत काम करते भी नहीं थे और गलत बात मानते भी नहीं थे। उस समय अपने देश पर अँग्रेजों का राज था। अँग्रेज भारतीयों पर तरह–तरह से अत्याचार करते थे। यह कॉलेज उन्हीं का था। उन्होंने यहाँ प्रोफेसरों के लिए दो नियम बना रखे थे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अँग्रेज प्रोफेसरों को तो वेतन अधिक दिया जाता था, लेकिन भारतीय प्रोफेसरों को कम वेतन मिलता था। जगदीश चंद्र को यह दोहरा व्यवहार पसंद नहीं आया। उन्होंने इसका विरोध किया। कई वर्षों तक उन्होंने वेतन नहीं लिया, लेकिन पूरी ईमानदारी से अपना काम किया। अंत में कॉलेजवालों को झुकना पड़ा।''

''दादा जी, आपने यह तो बताया ही नहीं कि उन्होंने पेड़–पौधों पर क्या प्रयोग किए?''– विक्की ने पूछा।

''हाँ, वही तो बता रहा हूँ। उन्होंने अपना पूरा ध्यान पेड़–पौधों के जीवन के अध्ययन पर लगा दिया। उन्होंने इसके लिए कई यंत्र बनाए। इन यंत्रों की सहायता से उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि पेड़–पौधों में भी जीवन होता है। उन्हें भी हमारी तरह खाना चाहिए, वायु और सूर्य का प्रकाश चाहिए। उन पर भी गर्मी और सर्दी का प्रभाव पड़ता है। उन्हें भी सुख और दुःख होता है। आदमी और पशु–पक्षियों की तरह वे भी मरते हैं।''

जगदीश चंद्र बोस द्वारा की गई खोजें संसार भर की प्रसिद्ध पत्रिकाओं में छपीं। लोगों को जब इसकी जानकारी मिली तो दुनिया भर में हड़कंप मच गया। कुछ वैज्ञानिकों को उनकी खोज पर विश्वास नहीं हुआ। उन्हें फ्रांस बुलाया गया और वहाँ अपने प्रयोग सिद्ध करने के लिए कहा गया। उन्होंने कहा, ''जहर खाने से आदमी मर जाता है। यदि किसी पौधे पर जहर डाला जाए तो वह भी मुरझा जाएगा।''

तुरंत वहाँ जहर मँगाया गया। वह जहर एक पौधे पर डाला गया तो उस पौधे पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ा। डॉ. जगदीश चंद्र बोस को तो अपने प्रयोग पर पूरा विश्वास था। उन्होंने कहा, ''यदि यह जहर पौधे पर कोई प्रभाव नहीं डाल सका तो मेरे ऊपर भी नहीं डाल सकेगा।'' यह कहकर उन्होंने बचा जहर स्वयं पी लिया। सचमुच उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ क्योंकि वह जहर था ही नहीं। यूरोप के कुछ वैज्ञानिकों ने उन्हें नीचा दिखाने के लिए यह षड्यंत्र रचा था। वे सब बहुत लज्जित हुए।

''डॉ. जगदीश चंद्र बोस सही अर्थों में एक वैज्ञानिक थे। विज्ञान के प्रचार–प्रसार के लिए उन्होंने 'बसु विज्ञान मंदिर' नामक एक संस्था की स्थापना की। उन्होंने अपने प्रयोगों से अपने देश का नाम रोशन किया। अब तो तुम्हें विश्वास हो गया कि पेड़–पौधों में भी जीवन होता है।''

''हाँ, दादा जी, अब मैं जान गया। अब मैं किसी पेड़–पौधे को नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।''

शब्दार्थ

जमा देना	–	व्यवस्थित करना	सदैव	–	हमेशा
प्रारंभिक	–	शुरू का, सबसे पहला	वायु	–	हवा
संपर्क	–	मेल–मिलाप	टीचर	–	शिक्षक
वेतन	–	तनख्वाह			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नीचा दिखाना	–	लज्जित करना
नाम रोशन करना	–	प्रसिद्ध करना
स्थापना	–	खड़ा करना, जमाना, नया कार्य प्रारंभ करना
प्रोफेसर	–	कॉलेज में पढ़ानेवाला अनुभवी शिक्षक
वैज्ञानिक	–	विज्ञान का ज्ञान रखनेवाला

टिप्पणी

बांग्लादेश– 15 अगस्त 1947 को भारत के दो टुकड़े हुए, भारत और पाकिस्तान। पाकिस्तान पूर्व में बंगाल का क्षेत्र और उत्तर में पंजाब का क्षेत्र काटकर बना। जब वहाँ अगले चुनाव हुए तो पूर्वी बंगाल के श्री मुजीबुर्रहमान बहुमत से जीते। इसलिए उन्हें प्रधानमंत्री बनाना चाहिए था, लेकिन नहीं बनाया गया। इस पर वहाँ जबर्दस्त विद्रोह हुआ। भारत ने भी उन्हें सहायता दी। पूर्वी बंगाल पाकिस्तान से अलग हो गया। उसका नाम बांग्लादेश पड़ा। अब वह अलग स्वतंत्र राष्ट्र है।

छुईमुई– एक झाड़ीनुमा पौधा। इस पौधे की विशेषता यह है कि इसकी पत्तियाँ हाथ लगाते ही सिकुड़ जाती हैं और थोड़ी देर बाद पूर्व की भाँति खिल जाती हैं।

ग्रामोफोन–एक वाद्य–यंत्र जिससे रिकार्ड बजाया जाता है।

पेरिस– यूरोप में फ्रांस नाम का एक प्रसिद्ध देश है। पेरिस उसकी राजधानी है।

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 सूरजमुखी की क्या विशेषता है ?

प्रश्न 2 बालक जगदीश को रोने से चुप करने के लिए उनके माता–पिता ने क्या तरकीब निकाली ?

प्रश्न 3 जगदीश चंद्र बोस ने अपनी उच्च शिक्षा कहाँ प्राप्त की ?

प्रश्न 4 ''जगदीश चंद्र बोस बड़े स्वाभिमानी थे'' इस कथन को तुम उनके जीवन के किस प्रसंग से सिद्ध करोगे ?

प्रश्न 5 नीचे लिखे कथनों में से सही कथन के लिए सत्य और गलत कथन के लिए असत्य लिखो।

क. जगदीश चंद्र बोस की प्रारंभिक शिक्षा हैदराबाद में हुई।

ख. जगदीश चंद्र बोस का जन्म कोलकाता के पास एक गाँव में हुआ था।

ग. बचपन से ही जीव–जंतुओं में जगदीश चंद्र बोस की रुचि थी।

घ. जगदीश चंद्र बोस एक स्वाभिमानी वैज्ञानिक थे।

ङ. फ्रांस के वैज्ञानिकों ने जगदीश चंद्र बोस को नीचा दिखाने के लिए एक षड्यंत्र रचा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न 6 डॉ. जगदीश चंद्र बोस के जीवन की निम्नलिखित घटनाओं को क्रमवार लिखो।

क. डॉ. जगदीश चंद्र बोस ने 'बसु विज्ञान मंदिर' की स्थापना की।

ख. डॉ. जगदीश चंद्र बोस को पेरिस में वहाँ के वैज्ञानिकों ने नीचा दिखाने का प्रयास किया।

ग. जगदीश चंद्र बोस प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रोफेसर बने।

घ. जगदीश चंद्र बोस की प्राथमिक शाला के आस–पास बहुत से पेड़–पौधे थे।

प्रश्न 7 किसी पौधे को यदि पानी न दें तो उस पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

प्रश्न 8 किसी पौधे को उखाड़ देने पर वह क्यों मुरझा जाता है?

भाषातत्व और व्याकरण

- कक्षा को दो समूहों में बाँटिए। एक समूह का कोई बच्चा पाठ में से श्रुतलेख के लिए एक अनुच्छेद बोले और शेष बच्चे लिखें। बाद में अपनी अभ्यास–पुस्तिकाएँ अदल–बदलकर लिखे हुए की जाँच पुस्तक में देखकर एक–दूसरे से करवाएँ।

समझो

- इन वाक्यों को पढ़ो और समझो।

यह आपने नई बात बताई।

पाठशाला के आसपास खूब पेड़–पौधे थे।

'नई बात' और 'खूब पेड़–पौधे' में 'नई' और 'खूब' क्रमशः 'बात' और 'पेड़–पौधे' की विशेषता बता रहे हैं। **जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं वे विशेषण और जिनकी विशेषता बताई जाती है, वे विशेष्य कहलाते हैं।**

प्रश्न 1 नीचे लिखी चीजों की विशेषता बताने वाले शब्द सोचकर लिखो –

..... हलवा ..... पेड़ ..... नमक ..... चींटी

..... पत्थर ..... कुरता ..... चश्मा ..... झंडा

पढ़ो और समझो

- पढ़ना–पढ़ाई, खोजना–खोज, झुकना–झुकाव।

पढ़ना, खोजना, झुकना क्रियाएँ हैं। इनसे भाववाचक संज्ञाएँ बनी हैं पढ़ाई, खोज और झुकाव।

प्रश्न 2 निम्नलिखित क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाओ :

हँसना, बोलना, चलना, कूदना, लिखना।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न 3 नीचे लिखे शब्दों को शुद्ध करके लिखो–

विग्यान, विज्ञानिक, देहाँत, प्रारंभीक, परणाम, सुरजमूखी।

समझो

- तुम पढ़ चुके हो कि 'बुद्ध' को हम 'बुद्‌ध' भी लिख सकते हैं। 'विद्या' को हम 'विद्‌या' भी लिख सकते हैं।

प्रश्न 4 अब इन शब्दों को दूसरे प्रकार से लिखो।

विरुद्ध, विद्यालय, सिद्धान्त, विद्वान, चिह्न।

प्रश्न 5 'धोखा' शब्द में 'बाज' जोड़कर 'धोखेबाज' शब्द बना है। नीचे इसी प्रकार के कुछ शब्दों में दिए गए शब्दांश जोड़कर नए शब्द बनाओ और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

लकड़ी + हारा, भारत + ईय, प्रारंभ + इक, ईमान + दार, घूमना + अक्कड़ ।

रचना

- डॉ. जगदीश चंद्र बोस के अलावा भारत में और भी अनेक वैज्ञानिक हुए हैं। किन्हीं दो के संबंध में पाँच–पाँच वाक्य लिखो।

गतिविधि

- अपने विद्यालय के बगीचे में या अन्यत्र सूरजमुखी का पौधा देखो। क्या इसके फूल का मुँह सदा सूर्य की ओर रहता है ?
- जैसे हमारे जीवन के लिए सूर्य की रोशनी और वायु आवश्यक है, उसी प्रकार पेड़–पौधों के लिए भी सूर्य की रोशनी और वायु आवश्यक है। दो अलग–अलग पौधे लो। एक को काँच के बर्तन में बंद करके रखो और दूसरे को खुले में रखो। क्या अंतर आता है ? देखो।
- जल के बिना हम अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकते। पौधे भी जल के बिना जीवित नहीं रह सकते। दो पौधे लो। एक को रोज पानी से सींचो, दूसरे में पानी मत डालो। दोनों में क्या अंतर आता है ? देखो।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ 24

इंसाफ

तुम लोगों ने वह तस्वीर देखी होगी जिसमें न्यायाधीश को आँखों पर पट्टी बाँधकर तराजू लिए हुए चित्रित किया गया है। तराजू के दोनों पलड़े सम पर रहते हैं। इसका अर्थ यह है कि न्यायाधीश की दृष्टि में सब बराबर रहते हैं; इसीलिए उसका न्याय निष्पक्ष रहता है। इस एकांकी में ऐसे ही न्याय का वर्णन किया गया है।

पात्र

अली – बगदाद का एक नाई

हसन – बगदाद का एक लकड़हारा

खलीफा – बगदाद का सम्राट

नौकर

पहला दृश्य

(स्थान– बगदाद की एक सड़क पर अली नाई की दुकान। समय–दोपहर। अली नाई अपनी दुकान पर बैठा अपना उस्तरा पैना कर रहा है। अपने गधे पर लकड़ी लादे लकड़हारे हसन का प्रवेश।)

हसन – लकड़ी ले लो, लकड़ी। अच्छी सूखी लकड़ी ले लो।

अली – ओ लकड़हारे ! अरे भाई लकड़हारे, इधर आना।

हसन – (अपने गधे को रोककर अली के पास आता है।) भाई साहब, क्या आपने ही मुझे आवाज लगाई थी ? क्या आपको लकड़ी चाहिए ?

अली – हाँ भाई, बुलाया तो इसीलिए है। लकड़ियाँ सूखी हैं ? गीली तो नहीं हैं ?

हसन – अजी साहब, आप खुद देख लीजिए। ऐसी सूखी और ऐसी अच्छी लकड़ी किसी के पास नहीं मिलेगी।

शिक्षण–संकेत : *न्याय की दृष्टि में सब बराबर होते हैं– कोई छोटा, कोई बड़ा नहीं। अपराध करने पर न्याय न तो अधिकारी को क्षमा करता है और न कर्मचारी को। न्यायाधीश की दृष्टि समान रहती है। वह छोटे–बड़े का भेद नहीं करता। इस पाठ में यही दर्शाया गया है। बालसभा में इस एकांकी का मंचन कराएँ।*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अली – ठीक है, मैं तुम्हारी बात का भरोसा किए लेता हूँ। इस गधे पर लदी सारी लकड़ियों का कितना दाम चाहिए ?

हसन – सारी लकड़ियों का दाम पाँच शकाल है।

अली – पाँच शकाल! हैं तो ज्यादा, पर चलो मुझे मंजूर है। गधे पर की सारी लकड़ियों का दाम पाँच शकाल तुम्हें मिलेगा। उतारो लकड़ी।

हसन – ठीक है। मैं अभी लकड़ियाँ उतारता हूँ।

(हसन गधे पर से लकड़ियाँ उतारकर दुकान के पास ढेर लगा देता है।)

हसन – लीजिए, मैंने सारी लकड़ियाँ उतारकर रख दीं। अब आप दाम चुका दीजिए।

अली – तुमने गधे पर रखी सारी लकड़ियाँ उतारकर रख दीं न ?

हसन – जी हाँ, सब लकड़ियाँ उतार दीं। हाथ कंगन को आरसी क्या ? आप खुद देख लीजिए।

अली – ठीक है, मैं भी देख लूँ।

(दुकान से उतरकर गधे के पास जाता है। गधे की पीठ पर लकड़ी की बनी काठी को देखकर)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अरे, यह क्यों नहीं उतारी ? यह भी तो लकड़ी ही है।

हसन – हुजूर, यह लकड़ी की तो है, लेकिन यह गधे की काठी है, जीन है। यह जलाने के लिए थोड़े ही होती है।

अली – मियाँ लकड़हारे, जो बात तय हुई थी, उसे जरा याद कीजिए। मैंने कहा था कि गधे पर की सारी लकड़ियों का दाम पाँच शकाल होगा। यह भी तो लकड़ी की ही है। इसे भी उतारिए।

हसन – अजी साहब! क्यों गरीब आदमी के साथ ठिठोली करते हो ? मेरा और अपना समय आप क्यों बर्बाद कर रहे हैं ? मुझे दाम दीजिए जिससे मैं अपने घर जाऊँ।

अली – देखो दोस्त! यह ठिठोली और मज़ाक की बात नहीं है। जो सौदा हुआ है, उसे आप भी निबाहिए, मैं भी निबाहूँगा। जब तक यह काठी उतारकर यहाँ नहीं रखते, तब तक मैं एक शकाल भी नहीं दूँगा।

हसन – (क्रोध में भरकर) यह आप क्या कह रहे हैं ? आप तो पक्के धोखेबाज लगते हैं। क्या आज तक किसी ने काठी भी लकड़ियों के साथ बेची है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अली – (हाथ में एक लकड़ी उठाकर) अबे बदतमीज! तुझे बोलने का भी ढंग नहीं मालूम। मुझे गालियाँ बक रहा है। यह ले, यह ले तेरा दाम।

(अली, हसन को लकड़ी से मारता है। हसन बचता हुआ भागता है। अली गधे की पीठ से काठी उतार लेता है और अपनी दुकान पर जाकर बैठ जाता है। हसन थोड़ी देर में अपने गधे को ले जाता है।)

दूसरा दृश्य

(स्थान– खलीफा का दरबार। खलीफा एक ऊँचे सिंहासन पर बैठे हैं। आसपास सिपाही, मुंसिफ आदि बैठे हैं। दरबान आता है।)

दरबान – हुजूर! द्वार पर एक फरियादी आया है। कहता है, मेरे साथ अन्याय हुआ है।

खलीफा – उसे अंदर आने दो।

(हसन अंदर आता है।)

हसन – जहाँपनाह! इंसाफ कीजिए।

खलीफा – बोलो, क्या बात है ? किसने तुम्हारे साथ बेइंसाफी की है ?

हसन – हुजूर! मैं लकड़ी बेचने के लिए देहात से आया था। बाजार में जब मैं अली नाई की दुकान के पास से गुजरा तो उसने लकड़ी का सौदा किया । मैंने सारी लकड़ी पाँच शकाल में देना मंजूर कर लिया। पाँच शकाल में लकड़ियों के साथ उसने काठी भी उतार ली। मुझे मारा और दाम भी नहीं दिया।

खलीफा – उसने काठी क्यों उतार ली ?

हसन – हुजूर, वह कहने लगा कि काठी लकड़ी की बनी है, इसलिए मेरे सौदे में आती है।

खलीफा – तो काठी लकड़ी की बनी थी ?

हसन – जी हाँ, जहाँपनाह!

खलीफा – भाई, उसने तुम्हारे साथ धोखा तो किया लेकिन उसका कहना भी ठीक है। कानून के तहत उसके खिलाफ कुछ नहीं किया जा सकता। लेकिन तुम्हारे साथ बेइंसाफी तो हुई है। अच्छा, इधर आकर मेरी बात सुनो।

(हसन खलीफा के पास जाता है। खलीफा उसके कान में कुछ कहते हैं। हसन बाहर चला जाता है।)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तीसरा दृश्य

(अली अपनी दुकान में बैठा अपना उस्तरा तेज़ कर रहा है। हसन का दुकान में प्रवेश।)

अली – (पहचानकर) क्यों भाईजान, कैसे आए? पुरानी बात भूल जाइए। क्या आपको हजामत बनवानी है?

हसन – दोस्त अली! उस दिन तो गलती मेरी ही थी। मुझे उसका नतीजा मिल गया। मैं तो आज हजामत बनवाने आया हूँ। मेरा एक साथी और है। उसकी भी हजामत बनानी है।

अली – अरे भाई, आओ, आओ। हजामत बनाना तो मेरा पेशा ही है।

हसन – दोनों की हजामत बनाने की मजदूरी क्या होगी?

अली – दोनों की हजामत के लिए एक शकाल दे दीजिए।

हसन – ठीक है। पहले मेरी हजामत बना दीजिए।

(अली हसन के बाल काटता है। बाल काटकर)

अली – लीजिए, आपकी हजामत बन गई। अपने साथी को भी बुला लीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हसन – मैं अभी उसे लेकर आता हूँ।

(बाहर जाता है और गधे की रस्सी पकड़े हुए उसे अंदर ले आता है।)

हसन – लो भाईजान! मेरा साथी भी आ गया। इसकी हजामत भी बना दीजिए।

अली – अरे, क्या गधे के बाल कटवाएगा?

हसन – जी हाँ, यही तो मेरा साथी है। इसी के तो बाल कटवाने हैं।

अली – या अल्लाह! यह क्या कहता है? अरे बेवकूफ, क्या कभी गधे के भी बाल काटे जाते हैं? तूने फिर बेवकूफी की बात की। पहले मेरे हाथों मार खा चुका है। भाग यहाँ से नहीं तो हड्डी–पसली तोड़कर रख दूँगा।

हसन – भाईजान! इसमें मारने–पीटने की क्या बात है? सौदा तो सौदा ही होता है।

अली – अबे! कानून मत बघार। यहाँ से सीधे भाग जा, जल्दी कर।

हसन – अच्छा जाता तो हूँ, पर गरीब को सताना ठीक नहीं है।

(हसन गधे को लेकर चला जाता है।)

चौथा दृश्य

(स्थान– खलीफा का दरबार। खलीफा अपने सिंहासन पर बैठे हैं। हसन उनके सामने हाजिर होता है।)

खलीफा – क्यों भाई! क्या तुमने मेरे कहे मुताबिक काम किया?

हसन – जी हाँ, जहाँपनाह! आज अली नाई ने मेरे और मेरे साथी के बाल एक शकाल में काटना मंजूर किया था। उसने मेरे बाल तो काट दिए पर मेरे साथी के बाल नहीं काटे और मुझे और मेरे साथी को अपनी दुकान से बाहर निकाल दिया।

खलीफा – ठीक है। अब तुम्हारे साथ इंसाफ होगा। (एक सिपाही से) अली नाई को फौरन दरबार में हाजिर किया जाए। उससे अपने सारे औजार भी साथ लाने को कहा जाए।

(सिपाही जाता है। थोड़ी देर में वह अली नाई को अपने साथ लेकर आता है।)

अली – जहाँपनाह, मेरे लिए क्या हुक्म है ?

खलीफा – क्या तुम्हारा ही नाम अली नाई है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अली – जी हाँ, जहाँपनाह।

खलीफा – तुम्हारे खिलाफ यह आदमी आरोप लगा रहा है कि तुमने आज सुबह इसके तथा इसके साथी के बाल काटने का सौदा किया था, परन्तु बाद में तुम मुकर गए। क्या यह सच है ?

अली – सरकार, मैंने इसके बाल काट दिए, लेकिन यह अपने साथी के रूप में एक गधे को ले आया। आप ही सोचिए हुजूर, क्या कभी गधे की भी हजामत होती है ?

खलीफा – तुम ठीक कहते हो, गधे की हजामत कभी नहीं होती। पर क्या तुमने कभी यह भी सुना है कि गधे पर रखी काठी भी लकड़ियों में गिनी जाती है ? अगर यह ठीक है तो गधा भी आदमी का साथी हो सकता है और उसके भी बाल बनवाए जा सकते हैं। (अली चुप रहता है।)

खलीफा – अब अच्छा यही है कि इस गधे के सारे बाल इसी समय साफ कर डालो।

(अली मुँह लटकाए बाहर जाता है और गधे पर पहले साबुन मलता है और फिर उसके बाल काटता है। गधे की हजामत बनाने के बाद वह अंदर आता है।)

अली – हुजूर, मैंने आपके हुक्म का पालन कर दिया।

खलीफा – देखो अली, भला आदमी कभी गरीब को नहीं सताता। आइंदा के लिए मेरी बात गाँठ बाँध लेना। (अली नाई खलीफा को सलाम करके जाता है।)

खलीफा – (हसन से) हसन भाई, इधर आइए। अली ने आपके साथ जो बदसलूक किया, उसका नतीजा उसे मिल गया। तुम्हारी काठी का दाम तुम्हें मिल जाएगा। (खजांची से) खजांची, हसन को दस मोहरें दे दी जायँ। (हसन बहुत प्रसन्न होता है। वह मोहरें लेकर खलीफा को दुआ देता हुआ चला जाता है।)

शब्दार्थ

उस्तरा	–	नाई का छुरा	आरोप लगाना	–	दोष लगाना
इंसाफ	–	न्याय	मुंसिफ	–	न्यायाधीश
जहाँपनाह	–	बादशाह, सम्राट	बेइंसाफी	–	अन्याय
शकाल	–	एक सिक्का, जो बगदाद में चलता है, जैसे हमारे यहाँ रुपया चलता है।			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ठिठोली करना	–	मज़ाक करना, हँसी करना
राह लेना	–	अपने रास्ते चले जाना
मखौल उड़ाना	–	मज़ाक उड़ाना
आइंदा	–	भविष्य में, आगे कभी
बदसलूक	–	बुरा बर्ताव
हड्डी–पसली तोड़ना	–	बहुत पीटना
काठी	–	घोड़े या गधे पर रखी जाने वाली जीन
जहाँपनाह	–	संसार को आश्रय देने वाला (बादशाह के लिए संबोधन है)
दुआ देना	–	प्रार्थना करना, आशीर्वाद देना
दरबान	–	दरबार का सेवक
मुकर जाना	–	कही हुई बात से हट जाना

टिप्पणी :

जहाँपनाह – मुसलमान बादशाहों के लिए सम्बोधन, जिसका अर्थ होता है जगत् का आश्रयदाता।

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 अली और हसन में झगड़ा किस बात पर उठा ?

प्रश्न 2 लकड़ी की काठी की बात पर खलीफा ने न्याय करने के बाद क्या कहा ?

प्रश्न 3 अली को अंत में गधे की हजामत क्यों बनानी पड़ी ?

प्रश्न 4 अली ने लकड़ियों के साथ ही काठी भी ले ली। तुम्हारी राय में अली का काम उचित था या अनुचित ? क्यों ?

प्रश्न 5 नीचे लिखे प्रश्नों के तीन–तीन उत्तर दिए गए हैं। सही उत्तर चुनकर लिखो।

क. अली के द्वारा लकड़ियों के साथ लकड़ी की काठी माँगना नियमानुसार–

(क) सही था (ख) गलत था (ग) पता नहीं

ख. अंत में अली को हसन के गधे की हज़ामत बनानी पड़ी?

(क) स्वयं की मर्जी से

(ख) हसन के कहने पर

(ग) खलीफा के कहने पर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भाषातत्व और व्याकरण

- शिक्षक नीचे दिए शब्द बोलें और बच्चों से श्रुतिलेख लिखवाएँ।

  जहाँपनाह, खलीफा, लकड़हारा, धोखेबाज, दुकान, बाज़ार, अल्लाह, खजांची।

- बच्चे ऊपर दिए शब्दों पर एक–एक वाक्य बनाकर बोलें।

प्रश्न 1 आदरसूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों को फिर से लिखो।

जैसे– क्या तुमने ही मुझे आवाज़ लगाई?

क्या आपने ही मुझे आवाज़ लगाई?

क. जो सौदा हुआ है, उसे तुम भी निभाओ।

ख. तुम खुद देख लो।

ग. अरे, क्या गधे के बाल कटवाएगा ?

घ. यह क्या कहता है ?

प्रश्न 2 'तुमने गधे पर रखी सारी लकड़ियाँ उतारकर रख दीं न?' इस वाक्य को समझो और इसका अर्थ लिखो।

प्रश्न 3 इन शब्दों के हिन्दी में समान अर्थवाले शब्द लिखो :

मंजूर, हाजिर, खुद, गरीब, हुजूर, खिलाफ।

प्रश्न 4 क. 'हाथ कंगन को आरसी क्या' यह एक कहावत है। इसका अर्थ है, जो चीज हमारे सामने है उसे बताने के लिए प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं। यह कहावत इस पाठ में प्रयोग की गई है। इसका उचित प्रसंग में अपने वाक्य में प्रयोग करो।

ख. अपनी बोली की कोई एक कहावत अर्थ सहित लिखो और उसे उचित प्रसंग में अपने वाक्य में प्रयोग करो।

प्रश्न 5 इन वाक्यों को उनके सम्मुख दर्शाए वाक्यों में बदलो।

क. उतारो लकड़ी। (आदरसूचक वाक्य में)

ख. अब तुम दाम चुकाओ। (आदरसूचक वाक्य में)

ग. अली दुकान से उतरकर गधे के पास जाता है। (भूतकाल में)

घ. तुमने गधे पर रखी सारी लकड़ियाँ उतारकर रख दीं । (प्रश्नवाचक में)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न 6 इन शब्दों में से सही शब्द चुनकर लिखो :

लकडियाँ / लकड़ियाँ, विद्याथीयों / विद्यार्थियों, दृश्य / द्रश्य, ढेर / ढ़ेर, व्दार / द्वार, थोडी / थोड़ी, पाँच / पांच;

रचना

- तुम्हारे आसपास के लोग अपने झगड़े सुलझाने कहाँ जाते है? उसके बारे में लिखो।

गतिविधि

- अपने शिक्षक के मार्गदर्शन में इस एकांकी का मंचन करो।
- इस एकांकी का शीर्षक है 'इंसाफ'। क्या इसका कोई और भी शीर्षक हो सकता है ? सोचो और लिखो।

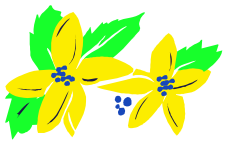

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पुनरावृत्ति के प्रश्न

32KJ5H

uhp nh xb dgkuh dk i<k &

एक आदमी किसी गाँव में पहली बार आया था। गाँव में तीन रास्ते थे। उसने एक लड़के से पूछा, "क्यों भाई, वकील साहब के घर को कौन–सा रास्ता जाता है?"

लड़के को मजाक सूझा उसने कहा, "इन तीनों में से कोई भी रास्ता नहीं जाता।"

"तो कौन–सा रास्ता जाता है?"

"कोई नहीं।"

"क्या कहते हो बेटे? वकील साहब इसी गाँव में रहते हैं न?"

"हाँ, रहते तो इसी गाँव में हैं।"

"तो कोई रास्ता तो उनके घर तक जाता होगा?"

आदमी ने हैरान होकर पूछा।

लड़के ने उत्तर दिया, "यह सड़क और रास्ते यहीं रहते हैं। ये कहीं नहीं जाते। ये बेचारे तो बोल ही नहीं सकते, लेकिन मैं आपको वह रास्ता बता सकता हूँ, जिस पर चलकर आप वकील साहब के घर तक पहुँच जाएँगे।

लड़के की बात सुनकर आदमी भी हँस दिया और बोला, "तुमने सही कहा बेटा, अगली बार मैं सोच–समझकर सवाल पूछूँगा।"

i'u 1- uhp fn, x, ç'uk d lgh mŸkjk ij ?kjk cukvk &

1- vkneh dk dgk tkuk Fkk\

क. लड़के के घर में

ख. वकील के घर में

ग. गाँव में

घ. रास्ते में

2- yMd dh ckr lqudj vkneh D;k gql fn;k\

क. वह उलझ गया था।

ख. उसे अपने सवाल की कमी समझ में आ गई थी।

ग. उसे सही रास्ते का पता चल गया था।

घ. उसे लगा लड़का चुटकुला सुना रहा है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3- fn, x, vuPNn e ç;Dr bue l dku&lk 'kCn lKk ugh g\

क. वकील

ख. आदमी

ग. गाँव

घ. वह

4- vkneh u gjku gkdj D;k iNk\

क. वकील साहब के घर को कौन–सा रास्ता जाता है?

ख. वकील साहब इसी गाँव में रहते हैं न?

ग. कोई रास्ता तो उनके घर तक जाता होगा?

घ. तो कौन–सा रास्ता जाता है?

5- bl dgkuh dk i<dj irk pyrk g fd &

क. वह आदमी मजाकिया था

ख. वह आदमी उस गाँव से अपरिचित था

ग. वह आदमी मूर्ख था

घ. वह आदमी लड़के को मूर्ख समझ रहा था

i'u 2- fp= dk n[kdj fn, x, i'uk d lgh mŸkj ij ?kjk yxkvk &

1- bl ifDr dk ijk dhft,% आओ एक अनमोनल जीवन का .....।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2- bl foKkiu dk mnns’; D;k g\

क. खून का महत्व बताना

ख. रक्तदान के लिए प्रेरित करना

ग. जीवन की रक्षा करना

घ. बैंकों का प्रचार करना

3- Þvkids [kw u dh çR;sd cw n egRoiw .kZ gSß bl okD; es *egRoiw.kZ* dh txg dkSu&lk 'kCn vk ldrk g\

क. खून का महत्व बताना

ख. रक्तदान के लिए प्रेरित करना

ग. जीवन की रक्षा करना

घ. बैंकों का प्रचार करना

4- Vksy Ýh uEcj 1097 vFkok 1051 ij dky djus ds fy, D;k dgk tkrk g\

क. रक्तदान के बारे में जानकारी ले सकेंगे

ख. फ्री में फोन कर सकेंगे।

ग. रक्तदान कर सकेंगे

घ. मुसीबत से अपने जीवन की रक्षा कर सकेंगे

5- jDrnku dk vFkZ D;k g\

क. खून माँगना

ख. खून देना

ग. रूपय का माँगना

घ. रूपयों का देना

iz'u 3- rqe dHkh fidfud ij x, gks\ mlds ckjs esa fyf[k,A

iz'u 4- nhikoyh dh jkf= esa ykx fn;s tykdj viuh ?kjksa esa mtkyk djrs gSaA fn;ksa ds vykok ykx vkSj fdu&fdu phtksa ls viuk ?kjksa esa jks'kuh djrs g

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

क. किसी पक्षी के लिए पिंजरे का जीवन दुखदाई क्यों होता है ?

ख. वह कौन–सा थाल है जो मोतियों से भरा है?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ग. कवि ने किताबों के संसार को बड़ा क्यों बताया है?

घ. टेलीफोन के संबंध में अँग्रेजों ने जगदीश चंद्र बोस के प्रति क्या छल किया?

ङ. अली और हसन में झगड़ा किस बात पर उठा?

प्रश्न 6. नीचे लिखी पंक्तियों के अर्थ लिखो–

क. चार दिनों में ही वह मैना
अंदर तड़प रही थी।
उड़ने को अकाश में ऊँचे
तबीयत फड़क रही थी।

ख. किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं
किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं।

प्रश्न 7. कविता की उन पंक्तियों को लिखो–

क. जिनमें मैना ने अपनी जान के लिए खतरे बताए हैं।

ख. जिनमें किताबों के संसार को बड़ा और किताबों को ज्ञान का भंडार बताया गया है।

प्रश्न 8. तीन पुल्लिंग और तीन स्त्रीलिंग शब्द लिखो जिनके लिंग नहीं बदलते।

प्रश्न 9. नीचे लिखे शब्दों को खड़ी बोली हिन्दी रूप में लिखो।

पूत, ठाँव, थोरी, बसती।

प्रश्न 10. सही जोड़ियाँ मिलाओ–

किताबें	–	दुख
कोन्हों	–	ठौर
जमाना	–	कथा
ओखरे	–	क्षण
गम	–	पुस्तकें
ठउर	–	कोई
किस्सा	–	युग
छिन	–	उसका

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न 11. निम्नलिखित क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाओ–

हँसना, बोलना, चलना, कूदना, लिखना।

प्रश्न 12. नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो–

क. बाज आना।

ख. हैरान कर देना।

ग. सुन्न पड़ जाना।

घ. भनक लग जाना।

प्रश्न 13. नीचे लिखे वाक्यों को उनके सम्मुख दर्शाए वाक्यों में बदलो–

क. उतारो लकड़ी। (आदरसूचक वाक्य में)

ख. दुकान से उतरकर गधे के पास जाता है। (भूतकाल में)

ग. उसने काठी उतार ली। (प्रश्नवाचक वाक्य में)

घ. अली, हसन को लकड़ी से मारता है। (भविष्यत् काल में)

प्रश्न 14. अपने घर को साफ–सुथरा रखने के लिए तुम क्या–क्या करते/करती हो? दस वाक्यों में लिखो।

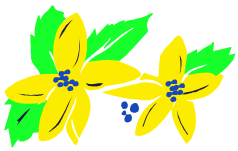

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वासराः

रविवासरः 32UF75 – रविवार

सोमवासरः – सोमवार

मङ्गलवासरः (भौमवासरः) – मङ्गलवार

बुधवासरः – बुधवार

गुरुवासरः (बृहस्पतिवासरः) – गुरूवार

शुक्रवासरः (भार्गववारः) – शुक्रवार

शनिवासरः (शनैश्चरवारः) – शनिवार

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

334B8S

'kjhjL; v³xkfu

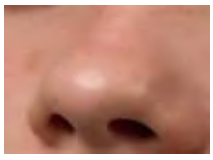

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

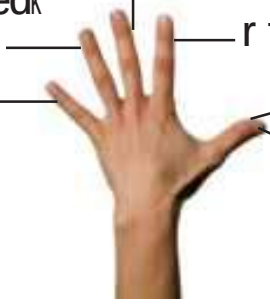

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पशवः

संस्कृत		हिंदी	चित्र
धेनुः (गौः)	–	गाय	
गजः (हस्ती)	–	हाथी	
वानरः (कपिः)	–	बन्दर	
मार्जारः (बिडालः)	–	बिलाव	
शुनकः (कुक्कुरः)	–	कुत्ता	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संस्कृत		हिंदी	चित्र
अश्वः (घोटकः)	–	घोड़ा	
अजा (बर्करी)	–	बकरी	
सिंहः	–	सिंह	
गर्दभः	–	गधा	
उष्ट्रः	–	ऊँट	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संस्कृत		हिंदी	चित्र
व्याघ्रः	–	बाघ	
मूषकः	–	चूहा	
भल्लूकः	–	भालू	
महिषः	–	भैंसा	
शृगालः (क्रोष्ठा)	–	सियार	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संस्कृत		हिंदी	चित्र
हरिण:	–	हिरण	
वृषभ:	–	बैल	
शश: (शशक:)	–	खरगोश	
नकुल:	–	नेवला	
कूर्म:	–	कछुआ	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गृहवस्तूनां नामानि

संस्कृत		हिंदी	चित्र
गृहम्	–	घर	
द्वारम्	–	द्वार	
वातायनम् (गवाक्षः)	–	खिड़की	
व्यजनम्	–	पंखा	
आसन्दः	–	कुर्सी	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संस्कृत		हिंदी	चित्र
सुखासन्दः	–	सोफा	
कटः	–	चटाई	
उत्पीठिका	–	टेबल	
साटिका	–	साड़ी	
करवस्त्रम्	–	रूमाल	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संस्कृत		हिंदी	चित्र
पादकोशः	–	मोजा	
पादत्राणम्	–	चप्पल	
धौतवस्त्रम्	–	धोती	
पर्यङ्कः	–	पलङ्ग	
कर्तरी	–	कैंची	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संस्कृत		हिंदी	चित्र
विद्युद्दीपः	–	बिजली का बल्ब	
स्यूतः	–	थैला	
घटीयन्त्रम्	–	घड़ी	
पुस्तकम्	–	पुस्तक	
लेखनी (कलमः)	–	कलम	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

समयाः

संस्कृत		हिंदी	चित्र
एकवादनम्	–	एक बजे	
द्विवादनम्	–	दो बजे	
त्रिवादनम्	–	तीन बजे	
चतुर्वादनम्	–	चार बजे	
पञ्चवादनम्	–	पांच बजे	
षड्वादनम्	–	छः बजे	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संस्कृत		हिंदी	चित्र
सप्तवादनम्	–	सात बजे	
अष्टवादनम्	–	आठ बजे	
नववादनम्	–	नौ बजे	
दशवादनम्	–	दस बजे	
एकादशवादनम्	–	ग्यारह बजे	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संस्कृत		हिंदी	चित्र
द्वादशवादनम्	–	बारह बजे	
सार्धसप्तवादनम्	–	साढ़े सात बजे (7.30)	
सपादपञ्चवादनम्	–	सवा पाँच बजे (5.15)	
पादोननववादनम्	–	पौने नौ बजे (8.45)	

विशेष:–

1) पाद का अर्थ 1/4 भाग होता है
2) स = सहित और 'उन' का अर्थ होता है कम।
3) पांच बजे में सपाद अर्थात 1/4 भाग सहित/अधिक है।
4) नव बजे में उन अर्थात कम, पादोन में 1/4 भाग कम है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com